हुज्जतुल्लाह

HUJJATULLAH

लेखक
हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद, क़ादियानी
मसीह मौऊद व महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम

Hujjatullah
(in Hindi)

by

Hazrat Mirza Ghulam Ahmad Qadiani
The Promised Messiah & Imam Mahdi[as]

हुज्जतुल्लाह

(अल्लाह तआला के अकाट्य तर्क)

लेखक

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी
मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम

नाम पुस्तक	: हुज्जतुल्लाह
Name of book	: Hujjatullah
लेखक	: हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम
Writer	: Hazrat Mirza Ghulam Ahmad Qadiani Masih Mau'ud & Mahdi Mahud Alaihissalam
अनुवादक	: डा अन्सार अहमद पी.एच.डी आनर्स इन अरबिक
Translator	: Dr Ansar Ahmad, Ph.D, PGDT, Hons in Arabic
टाईप सैटिंग	: अमतुल करीम नय्यरः
Type, Setting	: Amtul Kareem Nayyara
संस्करण	: प्रथम (हिन्दी) नवम्बर 2018 ई०
Edition	: 1st Edition (Hindi) November 2018
संख्या, Quantity	: 1000
प्रकाशक	: नज़ारत नश्र-व-इशाअत, क़ादियान, 143516 ज़िला-गुरदासपुर (पंजाब)
Publisher	: Nazarat Nashr-o-Isha'at, Qadian, 143516 Distt. Gurdaspur, (Punjab)
मुद्रक	: फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस, क़ादियान, 143516 ज़िला-गुरदासपुर, (पंजाब)
Printed at	: Fazl-e-Umar Printing Press, Qadian, 143516 Distt. Gurdaspur (Punjab)

प्रकाशक की ओर से

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम द्वारा लिखित पुस्तक का यह हिन्दी अनुवाद श्री डॉ० अन्सार अहमद ने किया है और तत्पश्चात मुकर्रम शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री (सदर रीव्यू कमेटी), मुकर्रम फ़रहत अहमद आचार्य (इंचार्ज हिन्दी डेस्क), मुकर्रम अली हसन एम. ए. और मुकर्रम नसीरुल हक़ आचार्य, मुकर्रम इब्नुल मेहदी एम् ए और मुकर्रम मुहियुद्दीन फ़रीद एम् ए ने इसका रीव्यू आदि किया है। अल्लाह तआला इन सब को उत्तम प्रतिफल प्रदान करे।

इस पुस्तक को हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ (जमाअत अहमदिया के वर्तमान ख़लीफ़ा) की अनुमति से हिन्दी प्रथम संस्करण के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है।

विनीत

हाफ़िज़ मख़दूम शरीफ़

नाज़िर नश्र व इशाअत क़ादियान

पुस्तक परिचय

हुज्जतुल्लाह

इस पुस्तक के लिखने से पहले मौलवी अब्दुलहक साहिब ग़ज़नवी ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के विरुद्ध एक बहुत गन्दा विज्ञापन प्रकाशित किया और आपके अरबी जानने पर ऐतराज़ किया और अपनी योग्यता को जानने के लिए अरबी भाषा में मुबाहस: करने का आपको निमंत्रण दिया। इस निमंत्रण को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने स्वीकार करते हुए यह शर्त लगाई कि चूंकि आपके नज़दीक मैं अरबी नहीं जानता और अज्ञानी मात्र हूँ इसलिए यदि आप मुक़ाबले के समय मुझ से पराजित हो गए तो आप को ख़ुदा तआला की ओर से इसे एक चमत्कार समझ कर तुरन्त मेरी बैअत में दाखिल होना होगा। परन्तु जब मौलवी गज़नवी ने कोई उत्तर न दिया और न उसका साथी शेख नजफ़ी कुछ बोला तो आपने मौलवी ग़ज़नवी और शेख नजफ़ी को सम्बोधित करके यह पुस्तक सरस एवं सुबोध अरबी में 17 मार्च 1897 ई० को लिखना आरम्भ की और 26 मई 1897 ई० को पूर्ण कर दी।

इस पुस्तक में जो रब्बानी रहस्यों और साहित्य की अच्छाइयों पर आधारित है आपने काफ़िर ठहराने वाले उलेमा पर हुज्जत पूर्ण करने के लिए नजफ़ी और ग़ज़नवी के अतिरिक्त मौलवी मुहमद हुसैन साहिब बटालवी को भी इन शब्दों में मुकाबले का निमंत्रण दिया कि यदि वे तीन चार माह तक ऐसी पुस्तक प्रस्तुत कर दें तो इस से मेरा झूठा होना सिद्ध हो जाएगा। निस्सन्देह वे जिन साहित्यकारों से सहायता

लेना चाहें ले लें। यदि वे इस पुस्तक का उदाहरण उसकी मोटाई पद्य और गद्य के अनुसार प्रकाशित कर दें और प्रोफ़ेसर अज़ाब की ताकीद के साथ क़सम खा कर उनकी लिखी पुस्तक को मेरी पुस्तक के बराबर या श्रेष्ठ ठहराएं और फिर क़सम खाने वाला मेरी दुआ के बाद इक्तालीस दिन तक ख़ुदा के अज़ाब में गिरफ़्तार न हो तो मैं अपनी पुस्तकें जो इस समय मेरे क़ब्ज़े में होंगी जला कर उन के हाथ पर तौबः करूंगा। और इस तरीके से प्रतिदिन का झगड़ा तय हो जाएगा। और इस के बाद जो व्यक्ति मुकाबले पर न आया तो पब्लिक को समझना चाहिए कि वह झूठा है।

आपने इस पुस्तक के अन्त में लिखा कि यह पुस्तक झुठलाने और उपहास करने वाले उलेमा के लिए अन्तिम वसीयत के समान है और इस हुज्जत को पूर्ण करने के पश्चात हम उन को सम्बोधित नहीं करेंगे। परन्तु न तो बटालवी साहिब मुकाबले के लिए सामने आए और न ग़ज़नी न शेख़ नजफ़ी और न विरोधी उलेमा में सरस एवं सुबोध अरबी पुस्तक लिखने की हिम्मत हुई।

ख़ाकसार

जलालुद्दीन शम्स

اَلإعلانُ فاسمعوا يا أَهل العُدْوَان

أيّها النّاظرون اعلَمُوا، رحِمكم الله ورزَقكم رزقًا حسنًا من التفضّلات الجليّة والالطاف الخفيّة، أنّ هذه رسالتى قد تمّت بالعناية الإلٰهيّة محفوفةً بالاسرار الانيقة الرّبّانية، ومشتملةً علٰى محاسن الادب، والمُلَح البيانيّة؛ فكأنّها حديقة مُخضرّة، تُغرّد فيها بلابل على دوحة الصفاء، وتُصبى ثمراتها قلوب الادباء. ومَن أمعنَ فيها بإخلاص النيّة، وصدق الطويّة، فلا شكّ أنه يُقرّ بفصاحة كلماتها، وبراعة عباراتها، ويُقرّ بأنها أعلٰى وأملح من التدوينات الرسميّة، وعليها طلاوة أكثر من المقالات الإنسَانيّة. وأمّا الذى جُبِلَ على سيرة النقمة والعناد، فيجحد بفضلها ويترك متعمّدًا طريق القسط والسّداد، ولو كانت نفسه من المستيقنين. فنحن نُقبِل الآن على زُمر تلك المنكرين، ولقد وعيتَ أسماءهم فيما سَبَقَ مِن ذكر المكفّرين والمكذّبين.. أعنى شيخ «البَطالة» وأمثاله من المفسّقين الفاسقين. فليُناضلونى فى هذا ولو متظاهرين بأمثالهم، وليبرهنوا على كمالهم، وإلا كشفتُ عن سبّهم وأخزيتهم فى أَعين جُهّالهم. ومن يكتب منهم كتابا كمثل هٰذه الرسالة، إلى ثلاثة أشهر أو إلى الاربعة، فقد كذّبنى صدقًا وعدلًا، وأثبتَ أنّنى لستُ من الحضرة الاحدية. فهل فى الحىّ حىٌّ يقضى هذه الخطّة، ويُنجّى مِن التفرقة الامّةَ؟ وليستظهرْ بالادباء إن كان جاهلا لا يعرف طرق الإنشآء، وليعلم أنه من المغلوبين. وسيذهب الله ببصره ببرق من السّماء، فيُغَشِيه كما يُغشِى الهجيرُ عينَ الحِربآء، ويُطفأُ وطيسَ المفترين. أيها المكذّبون الكذّابون! ما لكم لا تجيئون ولا تناضلون، وتدعون ثم لا تُبارِزون؟ ويلٌ لكم ولما تفعلون يٰمعشر الجٰهلين.

المُعْلِنْ غلام احمد القاديَانى

26 مئى 1897ء

ضميمه　　　بسم الله الرحمٰن الرحيم　　　حجة الله

قُتِلَ الاِنسانُ ما اَكفره

أيها الناظرون، والادباء المنقّدون ۔ أنتم تعلمون أنى كتبتُ من قبل هذا كتبًا فى العربية، وزيّنتُها كالبيوت المشيّدة المزدانة، ورأيتم أنها تحكى الدُرر العمّانية، وتحسى الدرر العرفانيّة. و كنتُ أتوقع أنّ العلماء يعُدّونها من الآيات، ويعقدون لِزَوْرى حبّك النِطاق بصحّة النيّات، وما زِلْتُ أسلّى بالى بهذا الامل، حتى وجدتُهم فاسدَ النيّة والعمل، وبدا أنّ فراستى قد أخطأتْ، وأعين العلماء ما انفتحت، وتراءى اليأس وآثار الرجاء انقطعتْ، وبلغ الامر إلىٰ حدٍّ أنّ الشيخ الذى هو للطالبين كسَدٍّ زرىٰ علىٰ مقالى، وتكلّم فى أقوالى، وقال إنّ هو إلا

परिशिष्ट　　　बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम　　　**हुज्जतुल्लाह**

तबाही हो मनुष्य पर कि वह कितना नाशुक्रा है

हे देखने वालो और कलाम के खोटे एवं खरे में अन्तर करने वालो! तुम जानते हो कि मैंने इस से पहले कुछ पुस्तकें अरबी में लिखी थीं और उन पुस्तकों को मैंने ऐसा सजाया था जैसा कि घरों को सजाया जाता और बुलन्द किया जाता है। और तुम ने देखा है कि वे पुस्तकें मोतियों से समानता रखती हैं और मारिफ़त का दूध पिलाती हैं और मैं आशा रखता था कि मौलवी लोग उन पुस्तकों को समस्त निशानों में से गिनेंगे और मेरे देखने के लिए अपनी कमर को सही नीयत के साथ बांधेंगे और मैं हमेशा हृदय को इस आशा के साथ सांत्वना देता था,यहां तक कि मैंने उनको नीयत और काम में खराब पाया और प्रकट हो गया कि मेरी प्रतिभा ग़लत हो गई और मौलवियों की आंखें नहीं खुलीं और निराशा प्रकट हो गईं तथा आशा की निशानियां समाप्त हो गईं और इस सीमा तक नौबत पहुँच गई कि बटाला का शेख जो अभिलाषियों के लिए एक रोक है मेरे कलाम पर उसने मीन-मेख की और कहा कि वह कथन अधम है अच्छा नहीं है ग़लत और व्यर्थ

قول رقيق وما هو بكلام جزلٍ، بل كسقطٍ وهزلٍ، وليس من غرر البيان، ولا من محاسن الكنايات والتبيان وكل ما رصّعتُ فى كتبى من الجواهر العربيّة، والنوادر الإدبية، واللطائف البيانية، والنكات المبتكرة المصبية، أراد المفسدُ المذكور أن يُطفى نورها، ويمنع ظهورها، ويجعل الناس من المنكرين أو المرتابين ومع ذٰلك ادّعى أنه فى الإدب رحيب الباع، خصيب الرباع، ومن المتفرّدين وكذلك خدَع الناس بتلبيساتهو أضحك الإطفال بخزعبيلاته، وجاء بزُور مبين وجئنا بلؤلؤٍ رَطْب فما استجاد،

ونفَضنا عليه عجماتٍ فما استحلى ثمارَنا وما أرَى الوداد، بل زاد بُخلًا وعنادًا كالمستكبرين. وقال إنّ كُتُبَ هذا الرجل مملوّة من

है तथा स्पष्ट वर्णन और उत्तम कलाम नहीं है और वे समस्त अरबी जवाहिरात, साहित्यिक अद्‌भुत बातें और रहस्यात्मक वर्णन और मनमोहक तथ्य जो मैंने अपनी पुस्तकों में लिखे इस उपद्रवी ने चाहा कि उन के प्रकाश को बुझा दे और प्रकट होने से रोके तथा लोगों को इन्कारियों या सन्देह करने वालों में से कर दे। और फिर उसके साथ यह दावा भी किया कि वह साहित्य के ज्ञान में सम्पन्न और बहुत धनवान है और उन लोगों में से है जो अद्वितीय होते हैं और इसी प्रकार अपनी सच्चाई को छुपाने से लोगों को धोखा दिया और अपने झूठे कामों से लड़कों को हंसाया और स्पष्ट झूठ लाया और हम ताज़ा मोती लाए तो उसने उनको अच्छा न समझा।

और हमने खजूर के वृक्ष को उस पर झाड़ा तो उस ने उनको मधुर नहीं समझा अपितु अहंकारियों के समान कंजूसी और वैर में बढ़ गया और कहा कि इस व्यक्ति की पुस्तकें ग़लतियों से भरी हैं तथा साहित्य और मुहावरों की लावण्ता से रिक्त हैं और स्वच्छ जल के सामन नहीं हैं तो वह बात न की जो आवश्यक थी अपितु सच को छुपाया और लोगों को रोका तथा जन सामान्य को धोखा दिया

الاغلاط والاغلوطات، ومُبعَّدة من لطائف الادب ومُلح المحاورات، وليست كماء مَعين. فما حَكَمَ بما وجب، بل أخفى الحق ومنع وحجب، وتصدّى لخدع العوام بعد ما شُغف بالكلام. وكان يعلم أنّ كتم الشهادة مأثمة، وتكذيب الصادق معصية، ولكنه آثر الدنيا على الآخرة، والنفسَ الامّارة علىٰ الحضرة الاحديّة. وأراد الله أن يرفعه فأخلدَ إلى الارض كالفاسقين. وليس فى نفسه جوهر من غير تصلّفٍ كالنسوان، وخدع الناس بتزويق اللسان، وإنّه من المزوّرين. يريد أن يُطفأ نورًا، ظلما وزورًا، ويزيد الناس رهقًا وكفورًا، ويصرف عن الحق قومًا جاهلين. ووالله إنّه لا يعلم ما البلاغة وأفنانها، وكيف يحق أداء ها وبيانها، وما وصل مقامًا من مقامات فهم الكلام، وإن هو كالانعام، ومن المحرومين. فالامر الذى يُنجّى الناس من غوائل

इसके बाद कि मेरे कलाम पर मुग्ध हुआ और वह ख़ूब जानता था कि साक्ष्य को छुपाना पाप है और सच्चे को झुठलाना पाप है परन्तु उसने आख़िरत को छोड़ा और दुनिया को ग्रहण किया और तामसिक वृत्ति से पृथ्वी की ओर झुक गया और इसमें डींगें मारने तथा भाषा की मधुरता से लोगों को धोखा देने के अतिरिक्त अन्य कोई जौहर नहीं। और वह झूठ को सजाने वालों में से है। इरादा करता है कि प्रकाश को बुझा दे और लोगों को अन्याय और कृतघ्नता में बढ़ाए और सच से मूर्खों को फेर दे और ख़ुदा की क़सम वह नहीं जानता कि सरसता किसे कहते हैं और उसकी शाखाएं क्या हैं और उसके वर्णन का हक़ क्योंकर अदा होता है और कलाम के समझने के स्थानों में से किसी स्थान तक वह नहीं पहुंचा और केवल चौपायों और वंचितों के समान है। तो वह बात जो लोगों को उसके झूठ से मुक्ति देगी यह है कि हम उस पर अपना कलाम और कुछ अरब साहित्यकारों का कलाम प्रस्तुत करें और अपना तथा उनका नाम उस पर गुप्त रखें और फिर उस को कहें कि हमें बता कि इनमें से हमारा कलाम कौन सा है और उनका

تزويراته، و هباء مقالاته، أن نعرض عليه كلامًا مِنّا و كلامًا آخر من بعض العرب العرباء، ونلبس عليه اسمنا واسم تلك الادباء، ثم نقول أَنْبِئْنا بقولنا وقول هؤلاء، إن كنت فى زرايتك من الصادقين. فإن عرف قولى وقولهم وأصاب فيما نوَى، وفرّق كفلق الحبّ من النوىٰ، فنعطيه خمسين رُوفية صِلةً منّا أو غرامةً، ونحسب منه ذٰلك كرامةً، ونعُدّه من الادباء الفاضلين، ونقبل أنه كان فيما زرَى من الصّادقين. فإن كان راضيا بهذا الاختبار، ومتصدّيًا لهذا المضمار، فليُخبرْنا بنيّته صالحة كالابرار، وليُشِعْ هذا العزم فى الجرائد والاخبار، كأهل الحق واليقين.

وأمّا أنا فبعد اطّلاعى علىٰ ذٰلك الاشتهار، سأرسل إليه أوراقا للاختبار، ليحكم الله بَينى وَبَين هذا الكفّار، وَهُوَ أحكم الحاكمين.

कलाम कौन सा है यदि तू सच्चा है तो यदि उस ने मेरा कथन और उनका कथन पहचान लिया और गुठली तथा दाने की तरह अन्तर करके दिखा दिया तो हम उसको पचास रुपया बतौर इनाम या जुर्माना देंगे और यह उसका चमत्कार समझा जाएगा और हम उसे प्रकाण्ड साहित्यकारों में से गिनेंगे और स्वीकार करेंगे कि दोष निकालने में सच बोलता था अत: यदि इस आज़माइश के लिए सहमत है और इस मैदान के लिए तैयार हो तो भले लोगों की तरह हमें सूचना दे। और चाहिए कि इरादे को अखबारों में विशवास करने वालों की तरह प्रकाशित कर दे।

परन्तु मैं विज्ञापन में सूचना पाने के बाद कुछ पृष्ठ परीक्षा के लिए उसकी ओर भेज दूंगा ताकि ख़ुदा तआला मुझ में और उसमें फैसला कर दे और वह सब हाकिमों का हाकिम है और मैं कई वर्ष से देख रहा हूं कि यह व्यक्ति निरर्थक बातों से रुकता नहीं और ख़ुदा तआला की गिरफ़्त से नहीं डरता। तो इसकी संकीर्णता ने इस पर परीक्षा के लिए मुझे विवश किया अत: यदि मैदान में आया और जो दावा किया था उसे सिद्ध कर दिखाया और मेरे वाक्यों को दूसरे के

وإنّي أرىٰ مُذ أعوام، أنّ هذا الرجل لا يمتنع من الهذيان، ولا يتّقي أَخْذَ الله الديّان، فألجأني بخله إلى هذا الامتحان. فإن جاء المضمارَ وأثبت ما ادّعٰى، و مازَ كَلِمي من كلمات أخري فله ما سمع منّا ووعَى، وإن شمّر ذيله وانثنَى، وما طالبَنا ما وَعَدنا وما انبرى، بل انساب ودخل جُحْره وانزوى، وما ترك التكذيب وما انتهٰى، فإنّ له جهنّم لا يموت فيها ولا يحيٰى، والسلام على من اتّبع الهدىٰ.

المعلن

ميرزا غلام احمد القادياني

(۲۶مئی ۱۸۹۷ء)

वाक्यों से पृथक करके दिखा दिया तो हम उसे वह इनाम देंगे जो हम से सुन चुका है और यदि अपना दामन समेट लिया और फिर गया और हमारे वादे की मांग न की और अपने बिल में घुस गया और छुप गया और झुठलाने से न रुका तो उसके लिए वह नर्क है कि जिसमें वह न मरेगा न जीवित रह सकेगा। सलामती हो उस पर जो हिदायत का अनुसरण करे।

घोषणा कर्ता

मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी

26 मई 1897 ई०

एक साक्ष्य

निम्नलिखत विज्ञापन एक फ़क़ीर मज्ज़ूब ने जो सियालकोट में लगभग बारह वर्ष से रहता है हमारे पास प्रकाशित करने के लिए भिजवाया है। इसलिए हम यहां उसकी नकल असल के अनुसार शब्दश: कर देते हैं और वह यह है:-★

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अभिव्यक्ति योग्य विज्ञापन

ख़ुदा के फ़ज़ल और इल्हाम से, जनाब रसूल मक़्बूल सल्अम की रूह से, कुल शहीदों की रूह से, कुल अब्दालों की रूह से, कुल औलिया की रूह से जो पृथ्वी पर हैं और उन रूहों से जो चौदह तबकों की ख़बर रखती हैं। मैंने उन सब से इल्हाम और गवाही पाई है कि हज़रत मिर्ज़ा साहिब को अल्लाह तआला ने भेजा है। रसूल मक्बूल के धर्म में सख़्त फ़ित्ने खड़े हो गए हैं। वह हद दर्जे का कमज़ोर हो गया। हज़ारों लानती फ़िर्के जैसे नसारा और राफ़िज़ी पैदा हो कर लोगों की गुमराही का कारण हुए। इसलिए मसीह मौऊद को भेजने की अवश्यकता हुई। इस समय ये जो भयानक फ़ित्ने पैदा हुए उनका सुधार एक भारी नबी का कार्य था परन्तु चूंकि रसूल मक़्बूल के बाद कोई नबी नहीं आना था ख़ुदा तआला ने हज़रत मिर्ज़ा साहिब को जो रसुल मक़्बूल के दस्तार मुबारक हैं, भेजा। जो लोग सोचते हैं कि हज़रत ईसा इस शरीर से आकाश पर उठाऐ गए वे झुठे हैं। कोई मौत का स्वाद चखे बिना तथा शरीर के साथ कोई नहीं गया। हे गद्दी नशीन उलेमा! हे गद्दी नशीन फ़क़ीरो! हे अहले बैत गद्दी नशीनो! सुन रखो शीघ्र ही आकाश से बड़ी भारी प्रतापी गवाही इस सिलसिले की सच्चाई की प्रकट होने वाली है। स्वयं ख़ुदा बड़े ज़ोर से गवाही देगा फिर तुम इस विरोध में बड़े अपमानित

★ इस मज्ज़ूब की इस इलाके में बड़ी प्रतिष्ठा और प्रसिद्धि है।

और शर्मिंदा होगे। यह मेरा विज्ञापन सच्चा है। यह 'लौहे महफ़ूज़' की नक़ल है। मैं देखता हूं इस विरोध से ख़ुदा तआला तुम पर बहुत नाराज़ है। रसूल मक़्बूल तुम से अत्याधिक नाराज़ हैं।   विज्ञापन दाता

फ़क़ीर मुहमद - सियालकोट बरलब ऐक, बाग़ बस्ती वाला

28 मई 1897 ई०

एक उत्तम प्रस्ताव

इरादा है कि हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद के वे निबंध जो भिन्न-भिन्न प्रकार के हैं उदाहरणतया प्रकाशित विज्ञापन, हस्त लिखित पत्र और वे निबंध जो किसी अन्य की पुस्तक या किसी अख़बार में छपे हैं एक स्थान पर एकत्र करके पुस्तक के रूप में प्रकाशित किए जाएं। अत: जिस साहिब के पास 1896 ई० से पहले का जो कोई विज्ञापन (प्रकाशित) हो उसके शीर्षक, तिथि, निबंध का खुलासा और पृष्ठों की संख्या से सूचित करें ताकि यदि दफ्तर में वह न हो तो उनसे अस्थाई तौर पर मांग लिया जाए। और जिस साहिब के पास हज़रत अक़्दस का कोई पत्र जो निजी मामले के बारे में न हो और सामान्य तौर पर लाभप्रद हो उसकी नकल अपितु वह असल पत्र ही अस्थाई तौर पर कुछ दिन के लिए भेज दें। नकल करने के बाद इंशाअल्लाह वापस किया जाएगा। यह भी स्पष्ट रहे कि क्रेताओं के पर्याप्त निवेदन उपलब्ध होने पर इस पुस्तक के छापने का प्रबंध होगा। फिर शौक रखने वाले साथ ही खरीदारी का निवेदन प्रेषित करें। पत्राचार साहिबज़ादा सिराजुलहक़ साहिब जमाली नोमानी के नाम होना चाहिए। इति

विज्ञापनदाता- मंजूर अहमद, प्रबंधक पुस्तकालय हज़रत अक़्दस

क़ादियान दारुलअमान।

प्रथम जून

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم
الحمد للہ و سلام علیٰ عبادہ الذین اصطفٰی

سخن نزدم مَراں از شہر یارے	کہ ہستم بردرے امّیدوارے
خداوندے کہ جان بخش جہان ست	بدیع و خالق و پروردگارے
کریم و قادر و مشکل کشائے	رحیم و مُحسن و حاجت برارے
فتادم بردرش زیر آنکہ گویند	برآید درجہان کارے زِ کارے
چو آن یارِ وفادار آیدم یاد	فراموشم شود ہر خویش و یارے
بغیر او چساں بندم دلِ خویش	کہ بے رویش نمے آید قرارے

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अल्हम्दुलिल्लाह सलामुन अला इबादिहिल्लज़ीनस्तफा

मेरे सामने किसी बादशाह की चर्चा न कर क्योंकि मैं तो एक और दरवाज़े पर प्रत्याशी पड़ा हूं।

वह ख़ुदा जो दुनिया को जीवन प्रदान करने वाला है और अनुपम स्रष्टा और प्रतिपालक है।

कृपालु है, सामर्थ्यवान है, मुश्किल दूर करने वाला है दयालु है उपकारी है और आवश्यकता पूर्ण करने वाला है।

मैं उसके दरवाज़े पर पड़ा हूं क्योंकि कहावत प्रसिद्ध है कि दुनिया में एक काम में से दूसरा काम निकल आता है।

जब वह यार वफ़ादार मुझे याद आता है तो हर रिश्तेदार और दोस्त मुझे भूल जाता है।

मैं उसे छोड़ कर किसी और से किस प्रकार दिल लगाऊं कि उसके बिना मुझे चैन नहीं आता।

کہ بستیمش بدامانِ نگارے	دلم در سینۂ ریشم مجوئید
سرِمن در رہِ یارے نثارے	دل من دلبرے را تخت گاہے
کہ فضل اوست ناپیدا کنارے	چگویم فضل او بر من چگون ست
کہ لُطفِ اوست بیروں از شمارے	عنایت ہائے او را چوں شمارم
ندارد کس خبر زاں کاروبارے	مرا کاریست با آں دلستانے
بوقت وضع حملے باردارے	بنالم بردرش زِ انساں کہ نالد
چہ خوش وقتے چہ خُرّم روزگارے	مرا باعشق او وقتے ست معمور
کہ فارغ کردی از باغ و بہارے	ثناہا گویمت اے گُلشن یار

दिल को मेरे ज़ख़्मी सीने में न ढूंढो कि हम ने उसे एक प्रियतम के दामन से बांध दिया है।

मेरा दिल दिल्बर का तख़्त है और मेरा सिर यार के मार्ग में क़ुर्बान है।

मैं क्या बताऊं कि मुझ पर उसकी कृपा किस प्रकार की है क्योंकि उसकी कृपा तो एक नापैदा किनार समुद्र है।

मैं उसकी मेहरबानियों को कैसे गिनूँ कि उसकी मेहरबानियां तो गिनती की सीमा से बाहर हैं।

मुझे उस दिलबर से ऐसा संबंध है कि किसी को भी इस मामले की ख़बर नहीं।

मैं उसके दरवाज़े पर इस प्रकार रोता हूं जिस प्रकार बच्चा पैदा होते समय गर्भवती स्त्री रोती है।

मेरा समय उसी के प्रेम से भरपूर है। वाह क्या अच्छा समय है और क्या उत्तम युग है।

हे यार की वाटिका तेरे क्या कहने तू ने तो मुझे दुनिया के बाग़-व-बहार से निवृत्त कर दिया है।

ذَبُّ الْمُفْتَرِيْنَ

اِنَّ الَّذِیْنَ یُحَارِبُوْنَنِیْ لَا یُحَارِبُوْنَ اِلَّا اللّٰہَ فَسَیَعْلَمُ الَّذِیْنَ ظَلَمُوْا اَیَّ مُنْقَلَبٍ یَّنْقَلِبُوْن

بُردباری می کند زور آورے | جاہلے فہمد کہ ہستم برترے

इस समय मेरे सामने वे काग़ज़ पड़े हैं जिन में नाम के मुसलमानों ने मुझे गालियां दी हैं। उनमें से एक अब्दुल हक़ ग़ज़नवी है जो अपने विज्ञापन में मुझे दज्जाल ठहरा कर अपने विज्ञापन के शीर्षक में लिखता है कि-

ضَرْبُ النّعال علیٰ وجْه الدَّجَّال

अर्थात उस दज्जाल के मुंह पर जूती मारता हूं। अत: यह तो उसने सच कहा क्योंकि वास्तव में वह स्वयं दज्जाल है और आकाश से उसी के मुंह पर जूती पड़ी न कि किसी अन्य के मुंह पर। अभी मालूम नहीं कि उस का सर कहां तक नर्म किया जाएगा। अभी धार्मिक महोत्सव से इस समय तक केवल दो आकाशीय जूते उस के सर पर पड़े हैं। हां सख्त चोट से पड़े जिससे कुछ हड्डियाँ टूटी होंगी। मालूम नहीं कि किस समय इस भाग्यहीन ने यह वाक्य मुंह से निकाला था कि दुआ की तरह उसके पक्ष में स्वीकार हो गया। फिर उसी विज्ञापन में यह मूर्ख मेरे बारे में लिखता है कि लानत का तौक़ उसके गले में है। परन्तु अब उससे पूछना चाहिए कि तनिक आखें खोलकर देखे कि किस की गर्दन में है? थोड़ा समझ कर बोले कि धार्मिक महोत्सव के इल्हामी विज्ञापन ने किस के मुंह को काला किया? लेखराम की मृत्यु ने किस के गले में लानत का तौक़ डाला? यह व्यक्ति बार-बार आथम की भविष्यवाणी के बारे में ऐतराज़ करता है। मुर्ख को अब तक समझ नहीं आती कि

आथम की भविष्यवाणी★ जैसा कि इल्हाम के शब्द तथा इल्हाम की शर्त थी पूरी सफ़ाई से पूरी हो गई। शर्त के अनुसार ख़ुदा तआला ने उसकी मृत्यु में विलम्ब डाल दिया और फिर इल्हाम के अनुसार उसे सात माह के अन्दर मार दिया। चूंकि आथम डरा, इसलिए ख़ुदा ने उस के मामले में अपनी दया की विशेषता को दिखलाया और लेखराम नहीं डरा इसलिए ख़ुदा ने उस के मामले में अपने प्रकोप की विशेषता को दिखलाया। अत: ख़ुदा ने इन दोनों भविष्यवाणियों से अपनी जमाली (सौन्दर्य) और प्रतापी (जलाली) विशेषताओं का नमूना दिखला दिया तथा प्रत्येक हालत के अनुसार मामला किया। आथम भविष्यवाणी को सुनकर समस्त ग़ुस्ताख़ियों से पृथक हो गया परन्तु लेखराम न हुआ। आथम ने मुसलमानों से समस्त मुबाहसे छोड़ दिए, परन्तु

★हाशिया :-

आथम के हालात के बारे में जो कुछ अन्वारुल इस्लाम में प्रकाशित हुआ था उसको संक्षिप्त रूप से पुनः जनसामान्य के लाभार्थ लिखा जाता है और वह यह है

यह बात बिल्कुल सच, निश्चित तथा इल्हाम के अनुसार है कि यदि मिस्टर अब्दुल्लाह का दिल जैसा कि पहले था वैसा ही इस्लाम के अपमान और तिरस्कार पर स्थापित रहता और इस्लामी श्रेष्ठता को स्वीकार करके सच की ओर लौटने का कोई हिस्सा न लेता तो उसी समय-सीमा के अन्दर उस के जीवन का अन्त हो जाता। परन्तु ख़ुदा तआला के इल्हाम ने मुझे जतला दिया कि डिप्टी अब्दुल्लाह आथम ने इस्लाम की श्रेष्ठता और उसके रोब को स्वीकार करके सच की ओर लौटने का कुछ भाग ले लिया। जिस भाग ने उसके मौत के वादे और पूर्ण तौर के हाविय: में विलम्ब डाल दिया और हाविय: में तो गिरा परन्तु उस बड़े हाविय: से थोड़े दिनों के लिए बच गया जिस का नाम मौत है और यह स्पष्ट है कि इल्हामी शब्दों और शर्तों में से कोई ऐसा शब्द या शर्त नहीं है जो प्रभाव रहित हो या जिस का

उसने कदापि न छोड़े। आथम उस दिन तक कि मीआद के दिन पूरे हुए मुर्दे के समान पड़ा रहा और रोता रहा। परन्तु यह हंसता और ठट्ठे मारता रहा उसने शर्म दिखाई परन्तु लेखराम ने बेशर्मी और गुस्ताख़ी व्यक्त की। उसने अपना मुंह बन्द कर लिया और लेखराम ने गालियों से अपना मुंह खोला। ख़ुदा ने आथम के बारे में मुझे सम्बोधित करके फ़रमाया कि **اطّلعَ اللهُ علیٰ همِّه وغَمِّه وَلَنْ تجِدَ لِسُنَّةِ اللّٰهِ تَبْدِيْلاً** अर्थात ख़ुदा ने देखा कि आथम का दिल रंज-व-ग़म से भर गया इसलिए उस दयालु ख़ुदा ने विलम्ब डाल दिया और फ़रमाया कि यह कभी न होगा कि ख़ुदा अपनी आदतों को बदल ले। अर्थात वह डरने वाले के साथ कठोरता नहीं करता, परन्तु लेखराम न डरा और उस के दुर्भागय से आथम का डरना उसे दिलेर

शेष हाशिया - कुछ मौजूद हो जाना अपना प्रभाव पैदा न करे। इसलिए अवश्य था कि जितना अब्दुल्लाह आथम के दिल ने सच की श्रेष्ठता को स्वीकार किया उस का लाभ उसको पहुंच जाए। तो ख़ुदा तआला ने ऐसा ही किया और मुझे फ़रमाया -

اطلع اللّٰہ علی همه وغمه۔ ولن تجد لسنة اللّٰہ تبدیلا و لا تعجبوا و لا تحزنوا و انتم الاعلون ان کنتم مؤمنین و بعزتی و جلالی انك انت الاعلیٰ۔ و نمزق الاعداء کل ممزق و مکر اولئك هو یبور۔ انا نکشف السر عن ساقه یومئذ یفرح المؤمنون۔ ثلّة من الاولین و ثلّة من الآخرین و هذه تذکرة فمن شاء اتخذ الیٰ ربه سبیلا۔

अनुवाद - ख़ुदा तआला ने उसके दुख एवं शोकों पर सूचना पाई और उसको छूट दी जब तक कि वह धृष्टता और गालियों और झुठलाने की ओर झुके और ख़ुदा तआला के उपकार को भुला दे (ये अर्थ कथित वाक्य के ख़ुदा के समझाने से हैं) और फिर फ़रमाया कि ख़ुदा तआला की यही सुन्नत है और तू ख़ुदाई नियमों (सुन्नतों) में परिवर्तन नहीं पाएगा। इस वाक्य के बारे में यह समझा गया कि ख़ुदा तआला की आदत इसी प्रकार से जारी है कि वह किसी

कर गया। यही करण है कि आथम के बारे में ख़ुदा ने नर्मी से मामला किया क्योंकि वह नर्म रहा और लेखरम से कठोरता से क्योंकि उसने कठोरता दिखाई और यही कारण है कि आथम के बारे में केवल एक बार इल्हाम हुआ और वह भी शर्त के साथ और लेखराम के अज़ाब के बारे में बार-बार कोपपूर्ण इल्हाम हुए। तो आथम के बारे में जो भविष्यवाणी की गई वह ऐसी महान भविष्यवाणी है जो सत्रह वर्ष पूर्व उस समय से बराहीन अहमदिया में भी उस का ज़िक्र मौजूद है और आसार नबवी में भी उसका ज़िक्र पाया जाता है। इस भविष्यवाणी के दोनों पहलुओं की दृष्टि से पूर्ति हो चुकी और आथम एक मुद्दत से मर चुका फिर क्या अब तक वह भविष्यवाणी पूरी न हुई। लानतुल्लाह अलल काज़िबीन। क्या आथम कुंआरी लड़की था जो बिना किसी शक्तिशाली कारण के मुक़ाबले पर आने से शर्म की। भविष्य-

---

शेष हाशिया - पर अज़ाब नहीं उतारता जब तक ऐसे पूर्ण कारण पैदा न हो जाएं जो ख़ुदा के प्रकोप को भड़काएं। और यदि दिल के किसी कोने में भी कुछ ख़ुदा का भय छुपा हुआ हो और कुछ धड़का आरंभ हो जाए तो अज़ाब नहीं उतरता तथा दूसरे समय पर जा पड़ता है। फिर फ़रमाया कुछ आश्चर्य मत करो और ग़मगीन मत हो तथा विजय तुम्हीं को है यदि तुम ईमान पर स्थापित रहो। यह इस ख़ाकसार की जमाअत को संबोधन है। फिर फ़रमाया - मुझे मेरे सम्मान और प्रताप की क़सम है कि तू ही विजयी है (यह इस ख़ाकसार को सम्बोधन है)। और फिर फ़रमाया - कि हम शत्रुओं को टुकड़े-टुकड़े कर देंगे। अर्थात् उनको अपमान पहुंचेगा और उनका मक्र (छल) तबाह हो जाएगा। इसमें यह समझाया गया कि तुम ही विजयी हो न कि शत्रु और ख़ुदा तआला बस नहीं करेगा और न रुकेगा जब तक शत्रुओं के समस्त मकरों का छिद्रान्वेषण न करे और उनके मक्र को तबाह न कर दे। अर्थात् जो मक्र बनाया गया और साक्षात् किया गया उसे तोड़ डालेगा और उसको मुर्दा करके फेंक देगा तथा उसकी लाश लोगों को दिखा देगा।

वाणी को सुनते ही इस्लामी धाक उसे खा गई वह अन्दर ही अन्दर पिघल गया और किसी हिम्मत के योग्य न रहा। न क़सम के योग्य न नालिश के योग्य। जब क़सम के लिए बुलाया जाता था तो उस का कलेजा कांप जाता था जब नालिश के लिए उकसाया जाता था तो उसकी अन्तर्आत्मा उसके मुंह पर तमांचे मारती थी। मसीह ने स्वयं क़सम खाई, पौलूस ने खाई। उसने अत्यन्त आवश्यकता के समय क्यों क़सम न खाई। यादि आक्रमण हुए थे तो नालिश करता और दण्ड दिलाता। उसका अधिकार था उसने क्यों नालिश न की। हे ग़ज़नवी लोगो! तुम्हें सच्चाई से कितनी दुश्मनी है। क्या कोई सीमा भी है? क्या तुम्हारा यही संयम (तक़्वा) है जिसे लेकर तुम पंजाब में आए!! एक मुसलमान को काफ़िर बनाते और ख़ुदा के स्पष्ट और खुले-खुले निशानों का इन्कार करते हो और पादरियों को अपनी दज्जाली बातों से मदद देते हो।

शेष हाशिया - फिर फ़रमाया कि हम असल भेद को उसकी पिण्डलियों में से नंगा करके दिखा देंगे अर्थात् वास्तविकता को खोल देंगे और विजय के स्पष्ट तर्कों को प्रकट करेंगे★और उस दिन मोमिन प्रसन्न होंगे। पहले मोमिन भी और पिछले मोमिन भी। फिर फ़रमाया कि कथित कारण से मृत्यु के अज़ाब का विलम्ब हमारी सुन्नत (नियम) है जिस का हमने वर्णन कर दिया। अब जो चाहे मार्ग अपना ले जो उसके रब्ब की ओर जाता है। इसमें कुधारणा करने वालों पर डांट और निन्दा है तथा इसमें यह भी बोध हुआ कि जो सौभाग्यशाली लोग हैं और जो ख़ुदा ही को चाहते हैं तथा किसी कंजूसी, पक्षपात, जल्दबाज़ी या ग़लत समझ के अंधकार में ग्रस्त नहीं वे इस वर्णन को स्वीकार करेंगे और ख़ुदा की शिक्षा के अनुसार उसको पाएंगे, परन्तु जो अपने नफ़्स और अपनी कामवासना की हठ के अनुयायी या सच को पहचानने वाले नहीं वे धृष्टता और कामवासना के अंधकार के कारण उसे स्वीकार नहीं करेंगे। ख़ुदा के इल्हाम का अनुवाद ख़ुदा के बोध कराने के साथ किया गया

★यह लेखराम की मौत की ओर इशारा है।

क्या तुम्हें ऐसा करना उचित था ? क्या ख़ुदा एक दज्जाल और झुठे की प्रतिष्ठा और मान्यता को पृथ्वी पर फैला रहा है? और तुम जैसे सौभाग्यशालियों को अपमानित कर रहा है या उसे धोखा लग गया है, क्या वह दिलों के रहस्यों को जानने वाला नहीं? क्या तुम सच्चाई को मिटा दोगे? क्या वह प्रकाश जो आकश से उतरा है तुम उस को मुंह की फूंकों से बुझा दोगे? यदि तुम नेक इन्सान की सन्तान हो तो बुराई में स्वयं को मत डालो समझ जाओ और संभल जाओ कि अभी समय है और आयत وَلَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ को ध्यानपूर्वक पढ़ो आगे तुम्हारा अधिकार है।

फिर इसी विज्ञापन में इसी बुज़ुर्ग अब्दुल हक़ ने और भी गलियां दी हैं अत: पृष्ठ 2,3 तथा 4 में मेरे बारे में लिखता है-"बदकार, शैतान, लानती, लानत मलामत की जूती उस के सिर पर अपमानित दुर्दशाग्रस्त अल्लाह तआला का

शेष हाशिया - जिसका सारांश यही है कि हमेशा से ख़ुदा की सुन्नत इसी प्रकार से है कि जब तक कोई काफ़िर या इन्कारी अत्यधिक धृष्ट और गुस्ताख होकर अपने हाथ से अपने लिए तबाही के सामान पैदा न करे तब तक ख़ुदा तआला अज़ाब के तौर पर उसे नहीं मारता और जब किसी इन्कारी पर अज़ाब उतरने का समय आता है तो उसमें वे सामान पैदा हो जाते हैं जिन के कारण उस पर मारने का आदेश लिखा जाता है। ख़ुदा के अज़ाब के लिए यही अनादि क़ानून है और यही जारी रहने वाली सुन्नत और यही अपरिवर्तनीय नियम ख़ुदा की किताब ने वर्णन किया है और विचार करने पर प्रकट होगा कि जो मिस्टर अब्दुल्लाह आथम के बारे में अर्थात् हाविय: के दण्ड के बारे में इल्हामी शर्त थी वह वास्तव में इसी सुन्नतुल्लाह के अनुसार है। क्योंकि उसके शब्द ये हैं कि **बशर्ते कि सच की ओर न लौटे**। किन्तु मिस्टर अब्दुल्लाह आथम ने व्याकुलतापूर्ण हालत से सिद्ध कर दिया कि उसने इस भविष्यवाणी को सम्मान की दृष्टि से देखा जो इल्हामी तौर पर इस्लामी सच्चाई की बुनियाद पर की गई थी और ख़ुदा तआला के इल्हाम ने भी मुझे

शत्रु, ख़ुदा के वली अब्दुल हक़ का शत्रु" फिर विज्ञापन के अन्त में भविष्यवाणी करता है कि शीघ्र ही अल्लाह तआला का प्रकोप तुम पर उतरेगा। मैं कहता हूं कि हे अयोग्य मूर्ख ! तूने यह अच्छा नहीं किया कि ख़ुदा पर झूठ बांधा अब देख कि वह प्रकोप तुझ पर उतरा या किसी अन्य पर? क्या तेरे गले में लानत का रस्सा पड़ा या किसी अन्य के गले में? तू ने उसी अपने विज्ञापन में दावा किया था कि मैं आग में जा सकता हूं और नहीं जलूंगा और दरिया पर चलने के लिए उपस्थित हूं और नहीं डूबूंगा। और एक महीना कोठरी में बन्द रहने के लिए मौजूद हूं और नहीं मरूंगा। परन्तु हे नीच इन्हीं धृष्टताओं का कारण इस समय ख़ुदा ने तेरा मुंह काला किया। ख़ुदा के खुले-खुले निशान ने तुझे अज़ाब की आग में डाला और तू जल गया और बच नहीं सका। तेरे लिए यह अज़ाब कम नहीं हुआ कि समस्त कौमों में इस निशान की प्रतिष्ठा प्रकट हुई।

शेष हाशिया - यही ख़बर दी कि हम ने उस के दुख एवं शोक पर सूचना पाई। अर्थात् वह इस्लामी भविष्यवाणी से भयावह हालत में पड़ा और उस पर रोब विजयी हुआ। उसने अपने कार्यों से दिखा दिया कि इस्लामी भविष्यवाणी का कैसा भयानक प्रभाव उसके दिल पर हुआ और उस पर घबराहट और दीवानगी तथा दिल की हैरत विजयी हो गयी और इल्हाम भविष्यवाणी के रोब ने उसके दिल को कैसा कुचला हुआ दिल बना दिया, यहां तक कि वह बहुत बेचैन हुआ और एक शहर से दूसरे शहर तथा प्रत्येक स्थान पर परेशान और भयभीत होकर फिरता रहा और उस बनावटी ख़ुदा पर उसका भरोसा न रहा जिसको विचारों का टेढ़ापन और पथभ्रष्टता के अंधकार ने ख़ुदाई का स्थान दे रखा है। वह कुत्तों से डरा और उसे सांपों का भय हुआ और अन्दर के मकानों से भी उसे भय आया। उस पर भय और भ्रम और दिल की जलन का प्रभुत्त्व हुआ और भविष्यवाणी का उस पर पूर्ण भय छा गया और घटना से पूर्व ही उसका प्रभाव उसको महसूस हुआ और इसके बिना कि कोई अमृतसर से उसको निकाले आप ही हताश, भयभीत, परेशान और बेचैन होकर एक शहर

निस्सन्देह उस आग ने तुझे जलाकर राख कर दिया। तू शर्म के दरिया में भी डूब गया और उस पर चल न सका और तू शर्मिन्दगी की अधंकारपूर्ण कोठरी में बन्द किया गया और वहीं मर गया। देख! ख़ुदा के स्वाभिमान ने तुझे क्या-क्या दिखलाया। तनिक आंख खोल और देख कि तेरा घमंड तुझे कैसा सामने आ गया, तू मुझे कहता था कि तू आग में जलेगा और दरिया में डूबेगा और कोठरी में मरेगा। हे भाग्यहीन अब देख कि ये तीनों बातें किस पर आईं तुझ पर या मुझ पर। सच कह क्या इस अज़ाब की आग ने तुझे नहीं जलाया? क्या तू क़सम खा सकता है कि इस आग से तेरा दिल कबाब नहीं हुआ? और क्यों न हुआ जबकि ऐसी खुली-खुली भविष्यवाणी पूरी हुई जिसमें समस्त हिन्दुओं

शेष हाशिया - से दूसरे शहर भागता रहा और ख़ुदा ने उसके दिल का आराम छीन लिया और भविष्यवाणी से अत्यन्त प्रभावित होकर उद्विग्नों और भयभीतों की भांति जगह-जगह भटकता फिरा और ख़ुदा के इल्हाम का रोब तथा प्रभाव उसके हृदय पर ऐसा छाया कि उसकी रातें भयावह और दिन व्याकुलता से भर गए और सच के विरोध की हालत में जो-जो भय और खेद उस व्यक्ति पर आ जाता है जो विश्वास रखता है और गुमान करता है कि शायद ख़ुदा का अज़ाब उतरे। ये सब लक्षण उसमें पाए गए और वह अदभुत तौर पर अपनी व्याकुलता और बेचैनी जगह-जगह प्रकट करता रहा और ख़ुदा तआला ने एक आश्चर्यजनक भय और आशंका को उसके हृदय में डाल दिया कि एक बात का ख़टका भी उसके हृदय को आघात पहुंचाता रहा और एक कुत्ते के सामने आने से भी उसे मौत का फ़रिश्ता याद आया तथा किसी जगह उसे चैन न पड़ा और एक सख़्त वीराने में उसके दिन गुज़रे और उद्विग्निता, परेशानी, बेचैनी तथा व्याकुलता ने उसके हृदय को घेर लिया और डरावने विचार उस पर रात-दिन विजयी रहे और उसके हृदय की कल्पनाओं ने इस्लामी श्रेष्ठता को अस्वीकार न किया बल्कि स्वीकार किया। इसलिए वह ख़ुदा जो दयालु और कृपालु तथा दण्ड देने में धीमा है और मनुष्य के हृदय के विचारों को जांचता और उसकी कल्पनाओं के अनुसार उस से अमल करता है उसने

को स्वयं इक़रार है कि वह उच्च श्रेणी की भविष्यवाणी है जिसमें समय से पूर्व समस्त पत्ते बताए गए थे मीआद बताई गई थी, मौत का दिन बताया गया मौत का रूप बताया गया और आयत لَا يُظْهِرُ عَلٰى غَيْبِهٖٓ أَحَدًا ने यह फैसला कर दिया है कि ऐसी खुली खुली भविष्यवाणी केवल ख़ुदा के मुर्सलों को दी जाती है। न ज्योतिषियों से हो सकती है न दज्जालों से। तो क्या यह वह आग नहीं है जिसने तेरे दिल को जला दिया? क्या तू अब ख़ुदा के कलाम से इन्कार करेगा? या आत्महत्या करके मर जाएगा? क्या तू क़सम खा सकता है कि अब तक तू शर्मिंदगी के दरिया में नहीं डूबा। क्या तुझ पर और समस्त लोगों पर अब तक नहीं खुला कि तू लज्जा की अंधकारपूर्ण कोठरी में बन्द किया गया?

शेष हाशिया - उसको उस रूप पर न पाया जिस रूप में तुरन्त पूर्ण हाविय: का दण्ड अर्थात् अविलम्ब मृत्यु उस पर उतरती और अवश्य था कि वह पूर्ण अज़ाब उस समय तक रुका रहे जब तक कि वह बेबाकी और उद्दंडता से अपने हाथ से अपनी तबाही का समान पैदा करे और अल्लाह के इल्हाम ने भी इसी ओर इशारा किया था क्योंकि इल्हामी इबारत में शर्ती तौर पर मौत के अज़ाब आने का वादा था न कि केवल बिना शर्त वादा। किन्तु ख़ुदा तआला ने देखा कि मिस्टर अब्दुल्लाह आथम ने अपने हृदय की कल्पनाओं से, कार्यों से, अपनी गतिविधियों से, अपने अत्यधिक भय से, अपने भयावह एवं हताश हृदय से इस्लामी श्रेष्ठता को स्वीकार किया, और यह हालत एक लौटने का प्रकार है जो इल्हाम के अपवाद वाले वाक्य से कुछ संबंध रखता है। क्योंकि जो व्यक्ति इस्लामी श्रेष्ठता को स्वीकार नहीं करता अपितु उसका भय उस पर विजयी होता है वह एक प्रकार से इस्लाम की ओर लौटता है। यद्यपि ऐसा लौटना आख़िरत के अज़ाब से बचा नहीं सकता परन्तु सांसारिक अज़ाब में धृष्टता के दिनों तक विलम्ब अवश्य डाल देता है। यही वादा पवित्र क़ुर्आन और बाइबल में मौजूद है और जो कुछ हमने मिस्टर अब्दुल्लाह आथम के बारे में और उसके दिल की हालत के बारे में वर्णन किया ये बातें बिना सबूत नहीं अपितु मिस्टर अब्दुल्लाह आथम ने स्वयं को अत्यन्त आपदाग्रस्त बना

और तेरी दुआओं तथा तेरे उस शैतानी इल्हाम के विरुद्ध जो तू ने विज्ञापन के अन्त में लिखा था प्रकटन में आया? हे दुर्भाग्यशाली! क्या तू अब तक जीवित है? नहीं-नहीं तेरी निरर्थक बातों ने तुझे तबाह कर दिया। तू उन तीन अज़ाबों में स्वयं ही पड़ गया जिन के द्वारा मेरी मृत्यु बताता था فَاعۡتَبِرُوۡا يَاُولِى الۡاَبۡصَارِ

फिर अब्दुल हक़ ने लिखा है कि आथम की भविष्यवाणी के पूर्ण न होने के समय में तुम पर मुसलमानों और ईसाइयों ने कितनी लानतें कीं। यही दण्ड दज्जाल कज़्ज़ाब का था। इसका उत्तर यह है कि आदेश परिणामों पर

शेष हाशिया - कर और स्वयं को ग़रीबी के कष्टों में डालकर तथा अपने जीवन को एक शोकाकुल हालत बनाकर और प्रतिदिन भय तथा हताशा की हरकतें करके एक दुनिया को अपनी परेशानी और दीवानापन दिखा कर बड़ी सफ़ाई से इस बात को सिद्ध कर दिया है कि उसके हृदय ने इस्लामी श्रेष्ठता एवं सच्चाई को स्वीकार कर लिया। क्या यह बात झूठ है कि उसने भविष्यवाणी के **रोब वाले विषय** को पूर्णरूप से स्वयं पर डाल लिया और जितना एक मनुष्य एक सच्ची एवं वास्तविक विपत्ति से भयभीत हो सकता है उतना ही वह इस भविष्यवाणी से भयभीत हुआ और उसका हृदय बाह्य सुरक्षाओं से सन्तुष्ट न हो सका और सच्चाई के रोब ने उसे पागल सा बना दिया। तो ख़ुदा तआला ने न चाहा कि उसे ऐसी हालत में मार डाले। क्योंकि यह उसके अनादि क़ानून और अनादि सुन्नत के विरुद्ध है तथा यह इल्हामी शर्त से उलट एवं विपरीत है और यदि इल्हाम अपनी शर्तों को छोड़कर अन्य प्रकार से प्रकटन करे तो यद्यपि मूर्ख लोग इस से प्रसन्न हों, परन्तु ऐसा इल्हाम ख़ुदा का इल्हाम नहीं हो सकता और यह असंभव है कि ख़ुदा अपनी प्रस्तावित शर्तों को भूल जाए। क्योंकि शर्तों का ध्यान रखना सच्चे के लिए आवश्यक है और ख़ुदा सब सत्यनिष्ठों से अधिक सत्यनिष्ठ है। हां जिस समय मिस्टर अबुदल्लाह आथम इस शर्त के नीचे से स्वयं को बाहर करे और अपने लिए अपनी गुस्ताख़ी तथा धृष्टता से तबाही के सामान पैदा करे तो वे दिन निकट आ जाएंगे और हाविय: का दण्ड पूर्णरूप से प्रकट होगा। और यह भविष्यवाणी अद्‌भुत तौर

लागू होता है। मोटी बुद्धि वालों और मूर्खों ने नबियों रसूलों से भी प्रारंभ में ऐसा ही किया है। फिर अन्त में अपनी अज्ञानताओं पर रोए। मैं तुम्हें सच सच कहता हूं कि यहां भी ऐसा ही होगा।

यह भी स्मरण रहे कि इस अब्दुल हक़ और उसकी जमाअत का एक कलमी पत्र भी रमज़ान माह के प्रारंभ में मेरे पास पहुंचा चूंकि वह गालियों से भरा हुआ था इसलिए मैंने न चाहा कि रमज़ान में उसका उत्तर लिखूं। परन्तु वह पत्र गज़नवी लोगों का अब तक मौजूद है और गालियां जो मुझे दी हैं वे ये हैं- दस हज़ार तेरे पर लानत, लानत, लानत, लानत, लानत अशरह अल्फ़िमअ: काफ़िर, अक्फ़र, दज्जाल, शैतान, फ़िरऔन, क़ारून, हामान,

---

शेष हाशिया - पर अपना प्रभाव दिखाएगी। और ध्यानपूर्वक स्मरण रखना चाहिए कि हाविय: में गिराया जाना जो असल शब्द इल्हाम में हैं वे अब्दुल्लाह आथम ने अपने हाथ से पूरे किए और जिन कष्टों में उसने स्वयं को डाल लिया तथा जिस ढंग से निरन्तर घबराहट का सिलसिला उस के दामन को पकड़ कर रोकने वाला हो गया और भय एवं डर ने उसके हृदय को पकड़ लिया यही **असल हाविय:** था और मौत की सज़ा उसके कमाल के लिए है। जिसकी चर्चा इल्हामी इबारत में मौजूद भी नहीं। निस्सन्देह यह कष्ट एक हाविय: था जिसको अब्दुल्लाह आथम ने अपनी हालत के अनुसार भुगत लिया। परन्तु वह बड़ा हाविय: जो मौत से अभिप्राय किया गया है उसमें कुछ छूट दी गयी, क्योंकि सच का रोब उसने अपने सर पर ले लिया। इसलिए वह ख़ुदा तआला की दृष्टि में उस शर्त से कुछ लाभ प्राप्त करने का अधिकारी हो गया जो इल्हामी इबारत में दर्ज है, और अवश्य है कि प्रत्येक बात का प्रकटन इसी प्रकार से हो जिस प्रकार से ख़ुदा तआला के इल्हाम में वादा हुआ, और मैं विश्वास रखता हूं कि हमारे इस वर्णन में वही व्यक्ति विरोध करेगा जिसको मिस्टर अब्दुल्लाह आथम की इन समस्त घटनाओं पर पूर्णरूप से सूचना न होगी और या जो पक्षपात, कंजूसी और निष्ठुरता से सच को छुपाना चाहता है।

अड़ड़पोपो, घाटी का वहशी, कल्ब यल्हस अर्थात जंगली कुत्ता। इन अफ़गानों की बातचीत की मिठास और संयम का यह नमूना है।

एक अन्य सज्जन जो गालियां देने में अब्दुल हक़ के छोटे भाई या बड़े भाई हैं अपने अख़बार 'दुर्रतुल इस्लाम' में बहुत सी गालियों के साथ आथम की भविष्यवाणी की चर्चा करते हैं। अब मैं उन को बार-बार कहां तक बताऊं कि आथम तो भविष्यवाणी के अनुसार जीवित भी रहा और मरा भी। उसने भय दिखाया और निर्लज्जता व्यक्त न की। इसलिए ख़ुदा ने वादे के अनुसार उससे नर्मी की और कुछ विलम्ब डाल दिया और लेखराम ने निरन्तर गुस्ताखियां व्यक्त कीं। इसलिए शक्तिमान प्रकोपी ने उसे पकड़ लिया। ये दोनों नमूने आथम और लेखराम के अध्यात्म ज्ञान के भूखों-प्यासों के लिए अत्यन्त लाभप्रद हैं। इन से यह भी सिद्ध होता है कि ख़ुदा कैसा दयालु-कृपालु है जो नर्मी करने वालों से नर्मी करता है। और कैसा स्वाभिमानी है जो चालाकी करने वालों को शीघ्र पकड़ता है। आथम का भविष्यवाणी के सुनने से ठण्डा और सर्द हो जाना और लेखराम का धृष्ट हो जाना अवश्य चाहता था कि दो भिन्न परिणाम पैदा हों। हे मूर्खो क्या यह वैध था कि ख़ुदा की इल्हामी शर्त पूर्ण न होती या वह नर्मी के स्थान पर नर्मी प्रयोग न करता और डरने वाले को तुरन्त उठा कर पत्थर मारता ?!

यह भी सुन चुके हो कि इल्हाम रुजू की शर्त लगा कर आथम की स्वाभाविक विशेषता की ओर संकेत कर दिया था। यदि उसके स्वभाव में भय स्वीकार करने की शक्ति न होती तो ख़ुदा इल्हाम में रुजू की शर्त व्यक्त न करता। और रुजू हृदय का एक कार्य है जिसमें बाह्य तौर पर इस्लामी शर्त नहीं। तो आथम ने अपने कार्यों एवं कथनों से प्रकट कर दिया कि वह अवश्य उस शर्त का पबन्द हो गया। इसलिए वह दयालु ख़ुदा जिसने फ़रमाया है कि जब नौका मैं बैठने वाले डूबने के समय मेरी ओर रुजू करें तो मैं उनको उस

समय बचा लेता हूं। यद्यपि जानता हूं कि बाद में फिर अपने दुर्भाग्य की ओर लौट आएंगे। उसी सहनशील ख़ुदा ने आथम को इल्हामी शर्त का उसके रुजू पर लाभ दे दिया। फिर आथम इस के बाद इस्लाम धर्म के खण्डन की पुस्तकें लिखने में व्यस्त नहीं हुआ और न नालिश की और न क़सम खाई, यहां तक कि इस संसार से गुज़र गया तथा भय का इक़रार किया। तो यद्यपि बेईमानों का तो कुछ इलाज नहीं परन्तु ईमानदार आथम की इस पृथकता और खामोशी से अवश्य रुजू का परिणाम निकालेंगे। यह सबूत का भार आथम की गर्दन पर था कि वह भय के इक़रार के बाद हमें और प्रत्येक न्याय कर्ता को यह अवसर न देता कि उसके कथनों तथा कार्यों से हम रुजू का परिणाम निकाल सकते। अपितु चाहिए था कि वह क़सम से या नालिश से अथवा अन्य किसी प्रकार से दावे को सिद्ध करने से अपनी उस कायरता को जो उस से पन्द्रह महीने तक निरन्तर प्रकट होती रही इस्लामी धाक से पृथक करके दिखाता। तो यह बड़ी नीचता है कि यह विचार किया जाता है कि आथम के दिल ने भविष्यवाणी की प्रतिष्ठा को एक कण भर स्वीकार नहीं किया था और वह अपनी पिछली धृष्टताओं पर मीआद के अन्दर निरन्तर क़ायम था। एडीटर दुर्रतुल इस्लाम लिखते है कि ईमान के लिए ज़ुबान से इक़रार करना शर्त है तो इसका यही उत्तर है कि हे मूर्ख इल्हाम में शब्द रुजू है जो वास्तव में हृदय का कार्य है और उसके लिए ज़ुबान का इक़रार शर्त नहीं। ज़ुबान का इक़रार आख़िरत की मुक्ति के लिए शर्त है परन्तु ऐसी मुक्ति के लिए जो केवल दुनिया के लिए हो केवल हृदय का भय पर्याप्त है। यह आवश्यक नहीं कि किसी लोगों के समूह को गवाह बनाया जाए अपितु يكتم ايمانه (अलमोमिन-29) भी तो क़ुर्आन में मौजूद है। फिर यही व्यक्ति लिखता है कि मार्च 1886 में विज्ञापन दिया था कि लड़का पैदा होगा। अर्थात इसके बाद लड़की पैदा हुई। परन्तु हे मुर्खो हृदय के अंधो! मैं तुम्हें कब तक समझाऊंगा। मुझे वह विज्ञापन 1886 दिखाओ।

मैंने कहां लिखा है कि इसी वर्ष में लड़का पैदा होना आवश्यक है फिर यही व्यक्ति लिखता है कि तुम्हे अपने झूठे इल्हाम पर तनिक शर्म न आई। किन्तु मैं कहता हूं कि हे कठोर हृदय! इल्हाम झूठा नहीं था। तुझ में स्वयं ख़ुदा का कलाम समझने का तत्व नहीं। इल्हाम में कोई ऐसा शब्द न था कि इस गर्भ में ही लड़का पैदा होगा। अब इसके अतिरिक्त मैं क्या कहूं कि झूठों पर ख़ुदा की लानत। निस्सन्देह मुझे इल्हाम हुआ था कि मौऊद लड़के से क़ौमें बरकत पाएंगी। परन्तु उन विज्ञापनों में कोई ऐसा ख़ुदा का इल्हाम नहीं जिसने किसी लड़के को विशिष्ट किया हो कि यही मौऊद है यदि है तो लानत है तुझ पर यदि तू वह इल्हाम प्रस्तुत न करे। हां दूसरे गर्भ में जैसा कि पहले से मुझे एक और लड़के की ख़ुशख़बरी मिली थी लड़का पैदा हुआ। अत: यह स्वयं एक स्थायी भविष्यवाणी थी जो पूरी हो गई जिसका हमारे विरोधियों को साफ़ इक़रार है। हां उस भविष्यवाणी में यदि मैनें ऐसा इल्हाम लिखा है जिस से सिद्ध होता हो कि इल्हाम ने उसी को मौऊद लड़का बताया था तो क्यों वह इल्हाम प्रस्तुत नहीं किया जाता। तो जब तुम इल्हाम को प्रस्तुत करने से असमर्थ हो तो क्या यह लानत तुम पर है या किसी अन्य पर और यह कहना कि उस लड़के को भी मसऊद कहा है तो हे नीच मसऊदों की औलाद मसऊद ही होती है परन्तु सिवाए कुछ के। कौन बाप है जो अपने लड़के को नेकचलन नहीं अपितु निष्ठुर व्यवहार वाला कहता है। क्या तुम्हारा यही तरीक़ा है? और मान लो मेरा यही अभिप्राय होता तो मेरा कहना और ख़ुदा का कहना एक नहीं है। मैं इन्सान हूं। संभव है कि विवेचन से एक बात कहूं और वह सही न हो परन्तु मैं पूछता हूं वह ख़ुदा का कौन सा इल्हाम है जो मैंने प्रकट किया था कि पहले गर्भ में ही लड़का पैदा होगा। वह वास्तव में वही मौऊद लड़का होगा और वह इल्हाम पूरा हुआ। यदि मेरा ऐसा इल्हाम तुम्हारे पास मौजूद है तो तुम पर लानत है यदि वह इल्हाम प्रकाशित न करो!

फिर तुम्हारा दूसरा ऐतराज़ यह है कि "अहमद बेग का दामाद अब तक जीवित है।" तो मैं कहता हूं कि हे नीच क़ौम! तू कब तक अंधी गूंगी और बहरी रहेगी? और कब तक तेरी आंखें उस प्रकाश को नहीं देखेंगी जो उतारा गया? सुन और समझ कि उस इल्हाम के दो भाग थे एक अहमद बेग के बारे में और एक उसके दमाद के बारे में। अतः तुम सुन चुके हो कि अहमद बेग मीआद के अन्दर मर गया। और वह दिन आता है कि तुम सुन लोगे कि उसके दामाद के बारे में भी भविष्यवाणी पूरी हो गई। ख़ुदा की बातें टल नहीं सकतीं और ये ऐतराज़ जो तुम करते हो नए नहीं लेखों को पढ़ो कि पहले बुरी समझ वाले लोगों ने भी नबियों पर ऐसे ही ऐतराज़ किए हैं। तुम्हारे दिल उनके समान हो गए। और तुम्हारा यह कहना कि मीआद के अन्दर वह क्यों नहीं मरा? यह तुम्हारी बेईमानी या अज्ञानता है। इल्हाम-

توبی توبی فانّ البلاء علیٰ عقبک

(तूबी तूबी फ़इन्नल बलाआ अला अक़िबिक) में तौब:की स्पष्ट शर्त थी और यह इल्हाम अहमद बेग और उस के दमाद दोनों के लिए था क्योंकि عقب लड़की और लड़की की संतान को कहते हैं। और यह अहमद बेग की पत्नी की मां को सम्बोधन था कि तेरी लड़की और लड़की की लड़की पर पति के मरने की विपदा है यदि तौब: करोगी तो मृत्यु में विलम्ब किया जाएगा तो अहमद बेग के जीवित रहने के समय किसी ने इस इल्हाम की परवाह न की और जब अहमद बेग मृत्यु पा गया तो उसकी विधवा स्त्री तथा अन्य पीछे बचे हुए बाल-बच्चों की कमर टूट गई। वे दुआ और गिड़गिड़ाने की ओर हार्दिक तौर पर मुड़ गए। जैसा कि सुना गया है कि अब तक अहमद बेग की मां का कलेजा अपने (सही) हाल पर नहीं आया। तो ख़ुदा देखता है कि वह धृष्टताओं में कब आगे कदम रखते हैं। इसलिए उसका वादा उस समय पूरा होगा जब यह सब कुछ पूरा होगा। तब न मैं अपितु

प्रत्येक बुद्धिमान तुम पर लानत भेजेगा **क्योंकि तुमने ख़ुदा का मुक़ाबला किया!**

और फिर एक अन्य साहिब अपना नाम शेख नजफी व्यक्त करके मेरे मुक़ाबले पर आए हैं और मुझे कज़्ज़ाब, दज्जाल और मूर्ख ठहराते हैं तथा कहते हैं कि चंद्र और सूर्य ग्रहण का निशान क़यामत को प्रकट होगा न कि अब। इस मूर्ख को यह भी ख़बर नहीं कि यदि चंद्र और सूर्य ग्रहण महदी के निशान के तौर पर प्रकट होगा जैसा के 'दार-ए-कुतनी' इत्यादि हदीस की पुस्तकों में दर्ज है तो क़यामत को इस निशान से लाभ कौन उठाएगा। अपितु उस समय तो महदी का आना ही बेफायदा होगा। जब ख़ुदा ने ही सूर्य की व्यवस्था को तोड़कर सृष्टि का अंत करना चाहा तो कौन महदी और कहां के उसके निशान? वह तो क़यामत का समय आ गया इसमें किस को आपत्ति हो सकती है कि महदी का युग नवीनीकरण का युग है और चंद्र एवं सूर्य ग्रहण उसके समर्थन के लिए एक निशान हैं तो वह निशान अब प्रकट हो गया जिसको स्वीकार करना हो स्वीकार करे और जैसा कि हदीस में लिखा था चंद्र ग्रहण उस पहली रात में हुआ जो चंद्रमा की तीन रातों में से पहली रात है और सूर्य ग्रहण उन दिनों के मध्य में हुआ जो सूर्य ग्रहण के लिए निर्धारित हैं और इस प्रकार यह भविष्यवाणी नितांत सफाई से पूर्ण हो गई। क्योंकि युग के उलमा सूर्य और चंद्रमा की तरह होते हैं तो इस भविष्यवाणी में यह संकेत था कि सूर्य एवं चंद्र ग्रहण उलमा के दिलों के अंधकार पर गवाह हैं **कि जो कुछ पृथ्वी में होता है आकाश उसको दिखला देता है।**

और फिर यही साहिब अपने अरबी पत्र में जो उलझी हुई बातों से भरा हुआ है मुझको लिखते हैं कि "यदि तू मेरे मुक़ाबले पर आए तो मैं अपना अरबी ज्ञान तुझे दिखलाऊँ।" हालांकि उनके इसी अरबी पत्र

से उनके ज्ञान का भली-भांति अनुमान हो गया और मालूम हो गया कि कुछ चुराए हुए वाक्यों और चोरी के शब्दों के अतिरिक्त उनकी गठरी में और कुछ नहीं। और ऐसा ही अब्दुल हक ने भी अपने उपरोक्त विज्ञापन में यही डींगें मारी हैं और मेरे बारे में लिखा कि "ये पुस्तकें जो वह प्रकाशित करता है अरबी जानने वाले लोगों से अरबी करवा कर छपवाता है और मुझे निस्संदेह मालूम है कि उसे अरबी की योग्यता कदापि नहीं यदि उसको अवश्य योग्यता दी गई है तो मुझसे सामान्य उलमा की मज्लिस में अरबी भाषा में बहस करे। दोनों की अरबी लिखी जाएगी, तत्पश्चात उलमा के समक्ष प्रस्तुत की जाएगी। यदि श्रेष्ठता ले गया तो माना जाएगा कि यह अरबी पुस्तकें उसने बनाई हैं और बहस लिखित के रूप में आमने सामने होगी। यदि बहस में तुझसे कुछ न बना तो झूठों पर ख़ुदा की लानत। इसके उत्तर में **अंजाम आथम के परिशिष्ट** में इसको लिखा गया कि हम इस मुक़ाबले के लिए तैयार हैं परंतु तुम्हें स्मरण रहे कि हम बार-बार लिख चुके हैं कि ये अरबी पुस्तकें इसलिए नहीं लिखी गईं कि लोग हमें अरबी जानने वाला समझें और मौलवी जानें अपितु इन पुस्तकों में बार-बार यह जताया गया है कि यह ख़ुदा का निशान है और चमत्कार के तौर पर मुझे दिया गया है ताकि यह भी मेरे दावे पर एक तर्क हो। मैंने कब और कहां लिखा है कि अरबी पुस्तकों से यह मतलब है कि यदि कोई पराजित हो तो मुझे अरबी जानने वाला मान ले तो। यह तो इक़रार करना चाहिए कि यदि तुम इतनी श्रेष्ठता के दावे और अरबी जानने के बावजूद मुझ जैसे इंसान से स्पष्ट तौर पर पराजित हो जाओ जिसके बारे में तुम्हें इसी विज्ञापन में इक़रार है कि इस मनुष्य को अरबी जानने की कुछ योग्यता नहीं तो यह निशान तो स्वीकार कर लोगे और हार्दिक विश्वास के साथ समझ लोगे कि यह ख़ुदा तआला की ओर से

एक चमत्कार है और उसी समय तौब: करके मेरी बैअत में दाख़िल हो जाओगे परन्तु दो माह के लगभग समय गुज़र गया अब तक अब्दुल हक़ की ओर से कोई उत्तर नहीं आया मानो कि वह मर गया।

अब न्यायप्रियों! को सोचना चाहिए कि यह लोग सच छुपाने के लिए कैसे दज्जाली कार्य कर रहे हैं और कितने शैतानी झूठों को इस्तेमाल करके लोगों को तबाह करते हैं। यदि यह व्यक्ति अपनी अरबी भाषा जानने में सच्चा था और वास्तव में मुझ को केवल उम्मी और अनपढ़ तथा मूर्ख समझता था तो उसे तो ख़ुदा ने अवसर दिया था कि मैं मुकाबला करने पर तत्पर हो गया था और मैंने निश्चित वादे से कह दिया था कि यदि मैं पराजित हो गया तो मैं स्वयं को झूठा समझूंगा परन्तु यदि मैं विजयी हुआ तो मुझे सच्चा समझना चाहिए। तो फिर क्या कारण था कि वह उपेक्षा कर गया। क्या यह इन्साफ़ की बात थी कि यदि मैं पराजित हो जाऊं तो मुझे अपने दावे में झूठा समझा जाए। परन्तु यदि मैं विजयी हो जाऊं तो मुझे केवल एक अरबी जानने वाला समझा जाए। क्या मैंने यह समस्त अरबी पुस्तकें मौलवी कहलाने के शौक से प्रकाशित की थीं। मुझे तो मौलवियत के शब्द से सदैव से नफ़रत है और दिल से विमुख हूं कि कोई मुझे मौलवी कहे। मैंने तो उन पुस्तकों के लिखने से केवल ख़ुदा का निशान प्रस्तुत किया था। क्योंकि यह विलायत पूर्ण रूप से नुबुव्वत का ज़िल्ल है। ख़ुदा ने आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नुबुव्वत को सिद्ध करने के लिए भविष्यवाणियां दिखाईं। अत: यहां भी बहुत सी भविष्यवाणियां प्रकटन में आईं। ख़ुदा ने दुआओं को स्वीकार करके अपने नबी अलैहिस्सलाम की नबुव्वत का सबूत दिया। तो यहां भी बहुत सी दुआएं स्वीकार हुईं। दुआ के स्वीकार होने का यही नमूना जो लेखराम में सिद्ध हुआ ध्यानपूर्वक विचार करो!!! ऐसा ही ख़ुदा ने अपने

नबी को शक़्क़ुलक़मर (चाँद के दो टुकड़े होना) का चमत्कार दिया तो यहां भी चन्द्र और सूर्य ग्रहण का चमत्कार दिया गया। ऐसा ही ख़ुदा ने अपने नबी को सरसता सुबोधता का चमत्कार दिया तो यहां भी सरसता और सुबोधता को चमत्कार के तौर पर दिखाया। अतः सरस और सुबोध शैली का एक ख़ुदाई निशान है। यदि इसे खंडित करके न दिखलाओ तो जिस दावे के लिए यह निशान है वह इस निशान तथा दूसरे निशानों से सिद्ध है और तुम पर ख़ुदा का प्रमाण क़ायम है।

यह उत्तर था जो अब्दुल हक़ को लिखा गया था। परन्तु अब चूंकि समय सीमा और अनुमान से गुज़र गया और उस ओर से कोई उत्तर न आया और शेख़ नजफ़ी में भी कुछ दिनों के हित के लिए सिद्दीक़ अकबर और फ़ारूक़ आज़म का पीछा छोड़ कर मेरी ओर अपने समस्त फ़ायरों को झुका दिया इसलिए उचित प्रतीत होता है कि इस शेख़ी मारने वाले नजफ़ी और ग़ज़नवी का सर कुचलने के लिए कुछ अरबी के संक्षिप्त पृष्ठ बतौर निशान लिखे जाएं और उन पर अपनी सच और झूठ को निर्भर किया जाए। क्योंकि यदि ख़ुदा मेरे साथ है और मैं ख़ूब जानता हूं कि वह मेरे साथ है तो वह इन लोगों को मुक़ाबले की शक्ति नहीं देगा। इसलिए मैंने लेखराम की मृत्यु के पश्चात 8 मार्च 1897 ई० को इस निबन्ध के लिखने का इरादा किया। परन्तु आवश्यक विज्ञापनों के प्रकाशित करने के कारण कुछ विलम्ब हो गया। अब 17 मार्च 1897 ई० से लिखना आरम्भ किया है। अतः विश्वास रखता हूं कि मैं इस उर्दू भूमिका के बाद एक सप्ताह तक इन्शा अल्लाह अरबी निबन्ध उसी की कृपा, शक्ति और सामर्थ्य से इतना लिख लूंगा जो विरोधियों के लिए निशान के रूप में चमकेगा और मैं इस समय पक्का वादा करता हूं कि यदि कोई व्यक्ति इन दोनों में से अर्थात नजफ़ी और ग़ज़नवी में से इस मीआद के अन्दर जो 17 मार्च 1897 से प्रकाशित होने के दिन तक हो सकती है। अर्थात उस दिन कि

यह पुस्तक उनके पास पहुंच जाए उस निबन्ध का उदाहरण उसी के आकार और मोटाई के अनुसार तथा उसी की पद्य और गद्य के अनुसार मुक़ाबले पर प्रकाशित कर दे और अरबी प्रोफेसर मौलवी अब्दुल्लाह साहिब या कोई अन्य प्रोफेसर जो विरोधी प्रस्तावित करें ऐसी क़सम खाकर जो ख़ुदा के अज़ाब के साथ पुख्ता की गई हो सार्वजनिक जलसे में कह दें कि यह निबन्ध फ़साहत और बलाग़त की समस्त श्रेणियों के अनुसार प्रस्तुत निबन्ध से बढ़कर या बराबर है और फिर क़सम खाने वाला मेरी दुआ के बाद इक्तालीस दिन तक ख़ुदा के आज़ाब में न गिरफ्तार हो तो मैं अपनी पुस्तकें जलाकर जो मेरे क़ब्ज़े में होंगी उनके हाथ पर तौब: करूंगा और इस ढंग से प्रतिदिन का झगड़ा तय हो जाएगा और इसके बाद जो व्यक्ति मुक़ाबले पर न आया तो जनता को समझना चाहिए कि वह झूठा है।

और यह कहना कि संभव है कि तुम किसी दूसरे से लिखवाकर अपने नाम से प्रस्तुत करोगे। इसका उत्तर इतना ही पर्याप्त है कि ऐसा दूसरा अरबी जानने वाला तुम्हें भी मिल सकता है। अपितु तुम जो हर समय डींगें मारते हो कि तुम्हारे साथ हज़ारों उलेमा हैं और तुम्हारे गुमान के अनुसार मेरे साथ केवल मूर्खों या मुंशियों का गिरोह है तो अब तुम्हें शर्म नहीं आती कि ऐसी बातें मुंह पर लाओ। तुम्हारे पास तो मदद देने के लिए अधिक सामान हैं। किसी साहित्यकार के आगे हाथ जोड़ो या आवश्यकता के समय उसके कदमों पर ही गिर जाओ अन्ततः वह दया करेगा और तुम्हें कुछ बता देगा और फिर यह भी है कि यह लेख मेरा हो या तुम्हारे मूर्खतापूर्ण विचार से किसी अन्य का। इससे तुम्हें क्या मतलब और क्या संबंध जबकि मैं इस पर निर्भर हूं कि लेख का उदाहरण प्रस्तुत होने से मैं समझ लूंगा कि मैं झूठा हूं तो तुम्हारी ओर से प्रयास होना चाहिए कि इसका उदाहरण प्रस्तुत करो। यदि तुम सच्चे हो तो अवश्य अपने प्रयास में सफल हो जाओगे। क्योंकि

ख़ुदा सच्चो को नष्ट नहीं करता और उसके प्रिय अपमानित नहीं होते। मैं पुनः कहता हूं कि इस मीआद में तुम्हें मुक़ाबले पर पुस्तक प्रकाशित कर देना चाहिए। जिस मीआद में 17 मार्च 1897 ई. के प्रारंभ से मेरी पुस्तक प्रकाशित हो। यदि इसमें विलंब होगा तो फिर तुम्हारे व्यर्थ बहानों की ओर ध्यान नहीं दिया जाएगा। अब मैं अरबी पुस्तक लिखता हूं।

وَمَا تَوْفِيْقِى الَّا بِاللّٰه رَبّ انْصُرنِى مِن لدُنك رَبّ ايّدنى مِن لدُنك رَبّ انّ قومى طردونى فآونى مِنْ لدُنك رَبّ انّ قومى لعنونى فارْحمنى من لدنك ارحمنى يا ربّ الارض والسّماء ارحمنى يا ارحم الرحماء ولا راحم الَّا انت انّك انت حِبّى فى الدنيا وَالاٰخرة و انت ارحم الـراحميـن توكّلتُ عليك وانت لا تضيع المتوكّلينْ

उज़्र

इस अरबी निबंध में यदि कोई कठोर शब्द हो तो मियां अब्दुल हक़ साहिब ग़ज़नवी क्षमा करें क्योंकि उनके कथनानुसार इस विनीत को अरबी लिखने की योग्यता नहीं और लिखने वाले कोई अन्य फ़ाज़िल (विद्वान) हैं जो अरबी को लिखते हैं। अतः आरोप उन अज्ञात आदमियों पर है न ऐसे व्यक्ति पर जो अरबी नहीं जानता।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم

الحمدُ للّٰہ الّذی جعَلنی مَظهَرَ الآیات، وصیَّرنی ظلَّ سیّدِ الکائنات، وجعل اسمی کاسمه بأنواع التفضّلات، فأتمّ النعم علیّ لأحمَدَه وأکون له أحمَدَ تحت السماوات، ونضَّر بی إیمان الناس لیُحمّدونی وأکون مُحمَّدًا بین المخلوقات. فأنا أحمَدُ وأنا محمَّد کما جاء فی الروایات، وأُعطیتُ حقیقةَ اسمَیْ نبیّنا فخرِ الموجودات، کانعکاس الصُّوَر فی المرآة، فنصلّی ونسلّم علی هذا النبی الامّیّ الذی تنعکس أنواره فی الصالحین والصالحات، وتُفتَح باسمه أبواب البرکات، وتتم بنوره حجّة اللّٰہ علی الکافرینَ وَالکافرات؛ وَعلیٰ آله الطّاهرین والطاهرات، وأصحابه المَحْبُوبین والمَحْبُوْبات، وجمیع عباد اللّٰہ الصّالحین.

समस्त प्रशंसा उस ख़ुदा की है जिसने मुझे निशानों का प्रकटन स्थल बनाया और कायनात के सरदार का ज़िल्ल मुझे ठहराया और मेरे नाम को आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नाम के समान बना दिया इस तौर पर कि मुझ पर अपनी नेमतों को पूर्ण किया ताकि मैं उसकी बहुत प्रशंसा करके अहमद के नाम का चरितार्थ बनूं और मेरे कारण लोगों के ईमान को ताज़ा किया ताकि वे मेरी बहुत प्रशंसा करें और मैं मुहम्मद के नाम का चरितार्थ बनूं अत: मैं अहमद हूं और मैं मुहम्मद हूं। जैसा कि रिवायतों में आया है और मुझे आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दोनों नामों की वास्तविकता प्रदान की गई है। जैसा कि दर्पण में सूरतों का प्रतिबिम्ब हो जाता है इसलिए हम उस उम्मी नबी पर दरूद और सलाम भेजते हैं जिसके प्रकाश नेक पुरुषों और नेक स्त्रियों में चमकते हैं और उसके नाम के साथ बरकतों के दरवाज़े खोले जाते हैं और उसके प्रकाश के साथ ख़ुदा के समझाने का अन्तिम प्रयास पूर्ण हो जाता है और दरूद एवं सलाम उसकी संतान पर जो पवित्र पुरुष और पवित्र स्त्रियां हैं और उसके आधार पर जो ख़ुदा के प्रिय बन्दे और प्रिय दासियां हैं और ऐसा ही समस्त नेक पुरुषों पर।

أمّا بعد.. فاعلموا أيها الطالبون، والاخيار المسترشدون، أن الله أتم حجّتى على الاعداء، وأرَى لى الخوارق وأسبغَ من العطاء، ورأيتم كيف نزلت الآيات من السماء، وكيف فُتِحت الابواب للطلباء، ثم الذين بخلوا يُنكرونى لاعنين، ويتركون الديانةَ والدين. جرّدوا مِن غير حقّ سيفَ العدوان، وشهّروا حُسام السبّ والطغيان، وما كانوا منتهين.

إنهم يؤذونى ويسبّونى ويكفّرونى، ولا أعلم لِمَ يُكفّرونى. أيكفّرون رجلا يقول إنى من المسلمين؟ يُصرّون على سبل الضلال والنكوب، فأين خوف الله وتقوى القلوب، وأين سِيَرَ الصالحين؟ أما جاءتهم الآيات؟ أما ظهرت البيّنات؟ أما حصحص الحق ورُفع الشبهات؟

इसके बाद हे अभिलाषियो और अच्छे लोगो जो हिदायत को ढूंढने वाले हो तुम्हें मालूम हो कि ख़ुदा ने मेरे समझाने के अन्तिम प्रयास को शत्रुओं पर पूरा कर दिया और मेरे लिए उसने निशान दिखलाए और मुझ पर अपनी रहमत को पूरा किया। और तुमने देखा कि आकाश से क्योंकर निशान उतरे और क्योंकर सभी अभिलाषियों के लिए दरवाज़े खोले गए फिर वे जो कंजूसी करते हैं और लानत करते हुए इन्कार करते हैं। और धर्म को भी छोड़ते हैं और ईमानदारी को भी। उन्होंने अन्याय की तलवार अकारण खींच रखी है और गाली तथा बकवास करने में नंगा खंजर उनके हाथ में है और वे रोक नहीं सकते।

वे मुझे दुख देते हैं और गाली देते हैं और मुझे काफ़िर ठहराते हैं और मैं नहीं जानता कि क्यों ठहराते हैं क्या वे उस आदमी को काफ़िर कहते हैं जो मुसलमान होने का इक़रार करता है। गुमराही और कुमार्ग के तरीकों पर हठ करते हैं तो कहां है ख़ुदा का डर और हृदयों का संयम और कहां है सदाचारियों की आदतें क्या उनके पास निशान नहीं आए क्या खुले खुले विलक्षण निशान प्रकट नहीं हुए? क्या सच नहीं खुल गया और सन्देह नहीं मिट गया क्या उन्होंने परस्पर अहद कर लिया है कि सच की ओर रुजू नहीं करेंगे या परस्पर क़समें खा ली हैं कि झुठलाने और अपमान पर आग्रह करते रहेंगे? क्या मुझे गाली देने और काफ़िर कहने के

أفتَعاهدوا على أنهم لا يرجعون إلى حقّ مبين؟ أو تقاسموا على أنهم يُصرّون على تكذيبٍ وتوهينٍ؟ أيُخوّفوننى بالسبّ والشتم والتكفير، ويتربصون بى الدوائر بالحيل والتدابير؟ والله يعلم كيد الخائنين. إنه يعلم ما فى نفسى ونفسهم، وإنه لا يُحب المفسدين. وإنى عنده مكين أمين، وإن بينى وبينه سرّ لا يعلمه إلا هو، فويلٌ للمعتدين. أتحسب الاعداء أن العداوة خيرٌ لهم، بل هى شرّ لهم، لو كانوا متفكّرين. أيظنّون أنهم يهدّون ما بنتْه أنامل الرحمٰن؟ أو يجوحون ما غرسته أيدى الله ذى المجد والسُلطان؟ كلا بل إنهم من المفتونين.

يا معشر الجهلاء والسفهاء وزُمر الاعداء والاشقياء أ أنتم تطفئون نور حضرة الكبرياء، أو تدوسون الصّادقين؟ اتّقوا الله، ثم اتّقوا إن كنتم عاقلين. أيها الناس فارِقوا فُرُشَ الكَرَى، فإن الوقت قد دنَا، وإنّ أمر الله أتَى،

साथ डराते हैं और यत्नों एवं बहानों से मुझ पर काल-चक्र की आशा रखते हैं। ख़ुदा तआला बेईमानों के छल को खूब जानता है। वह मेरे दिल की बातों और उनके दिल की बातों को जानता है। और उपद्रवियों को दोस्त नहीं रखता और मैं उसके नज़दीक पद वाला और अमानतदार हूं और मुझ में और उसमें एक भेद है जो मेरे ख़ुदा के अतिरिक्त कोई नहीं जानता अत: हद से बढ़ जाने वालों पर हाहाकार हो। क्या शत्रु यह जानते हैं कि शत्रुता करना उनके लिए अच्छा है? नहीं! बल्कि बुरा है। यदि वे सोचें। क्या वे गुमान करते हैं कि ख़ुदा तआला की इमारत को वे ध्वस्त कर देंगे या उस वृक्ष को जड़ से उखाड़ देंगे जो ख़ुदा तआला के हाथ का लगाया हुआ है। कदापि नहीं अपितु वे तो आज़माइश में पड़े हुए हैं।

हे अज्ञानियों और अल्प बुद्धि वालों के गिरोह और शत्रुओं एवं अभागों की जमाअतो! क्या तुम ख़ुदा तआला के प्रकाश को बुझा दोगे या सच्चों को पैरों के नीचे कुचल दोगे? डरो ख़ुदा से डरो यदि बुद्धिमान हो। हे लोगो स्वप्न के फ़रिश्तों से पृथक हो जाओ क्योंकि समय निकट आ गया और ख़ुदा का आदेश पहुंच गया और वह इरादा करता है कि मुर्दों को जीवित करे तो क्या तुम ऐसा जीवन चाहते

وإنّه يريد ليُحيى الموتى. فهل تريدون حياة لا نزع بعده ولا رَدَى؟ وهل تحبّون أن يرضَى عنكم ربكم الاعلى، أو تُصعّرون خدَّكم مُعرضين؟

واعلموا أنّى أُعطِيتُ قميصَ الخِلافة، وتَسَربلتُ لباسها من حضرة العزّة، فارحموا أنفسكم ولا تعتدوا كل الاعتداء، ألا ترون إلى ما تنزل من السماء، أمَا بقى فيكم رَجُل من المتّقين؟ ولو كانّ هذا الامر من غير الرحمٰن، لمزّقه الله قبل تمزيقكم يَا أهل العُدوان. اُنظروا كيف عَنِتُّم بل مُتُّم فى جُهد الصباح والمساء، ومددتم إلى الله يد المسألة والدعاء، فرُدِدْتم مخذولين فى الحافرة، وما حصل إلا إضاعة الوقت وزفرات الحسرة. فما لكم لا تتفكّرون فى أقدار تنزل، ولا ترغبون فى أنوار تُستكمل، أهذا فعل الإنسان؟ أهذا من الكاذب الدجّال الشيطان؟ فلا تُهلكوا أنفسكم بجهلات اللسان، واستعينوا متضرّعين.

हो जिसके बाद न ज़िन्दगी है न मौत और क्या तुम पसन्द करते हो कि ख़ुदा तुमसे प्रसन्न हो जाए या विमुख होना और अलग होना तुम्हें पसन्द है।

और जान लो कि मुझे ख़िलाफ़त की कमीज़ दी गई है और वह लिबास मैंने ख़ुदा तआला की ओर से पहना है अत: तुम अपने नफ़्सों पर रहम (दया) करो और हद से अधिक मत बढ़ो। क्या तुम वे निशान नहीं देखते जो आकाश से उतर रहे हैं। क्या तुम में एक भी मुत्तक़ी संयमी शेष नहीं रहा? यदि यह कार्य ख़ुदा के अतिरिक्त किसी अन्य का होता तो तुम्हारे काटने से पहले ख़ुदा उसे काट देता। देखो तुमने कैसा कष्ट उठाया अपितु सुबह-शाम की कोशिश में मर गए और ख़ुदा की ओर मांगने का तथा दुआ का हाथ फैलाया तो तुम असफ़ल और अस्वीकार किए गए और तुम्हें समय नष्ट करने तथा हसरत की आहों के अतिरिक्त कुछ प्राप्त न हुआ। तो क्या कारण कि तुम उस प्रारब्ध में विचार नहीं करते जो उतर रहा है। और उन प्रकाशों की इच्छा नहीं करते जो पूर्ण हो रहे हैं? क्या यह मनुष्य का कार्य है? और क्या यह झूठे दज्जाल और शैतान की ओर से है? अत: तुम ज़ुबान की मूर्खता के साथ अपने नफ़्सों को तबाह मत करो और विनय पूर्वक ख़ुदा से सहायता मांगो।

يا حسرة عليكم! إنّكم لا تنظرون متوسّمين، وإذا نظرتم نظرتم لاعبين، ولا تُمعِنون خاشعين۔ أتُترَكون في هذا اللهو واللعب، ولا تُقادون إلى نارٍ ذات اللهب، ولا تُسألون عمّا عملتم مستكبرين؟ لا تُلْهِكم أموالكم وأولادكم، فإن الحِمام ميعادكم، ثم قهرُ الله يصطادكم، وأين المفرّ من ربّ السّماوات والارضين؟وقد رأيتم آية الكسوف فنسيتموها، ثم رأيتم آية الله في "آتم" فكذّبتموها، وتجلّت لكم آية موت " أحمد بيك" فما قبلتموها، وقرأتم كتبَ بلاغةٍ رائعةٍ فيها آية فصاحةٍ مُعجبة، فكأنكم مَا قرأتموها، وظَهَرت في ندوة المذاهب آياتٌ فنبذتموها، وقد كانت معها أنباء الغيب فما باليتموها، وكأيّنْ من آياتٍ شاهدتموها،فكأنّكم ما شاهدتموها، وكم من عجائب آنستموها، فما ظلّت لها أعناقكم خاضعين.

तुम पर अफ़सोस! कि तुम विवेक की दृष्टि से नहीं देखते और जब देखते हो तो खेल के तौर पर देखते हो और दिल की विनम्रता से नहीं सोचते क्या तुम इसी खेल-कूद में छोड़े जाओगे? और एक भड़कने वाली आग की ओर खींचे नहीं जाओगे? और उन कार्यों के बारे में पूछे नहीं जाओगे जो अहंकार की हालत में तुमने किए? तुम्हारे माल और तुम्हारी सन्तान तुम्हें धोखा न दे। क्योंकि मृत्यु तुम्हारा वादा है फिर तुम ख़ुदा के प्रकोप के शिकार हो जाओगे। आकाश और पृथ्वी के स्रष्टा से तुम कहां भाग सकते हो? तुमने सूर्य ग्रहण का निशान देखा और उसे भुला दिया फिर तुमने ख़ुदा का निशान आथम में देखा और उसे झुठलाया और तुम्हारे लिए अहमद बेग की मौत का निशान प्रकट हुआ और तुमने उसे स्वीकार न किया और तुमने उन पुस्तकों को पढ़ा जिनकी सुबोधता आश्चर्य में डालने वाली थी तो जैसे तुमने उनको नहीं पढ़ा और धर्म महोत्सव में कई निशान प्रकट हुए तो तुमने उनको हाथ से फेंक दिया उन निशानों के साथ ग़ैब की खबरें थीं तो तुमने उनकी कुछ परवाह न की तथा तुमने कई और निशान देखे तो जैसे न देखे और कई अद्‌भुत कामों को तुमने देखा तो तुम्हारी गर्दन उनके

والآن أشرقتْ آية فی"عِجل جسد له خُوار"، فهل فيكم من يقبلها كالاحرار، أو تولّون مُدبرين؟وتقولون إنّ "آتم" ما مات فی الميعاد، وتعلمون أنه خاف فيه قهر رب العباد. ففكّروا ألم يجِبْ أن تُرْعَى شريطة الإلهام، ويؤخَّر أجله إلى يوم يُنكِر كاللئام؟ وقد سمعتم أنه ما تألّى إذا دُعِیَ للإ قسام، وما ذهب مستغيثا إلى الحكّام، فانظروا أما تحقّقَ كذبه؟ أما بلغ الامر إلى الإفحام؟ إنّه زجّی الزمانَ فی صمتٍ وسكوت، وأتمّ الميعاد كمضطرب مبهوت، وألقى نفسه فی متاعب وشوائب، وتراءى مُنكسرًا كأنّه رأی نوائب، وما تفوّه بكلمة يخالف الإسلام، حتى أكمل الايام. فهذه القرائن تحكم ببداهةٍ أنه خشِی عظمة الإسلام بكمال خشية، و كان مِنْ قَبْل يُجادل

लिए न झुकी।

और अब लेखराम में जो निर्जीव बछड़ा था निशान प्रकट हुआ तो क्या तुम में कोई ऐसा व्यक्ति है जो आज़ादों की तरह उसे स्वीकार करे या तुम पीठ फेरोगे? और तुम कहते हो कि आथम मीआद के अन्दर नहीं मरा और तुम जानते हो कि वह ख़ुदा के कोप से डरा अत: सोच लो कि क्या आवश्यक न था कि इल्हामी शर्त का पास किया जाता और उसे उस समय तक छूट दी जाती कि इन्कार करे और तुम सुन चुके हो कि जब उसे क़सम के लिए बुलाया गया तो उसने क़सम न खाई और न नालिश की। अब विचार करो कि क्या उसका झूठ सिद्ध न हुआ क्या यह बात अकाट्य तर्क तक नहीं पहुंची। उसने भविष्यवाणी का समय ख़ामोशी में गुज़ारा और बेचैनी तथा भटकते फिरने में मीआद के समय को गुज़ारा और अपनी जान को भिन्न-भिन्न प्रकार के कष्टों में डाला और स्वयं को ऐसा दुर्दशाग्रस्त प्रकट किया कि जैसे वह कष्टों का मारा हुआ है और वह जीभ पर ऐसा एक भी वाक्य न लाया जो इस्लाम के विरुद्ध हो। यहां तक कि उसने भविष्यवाणी की मीआद को पूरा किया। तो ये समस्त प्रसंग स्पष्ट तौर पर निर्णय करते हैं कि वह इस्लाम की प्रतिष्ठा से अवश्य डरा और इससे पूर्व वह

المُسلمين، و يُخاصم كالموّذيّين، و أمّا بعد نبأ الإلهام، فامتنع من النزاع والخصام، وصار كقلمٍ ردئ، وسيف صدئ، وجَهِلَ أوصاف المَصاف و أخلاف الخِلاف، و كنتُ أعطيه أربعة آلاف، إذا قمت لإحلاف، فما تألّى، بل ولّى؛ فانظروا أهذه علامة الصادقين؟ ثم إذا انقضت أشهر الميعاد، فقسّى قلبه ورجع إلى الإنكار و العناد، فلذٰلك مَاتَ بَعْدَ ما أنكر و أبى، ولو أنكر فى الميعاد لمات فيها وفنَى. فلا شكّ أنّ هذا النبأ سوّد وجوه المنكرين، و أرغَمَ مَعاطِسَ المكذّبين، و إنّ فيه آيات للطالبين، و إنّه مكتوب فى كتابى "البراهين"، و إنه يوجد فى أخبار خاتم النبيين، فآمنوا به إن كنتم مؤمنين. ومن آياتى أنّ الاحرار نافسوا فى مُصافاتى، وآثروا لعن الخَلق لموالاتى،

मुसलमानों से बहस मुबाहसा किया करता था

और अत्याचारियों की तरह लड़ता था परन्तु उस भविष्यवाणी के बाद वह चुप हो गया और उसमें समस्त बहस-मुबाहसे छोड़ दिए और एक बेकार क़लम की तरह या एक ज़ंग लगी तलवार की तरह बन गया और लड़ाई की परिभाषा को भूल गया और विरोध के स्त्रोतों (स्तनों) को विस्मृत कर दिया और मैंने उसे क़सम खाने पर चार हज़ार रुपए देने का कहा तो उसने क़सम न खाई और मुंह फेर लिया। अत: देख क्या यह सच्चों की निशानियां हैं? फिर जब यह मीआद के महीने गुज़र गए तो उसका हृदय कठोर हो गया तो उसने इन्कार और वैर की ओर रुजू कर लिया तो वह इसीलिए मर गया कि उसने इन्कार करना आरंभ किया और यदि मीआद के अन्दर इन्कार करता तो मीआद के अन्दर ही मर जाता। अत: कुछ सन्देह नहीं कि इस भविष्यवाणी ने इन्कारियों के मुंह को काला कर दिया और उनकी नाक को मिट्टी के साथ रगड़ दिया और इसमें ढूंढने वालों के लिए निशान हैं। और यह भविष्यवाणी मेरी पुस्तक बराहीन अहमदिया में लिखी हुई है और ख़ातमुन्नबिय्यीन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीसों में पाई जाती है अत: ईमान लाओ यदि तुम ईमान ला सकते हो। और मेरे निशानों में से एक यह है कि शालीन लोगों ने मेरी दोस्ती में दिलचस्पी ली और मेरी दोस्ती के लिए लोगों

وتركوا أنفسهم لنفائس نكاتى، وصَبَوا إلى رؤيتى وجاء وا تحت راياتى، إنّ فى ذلك لآيات للمتدبّرين. ومن آياتى أن العدا رغبوا عن معارضتى، بعد ما رأوا عارضتى، ووَجَدوا كالبخيل القالى، بعد ما وجدوا عذوبة مقالى، و أَلِفوا بالحسد كاللئام، بعد ما أَلْفَوا دُرَرَ الكلام، إنّ فى ذلك لآيات للمتعمّقين. ومن آياتى أنى لبثتُ على ذلك عُمُرًا من الزمان، ولا يُمهَل مَن افترى على الله الديّان، إنّ فى ذلك لآيات للمتوسّمين. ومن آياتى أنّى أُعطيتُ عقيدةً يدرَأ عن الطالب كلَّ شبهة، ويكشف عن بيضة السرّ مُحَّ حقيقة، إنّ فى ذلك لآيات للمستبصرين. ومن آياتى أن الزمان نُظِمَ لى فى سِلك الرفاق، وأُنْشِئ المناسباتُ فى الانفس والآفاق، و كذلك أُرسِلتُ عند خفوق راية

की लानत को स्वीकार किया।

और अपने प्रियजनों को मेरे मआरिफ़ के लिए छोड़ा मुझे और देखने की ओर झुके और मेरे झण्डे के नीचे आ गए। इसमें सोच विचार करने वालों के लिए निशान हैं और मेरे समस्त निशानों में से एक यह है कि शत्रुओं ने मेरे मुक़ाबले से किनारा कर लिया इसके बाद कि मेरे कलाम की शक्ति को पाया और कंजूस शत्रुता रखने वाले की तरह क्रोध किया बाद इसके कि जब मेरे मधुर वर्णन को पाया। और कमीनों की तरह ही ईर्ष्या से प्रेम किया इसके बाद कि मेरे कलाम के मोती उन्हें मालूम हुए इसमें विचार करने वालों के लिए निशानियां हैं। और मेरे निशानों में से एक यह है कि मैं इस इल्हाम के दावे पर एक आयु से क़ायम हूं और मुफ्तरी को ख़ुदा तआला की ओर से छूट नहीं दी जाती। इसमें प्रतिभावान लोगों के लिए निशान हैं। और मेरे निशानों में से एक यह है कि मैं ऐसी आस्था दिया गया हूं कि जो अभिलाषी के प्रत्येक सन्देह का निवारण करती है और रहस्य के अण्डे में से सच्चाई की ज़र्दी प्रकट करती है इसमें देखने वालों के लिए निशान हैं। और मेरे निशानों में से एक यह है कि युग मेरे साथियों में संलग्न किया गया और लोगों की तथा सांसारिक समानताएं पैदा हो गईं और इसी प्रकार मैं उस समय भेजा गया कि जब असफलता का झण्डा लहरा रहा था इसमें प्रतिभावान लोगों के लिए निशानियां

الإخفاق، إنّ فی ذلك لآیات للمتفرّسین. و من آیاتی أن الله شحّذ سیف بیانی،
و أری جواھرہ بغِرارِ بُرھانی، إنّ فی ذلك لآیات للناظرین. و من آیاتی أن
الحقّ ما استسرّ عنی حینًا، و جُعِل قلبی له عَرِینًا، و جُعِلتُ له مُجدِّدًا مُبینًا، إنّ
فی ذٰلك لآیات للمتأمّلین. أیھا الناس.. قد جاء کم لطفُ ربّ العباد، و تعھَّدَ کم
فضله تعھُّد العِھاد، عند إمحال البلاد، فلا تردّوا نعم اللّٰه إن کنتم شاکرین.
أَأَنْتم تھدّون ما شاد، أَوْ تمنعون ما أراد؟ و قد رأیتم أنکم لم تستطیعوا أَنْ
تأتوا بکلامٍ منْ مثل کلامی، حتی سکتّم و صمتّم متندّمین من إفحامی.
و أشیع الکتب المملوّة بالنکات النُخَب، و لطائف النظم و بدائع النثر
و محاسن الأدب، فما کان جوابکم إلا أن قلتم إنھا من قوم آخرین. فانظروا

हैं और मेरे निशानों में से एक यह है कि ख़ुदा ने मेरे वर्णन की तलवार को तेज़ किया
और मेरे प्रमाण की तेज़ी के साथ उसके जौहर दिखाए निस्सन्देह इसमें देखने वालों के लिए निशान हैं और मेरी निशानियों में से एक यह है कि एक पल के लिए भी सच्चाई मुझ से छुपी नहीं और मेरा हृदय उसके ठहराव का स्थान बनाया गया और मैं उसके लिए ताज़ा करने वाला और खोलकर वर्णन करने वाला नियुक्त किया गया इसमें विचार करने वालों के लिए निशान हैं। हे लोगो! तुम्हारे पास ख़ुदा की मेहरबानी आई और उसकी कृपा ने तुम्हारी सुध ली जैसा कि समय की वर्षा दुर्भिक्ष के समय सहायता करती है। तो यदि तुम कृतज्ञ हो तो ख़ुदा की नेमतों को अस्वीकार मत करो। क्या तुम उसकी डाली हुई नींव को ध्वस्त कर दोगे या जो कुछ उसने इरादा किया उसे रोक दोगे और तुमने देख लिया कि तुम्हें शक्ति नहीं हुई कि तुम मेरे कलाम जैसा कलाम बना लाओ यहां तक कि तुम स्वयं शर्मिंदा होकर खामोश हो गए और निरुत्तर हो गए और वे पुस्तकें प्रकाशित की गईं जो चुने हुए नुक्तों के साथ भरी हुई थीं और गद्य तथा पद्य की उत्तम बातों से भरपूर थीं और साहित्य की विशेषताओं से भरी हुई थीं तो तुम्हारा इसके अतिरिक्त कोई उत्तर न था कि ये पुस्तकें औरों की बनाई हुई हैंतो देखो तुम किस प्रकार असमर्थ हो गए। फिर तुम्हारे दिल सच्चाई से फेर दिए गए

كيف عجزتم ثم صُرِفتْ قلوبكم عن الحق فصرتم قومًا عمين.

حتى إذا احتدّ منكم الحِجاج، وامتدّ اللَجاج، ونبَح النجفيّ والغزنويّ، وقالا إنه جاهل غويّ، كتبتُ رسالتى هذه لتكون حُجّة على المفترين، وليفتح الله بينى وبينكم وهو خير الفاتحين.

وقال الذى آذانى من جماعةِ عبد الجبّار، إن هذا دجّال وأكفر الكفّار، وجاهل لا يعلم العربيّة ولا شيئا من النكات والاسرار، وأعانه عليه قوم من العلماء المتبحّرين. وكذٰلك ظنَّ النجفيّ، فانظرْ كيف تشابهت قلوب المعتدين. وما أثبتَ أحدٌ منهم أنّهُم أُرضعوا ثَدْىَ الادب، أو أُعطوا من العلوم النخب، وما جاءونى بالدبيب ولا بالخبيب، بل تكلّموا كالنساء متسترّين. وما أنكروا بصحّة النيّة، بل كبخيل خاطِبِ الدنيا الدنيّة. ونبّههم

तो तुम एक अंधी क़ौम हो गए।

यहां तक कि जब तुम तेज़ी से लड़ाई झगड़ा करने लगे और तुम्हारी लड़ाई लम्बी हो गई और नजफ़ी तथा ग़ज़नवी ने डींगे मारी और कहा कि यह एक अज्ञान और गुमराह है तब मैंने यह पुस्तक लिखी ताकि इस इफ़्तिरा करने वालों पर प्रमाण हो और ताकि मुझ में और तुम में ख़ुदा तआला फै़सला कर दे और वह अच्छा फै़सला करने वाला है।

और अब्दुल जब्बार की जमाअत में से एक अत्याचारी ने कहा कि यह व्यक्ति दज्जाल और काफ़िरों में सबसे बड़ा काफ़िर है और एक जाहिल है जो अरबी नहीं जानता और न भेदों तथा रहस्यों का ज्ञान रखता है और इस पुस्तक के लिखने पर बड़े-बड़े उलेमा ने सहायता की है और इसी प्रकार नजफ़ी ने गुमान किया। अत: देख कि हद से निकलने वालों के दिल किस प्रकार समान हो गए और उनमें से किसी ने सिद्ध न किया कि वे अदब के पस्तान से दूध पिलाए गए हैं। और चुने हुए ज्ञान दिए गए हैं और मेरे पास न नर्म रफ्तार में आए और न तेज़ रफ्तार में अपितु स्त्रियों की तरह छुपी छुपी बातें कीं और सही नीयत से इन्कार नहीं किया अपितु उस कंजूस की तरह जो दुनिया को चाहने वाला हो और उनको ख़ुदा तआला ने होशियार किया तो होशियार नहीं हुए और निशानों ने उन को

الله فما تنبّهوا، وأيقظتهم الآيات فما استيقظوا. ألم يروا آية كبرىٰ،

إذ أهراقَ قاتلٌ دمًا وأولغَ فيه المُدَى؟ وكان المقتول "آرية" خبيثا ومن العدا. فأبكى الله مَن سخِر من الدّين وسبّ وهجا، وألقاه فى عذاب لا يتقضّى، ونارٍ لا يموت فيها ولا يحيٰى، وضيّع كل ما صنع وهدّم كل ما علا، إنّ فى ذلك لآيات لاولى النهٰى. وكان نبأ "آتم" يَحكِى السُها، بما خفِى من أعين العُمى وما تجلّى، فألقت هذه الإياةُ عليه رداءها، فأشرقا كشمس الضحى، وأضاءا عقول العاقلين وجذبا إلى الحق من أتى. وهذه آية عذراء، وشمس بيضاء، فليهتدِ من شاء، إنّ الله يُحِبّ التّوابين ويحبّ المتطهّرين. وإنها تشفى النفس، وتنفى اللَبْس، وتوضح المُعمَّى، وتكشف السر

जगाया तो वे नहीं जागे क्या उन्होंने एक बड़ा निशान देखा।

जब क़ातिल ने एक ख़ून बहाया और उसके अन्दर अपनी छुरी को घुसेड़ा और मक़तूल एक दुष्ट आर्य और शत्रुओं में से था। अत: ख़ुदा ने एक ऐसे व्यक्ति को रुलाया जो इस्लाम धर्म से ठट्ठा करता और गालियां निकालता था और उसे ऐसे अज़ाब में डाल दिया जिसका कभी अन्त नहीं और ऐसी अग्नि में झोंक दिया जिसमें न मरेगा न जीवित रहेगा और उसके समस्त कारोबार को नष्ट किया और उसकी हर बुलन्दी को ध्वस्त किया इसमें बुद्धिमानों के लिए निशान हैं। और आथम के बारे में जो भविष्यवाणी की गई थी वह गोपनीयता में सप्तऋषि मंडल के बीच के सितारों में से तीन में एक सबसे छोटा सितारा (सुध) के समान थी और अंधों की नज़र से गुप्त थी प्रकट न थी। अत: उस प्रकाश ने उस पर चादर डाल दी तो दोनों दोपहर के सूर्य के सामने चमक उठीं और बुद्धिमानों की अक़्लों को प्रकाशमान किया और आने वाले को सच की ओर आकर्षित कर लिया और यह एक निशान है और प्रकाशमान सूर्य है तो चाहिए कि हिदायत स्वीकार करे जो चाहे। ख़ुदा तौब: करने वालों और पवित्रता चाहने वालों से प्रेम करता है। और यह लेखराम के क़त्ल का निशान प्राण को सांत्वना देता है और सन्देह का निवारण करता है और रहस्य को खोलता है और भेद और गुप्त मामले

عن ساقه والغُمَّى، وتُتمّ الحجّة على المُجْرمِيْن. فيا حَسْرة علَى المخالفين! إنّهم يتركون أحكم الحاكمين. فكأنّ الله شرّقَ وهم غرّبوا، ودعا لجمع الثمار وهم احتطبوا، وأمر أن يؤتونی عَذْبًا فعذَّبوا، وما اجتنبوا الإيذى بل كادوا أن يُجنِّبوا، فردّ الله نيّاتهم عليهم فانقلبوا مخذولين.

ومنهم رجل من الغزنی يسمّونه عَبْد الحق، وإنه سبّ وشتَم ووثَب سفاهةً كالبقّ. وإنه فُوَيسقةٌ يُذعِر الاسودَ فی جُحره بالغقّ. وإنّ الخنّاس زقَّه فبالغَ فی الزقّ. وإنه كذّب آية الكسوف كما كُذِّبَ مِن قبل آيةُ القمر المنشق. وَإنّ الشيطان لقَّ عينَه فذهب ببصره باللقّ. وَمَا نَقَّ إلَّا كدجاجة فنذبحه بمُدَى الحق، ونُريه جزاء النقّ، فما ينجو منّا بالهرب والهقّ، ولا ينفعه كيد

की पिंडली दिखाता है और अपराधियों पर हुज्जत पूरी करता है तो अफ़सोस विरोधियों पर कि वे हाकिमों के हाकिम को छोड़ जाते हैं तो जैसे ख़ुदा पूरब की ओर गया और यह लोग पश्चिम की ओर। और उसने फूलों को इकट्ठा करने के लिए कहा और उन्होंने सूखी लकड़ियां एकत्र कीं और आदेश किया कि मुझे मीठा पानी दें तो उन्होंने अज़ाब दिया और दुख देने से न रुके अपितु करीब हुए कि पसलियां तोड़ डालें। अत: ख़ुदा ने उनकी नीयतें उन पर डाल दीं फिर अंजाम उनका असफलता थी।

और उनमें से एक ग़ज़नवी व्यक्ति है जिसे अब्दुल हक़ कहते हैं उसने गालियां दीं और मच्छर की तरह उछला और वह एक चूहा है शेरों को अपने सूराख़ में आवाज़ से डराता है और शैतान ने उसे भोजन दिया और पूरा भोजन दिया और उसने चन्द्र एवं सूर्य ग्रहण को झुठलाया जैसा कि काफ़िरों ने शक़्क़ुल क़मर (चांद के फटने) को और शैतान ने उसकी आंख पर मारा। अत: आंख निकाल दी और वह मुर्गी की तरह आवाज़ कर रहा है। अत: हम सच्चाई की छुरी से उसे ज़िब्ह कर देंगे और उसकी आवाज़ का बदला उसे चखाएंगे। हम से भागने के साथ मुक्ति नहीं पाएगा। और कोई मक्र उसे लाभ नहीं देगा और उसने अपनी वह पुस्तक जो गालियों और काफ़िर कहने से भरी हुई थी मेरी ओर

الكائدين. و إنّه أرسل إلىّ كتابه المملوّ من السبّ و التكفير، و خدع الناس بأنواع الدقارير، و ذكر فيه كتابى و هذَى، و قال أهذا من هذا؟ كلّا بل إنه من النُوكَى، و لا يكاد يُبِين. و خاطبنى و ادّعى كعارف الحقيقة، و قال إنك لست مؤلّف هذه الكتب الانيقة، و لا أبا عُذر تلك الرسائل الرشيقة، و النكات الدقيقة العميقة، بل استمليتَها مِن رجال هذه الصناعة، ثم عزوتَها إلىٰ نفسك لتُحمَد با لفضل و البراعة، و إنّا نعرف مبلغ علمك و ما كنّا غافلين.

و شابَهَه فى قوله شيخ طويل اللسان، كثير الهذيان، و زعم أنه من فضلاء الزمان، و أنه نَجَفىٌّ و من المتشيّعين. و إنه أرسل إلىّ مكتوبه فى العربية، ليخدع الناس بالكلم الملفّقة، و لتعظّمه قلوب العامة و ليستميل إليه زُمرَ

भेजी और भिन्न भिन्न प्रकार के झूठों से लोगों को धोखा दिया और मेरी पुस्तक की चर्चा की और बकवास की और कहा कि क्या ऐसी पुस्तक इस व्यक्ति की लिखी हुई है। कदापि नहीं यह तो जाहिल है और सुबोध बात कहने पर समर्थ नहीं। और मुझे सम्बोधित करके एक सच्चाई को पहचानने वाले की तरह दावा किया कि तू इन उत्तम पुस्तकों का लेखक नहीं है और न इन उत्तम पत्रिकाओं का अविष्कारक। और न इन गूढ़ रहस्य का निकालने वाला अपितु तूने इन पुस्तकों को इस कारीगरी के पुरुषों से लिखवाया है, फिर तूने उनको अपने नफ़्स की ओर सम्बब्द्ध कर दिया है ताकि महानता और बुद्धिमत्ता की पूर्णता के साथ प्रशंसा किया जाए और हम तेरे ज्ञान का अनुमान जानते हैं और हम लापरवाह नहीं हैं।

और एक शेख़ लम्बी ज़बान वाला बहुत अनर्थक बोलने वाला अब्दुल हक़ के समान है उसने गुमान किया है कि वह युग के प्रकाण्ड विद्वानों में से है और यह शेख़ नजफ़ी है और शिया है और उसने अरबी में मेरी ओर एक पत्र लिखा ताकि अपने तकल्लुफ़ से जोड़े हुए वाक्यों के साथ लोगों को धोखा दे ताकि जन-सामान्य के दिल उसकी बड़ाई करें और ताकि अनपढ़ों को अपनी ओर झुकाए और उसका कथन विद्वानों के कथन की एक जूठन था। और उनका वाक्य एक

الجاهلين. وما كان قوله إلا فُضلة قول الفضلاء ، وعَذِرةُ كلمتهم العذراء . فالعجب من جهله، إنه ما خاف إزراء القادحين، ووقف موقف مندمة، وما أرى الوجه كالمتندّمين. بل إنه مع ذالك بلّغ السبّ والشتم إلى الكمال، وما غادر سبًّا إلا كتبه كالسفيه الرزال، ولا يعلم ما الإيمان وما شِيَم المؤمنين.

ومثل قلبه المنقبض كمثل يومٍ جَوُّه مُزْمَهِرٌّ ودَجْنُه مُكفهِرٌّ، عارى الجِلدة، بادى الجُردة، شقىٌّ خسِر في الدُنيا والدّين يسُبّنى ويشتمنى بطغواه، ولا ينظر إلى مآل سابٍّ من "الآرية" ومأواه، وإنّ السعيد من اتّعظ بسواه. وأنّى له الرشد والهدىٰ، وإنه لا يعلم ما التُّقىٰ، ولا الأدب المُنتقَى، وإنه سلك سُبل الهالكين. لا يُبالى الحشر وأهواله،

कुंवारी स्त्री की गन्दगी थी तो उसकी अज्ञानता से आश्चर्य है कि वह दोष ढूंढने वालों के दोष निकालने से नहीं डरा और लज्जित होने के स्थान पर खड़ा हुआ। और लज्जितों के समान मुंह न दिखाया बल्कि उसने इसके बावजूद गाली-गलौज और चरम सीमा तक पहुंचाया और किसी गाली को न छोड़ा जिसे कमीने और नीच लोगों की तरह न लिखा और नहीं जानता कि ईमान क्या है और मोमिनों की आदतें क्या हैं और उसके संकीर्ण हृदय का उदाहरण ऐसा है जैसा कि वह दिन जो अत्यन्त ठण्डा हो और उसका दिल पर्तों में जमा हुआ हो नंगी खाल और खुले नंग वाला एक दुर्भाग्यशाली है जो धर्म और संसार में घाटा उठाने वाला है और अपने हद से गुज़र जाने के कारण मुझे गालियां देता है और नहीं देखता कि गाली देने वाले आर्य का क्या अंजाम हुआ और सौभाग्यशाली वह होता है जो दूसरे के हाल से नसीहत ग्रहण करता है। उसे संयम और हिदायत कहां प्राप्त हो। वह तो नहीं जानता कि संयम किसे कहते हैं। और न चुने हुए साहित्य का उसे ज्ञान है और वह मरने वालों के मार्ग पर चला है। क़यामत और उसके भयों की कुछ परवाह नहीं करता और न ख़ुदा के कोप और वबाल से डरता है। और जो कुछ उसने लिखा वह एक छल है या शिकार का फन्दा है। उसने इरादा किया

ولا قَهْرَ الله ونكاله، و كل ما كتب فليس إلّا ككيدٍ، أو أحبولة صيدٍ، أراد أن يفتن قلوب الجماعة، بافتنانه فى البراعة، وأرعفَ كفُّه اليَراعَ، ليُرِىَ السفهاء البَعاعَ، ولكنّه هتك أستاره، وأرى فى كل قدمٍ عثاره، وأفضى فى حديث يُفضِحه، ودخل نارًا تلفَحه، فمثله كمثل رجل شهّر خزيَه بدفّه، أو جدَع مارنَ أنفه بكفّه، فلحق بالملومين المخذولين. ومع ذلك سبّنى ليجير فُقدانَ فضلِ بيانه بفضول لسانه، وأمّا نحن فلا نتأسّف على ما قلَى وقال، ولا نُطيل فيه المقال، فإنه من قوم تعوّدوا السبّ والانتصاب للإزراء ات، وحسبوه لانفسهم من أعظم الكمالات، فنستكفى بالله الافتنانَ بمفترياته، ونعوذ به من نيّاته وجهلا ته، وما نعطف إلى السبّ

कि अपनी जमाअत के दिलों को रंग-बिरंगे कलाम के साथ मुग्ध करे और उसके हाथ ने क़लम को चलाया। ताकि मूर्खों को अपना सामान दिखाए परन्तु उसने अपने पर्दे फाड़ दिए और हर एक क़दम में अपनी ग़लती की और उस बात को शुरू किया जो उसे बदनाम करेगी और उस आग में दाखिल हुआ जो उसे जला देगी। अत: इसका उदाहरण उस व्यक्ति जैसा है जिसने अपनी बदनामी की और अपनी ढपली के साथ प्रसिद्ध किया और अपनी नाक को अपने हाथ के साथ काटा और मलामत सहने वाले और गुमनाम लोगों में जा मिला, और बावजूद इसके मुझे गालियां दीं ताकि अपनी व्यर्थ बातों से अपने उलझे हुए वर्णन को शरण दे परन्तु हम उसकी शत्रुता और कथन पर अफ़सोस नहीं करते और उसमें कुछ अधिक कहना चाहते हैं क्योंकि वह एक ऐसी क़ौम में से हैं जिनको गालियां देने और दोष ढूंढने की आदत है और इस आदत को उन्होंने अपनी ख़ूबी समझा हुआ है। अत: हम उनके फ़ित्ने में ग्रस्त होने से ख़ुदा को अपने लिए पर्याप्त समझते हैं और उसकी नीयतों से ख़ुदा की शरण ढूंढते हैं और हम गाली की ओर रुजू नहीं करते जैसा कि उसने वैर पूर्वक किया और हम अपना मामला ख़ुदा तआला को सौंपते हैं और वह सब हाकिमों का हाकिम

كماؔ عطف هو من العناد، ونُفوِّض أمرنا إلى ربّ العباد، وهو أحكم الحاكمين۔ و كيف يكذّبنى مع أنّه ما نقض براهينى، وما دوّن كتدوينى، وما تصدّيتُ لدعوى ما كان معه الدلائل، بل عرضتُ دلائل أزيدَ مما يسأل السائل، وما كان كلامى بالغيب بضنين۔

وقد ثبت عند جميع الحُكّام، وولاة الاحكام، أن الدعاوى تجب قبولها بعد الادلّة، كما تجب الاعياد بعد الاهلّة، و كنتُ ادّعيت أنّى أنا المسيح الموعود، والإمام المهدى المعهود، فأرى الله آياته على ذالك الادّعاء ، وسَكَّتَ وبَكَّتَ زُمرَ الاعداء ، وأرى آيةً تارةً فى زىّ الإيجاد، وأخرى فى صورة الإعدام والإفناد، وأعجزَ الاعداء مرّة بخوارق الاقوال، وأخرى أخزاهم بعجائب الافعال و أيّدنى ربّى فى كل موطن و مقام ، و ما بقِى دقيقة

है। और यह व्यक्ति क्योंकर झुठलाता है हालांकि उसने मेरे तर्कों का खण्डन नहीं किया और मेरे मुक़ाबले पर कुछ लिख नहीं सका।
और मैंने ऐसे दावे को प्रस्तुत नहीं किया जिसके साथ तर्क न हों अपितु मैंने अधिक से अधिक तर्क प्रस्तुत कर दिए हैं जो लोग पूछते हैं और मेरा क़लाम ग़ैब की बातें बताने में कंजूस नहीं है।

और समस्त अधिकारियों और शासकों के नज़दीक यह बात सिद्ध हो चुकी है कि तर्कों के बाद दावों को स्वीकार करना आवश्यक हो जाता है जैसा कि ईद के चांद के बाद ईद करना आवश्यक हो जाता है। और मैंने दावा किया था कि मैं मसीह मौऊद और महदी मौऊद हूं। अत: अल्लाह तआला ने इस दावे पर अपने ये निशान दिखाए और समस्त शत्रुओं को ख़ामोश और निरुत्तर किया और कभी निशान को अविष्कार के रूप में दिखाया और कभी समाप्त करने के रूप में प्रकट किया। और कभी कथनीय निशान के साथ विरोधियों को असमर्थ किया और कभी क्रियात्मक निशान के साथ उन को बदनाम किया और मेरे रब्ब ने प्रत्येक स्थान और मैदान में मेरी सहायता की और समझाने के अन्तिम प्रयास की कोई कमी शेष नहीं रही और ख़ुदा तआला की ओर से खूब टुकड़े-टुकड़े किए गए। फिर उनके

من تبکیت و إفحام، و مُزِّقوا کل ممزّق من اللہ مُخزی المفسدین۔ ثم قیّض قدر اللہ لنصبھم و وصبھم، أنھم طعنوا فی علمی و فخروا ببراعتھم و أدبھم، و کانوا علیھا مُصرّین، و مکروا و مکر اللہ و اللہ خیر الماکرین.

فواللہ ما فکّرتُ فی الإملاء والإنشاء ، وما کنتُ من الادباء والفصحاء ، وما احتاج یَراعی إلی من یُراعی کالرفقاء ، بل کنتُ لا أعلم ما البلاغة والبراعة، ولا أدری کیف تحصل ھذہ الصناعة. فبینما أنا فی حیرة من ھذہ الإزراء ، وقد تواترَ طعنھم کالسفھاء ، إذ صُبّ علی قلبی نورٌ من السّماء ، ونزل علیّ شیء کنزول الضیاء ، فصرتُ ذا مَقْوَل جریٍّ، وقولٍ سحبانیٍّ، فتبارك اللہ أحسن الخالقین. ولکن ما تسلّتْ بہ عمایات ھذہ العلماء ، وظنّوا أن رجلا أعاننی أو جمعًا من الفضلاء ، وأنھا ثمرة شجرة الآخرین.

दुर्भाग्य पर कारण ख़ुदा की इच्छा ने उन्हें इस ओर खींचा कि उन्होंने मेरे ज्ञान और योग्यता में कटाक्ष किया। और अपनी बलाग़त और साहित्य पर गर्व किया। इस पर आग्रह किया और उन्होंने मक्र किया और ख़ुदा ने भी मक्र किया और ख़ुदा सबसे उत्तम मक्र करने वाला है।

अत: ख़ुदा की क़सम मैंने इबारत और निबन्ध में कुछ विचार नहीं किया और मैं साहित्यकारों में से नहीं था और मेरी क़लम किसी सहायक की मोहताज नहीं हुई अपितु मैं नहीं जानता कि बलाग़त किसे कहते हैं और नहीं जानता था कि यह कारीगरी कैसे प्राप्त होती है तो इस हालत में कि मैं इस मीनमेख से आश्चर्य में था और उनका कटाक्ष मूर्खों के समान निरन्तरता तक पहुंच चुका था तो सहसा एक प्रकाश मेरे हृदय पर डाला गया और एक चीज़ प्रकाश की तरह उतरी। अत: मैं सहसा प्रवाह वाला मातृभाषी और सहबान वाइल हो गया। अत: मुबारक है वह ख़ुदा जो समस्त स्रष्टाओं से उत्तम है परन्तु इसके साथ इन उलेमा का अन्धापन दूर न हुआ और गुमान किया कि एक व्यक्ति ने मेरी सहायता की है या विद्वानों के एक वर्ग ने सहायता की है और वह सरसता औरों के वृक्ष का फल है> फिर उनको यह सूझी कि मुझ से आमने सामने

ثم بدا لهم أن يُعارضونى مُشافهين، فإذا قمتُ فكأنّهم كانوا من الميّتين.
والآن ما بقى فى كفّهم إلا الرفث والإيذاء،
و كذالك سبَّنى النجفىّ وما يدرى ما الحياء . ولكنّا لا ندفع السبّ بالسبّ،
وما كان لِحَمامٍ أن يُحجِر نفسه كالضبّ، أو كالتنّين. وما نشكوه علٰى ما فعل،
ولا نتأسّف علٰى ما افتعل، فإنهم قوم ما عُصم من ألسنهم خاتم النبيّين، بل
الله الذى هو أحكم الحاكمين، ولا خلفاء نبى الله ولا أمّهات المؤمنين.

ألا ترى كيف ظنّوا ظنّ السوء فى حضرة أصدق الصادقين، و كذّبوا نبأ
"الاستخلاف" وقالوا إنّ عليًّا من المظلومين، فأرادوا هدم ما شاد الرحمٰن،
و كفروا بما جاء به القرآن، وما هذا إلا ظلم مبين. وقالوا إنّ عليًّا أنفد عمره

मुक़ाबला करें तो जब में खड़ा हुआ तो जैसे वह सब मुर्दा थे और अब उनके हाथ में गालियां और कष्ट देने के अतिरिक्त कुछ शेष न रहा

और इसी प्रकार नजफ़ी ने मुझे गालियां दीं और नहीं जानता कि शर्म क्या चीज़ है हम गाली का गाली से उत्तर नहीं देते और कबूतर की शान में यह शामिल नहीं कि उस बिल में दाख़िल हो जिसमें सूसमार दाख़िल होता है या सांप। और हम इस व्यक्ति का उसके काम पर कुछ गिला नहीं करते और न उसके इल्ज़ाम पर अफ़सोस करते हैं क्योंकि ये वे लोग हैं जो उनकी जीभ से ख़ातमुल अंबिया सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बच नहीं सके अपितु वह ख़ुदा भी जो समस्त हाकिमों का हाकिम है और न रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ख़लीफ़े उनकी जीभ से बचे और न आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पत्नियां जो मोमिनों की मांएं थीं

क्या तू नहीं देखता कि इन लोगों ने हज़रत मुहम्मद सल्लाहो अलैहि वसल्लम समस्त सत्यनिष्ठों में सर्वाधिक सच्चे हज़रत मुहम्मद सल्लाहो अलैहि वसल्लम पर किस प्रकार कुधारण की और ख़िलाफ़त बनाने की भविष्यवाणी को झुठलाया और कहा कि अली अत्याचार पीड़ित है अत: इन लोगों ने उस इमारत को गिराना चाहा जिसे ख़ुदा ने बनाया और क़ुर्आनी ख़बरों को झुठलाया और यह स्पष्ट अन्याय है और उन लोगों ने

مُبتلًى بلَقْوَةِ النفاق، وما خُلِقَ فى طينته جرأةُ الصدق وما تفوّقَ دَرَّ إخلاصِ الاخلاق، وإذا استُخلفَ الكفّارُ فما أبٰى، بل أطاعهم وعقد لهم مع رفقته الحُبا. أَمَرَ أمرُ الإسلام فآثرَ الإنصات، وأُمِّرَ الفُسّاق فمعهم أكل و بات، وما ذمّهم بل أنشد فى حمدهم الابيات، و كان هذا خُلقه حتى مات، أهذا هو أسدُ المتشيّعين؟

وقالوا إنه عارضَ أُمَّه الصدّيقةَ، وما بالى الشريعة ولا الطريقة، ولم يكن بَرًّا بوالدته ولا تقيًّا، بل أعقَّ وصار جبّارًا شقيًّا۔ آثرَ النفاق ولم يصبر على ضرّ ومسغبة، واتّبعَ النفس وترَك التُّقى كأرض مُعطّلة. أسرَّ الغِلَّ ولكن ما نظر بعينٍ غَضْبَى، واختار النفاق فى كل قدم وحابَى،

कहा कि अली जीवन पर्यन्त मुनाफ़क़त (दोगलापन) में ग्रस्त रहा और उसकी प्रकृति में सच की हिम्मत पैदा नहीं की गई थी और उसने बाह्य एवं आंतरिक को एक बनाने का दूध नहीं पिया था जब काफ़िरों को ख़िलाफ़त मिली तो उसने इन्कार न किया बल्कि आज्ञापालन किया और पीठ तथा पिंडली को अपने साथियों सहित उनके लिए बांधा। इस्लाम का मामला कठिन हो गया। अत: उसने खामोशी ग्रहण की और दुराचारी लोग अमीर बनाए गए तो उसने उनके साथ खाया और रात भर ठहरा और उन्हें बुरा न कहा और उनकी प्रशंसा में शेर बनाए और यही उसका आचरण था यहां तक कि मर गया क्या यही शीयों का शेर है?

और कहते हैं कि उसने अपनी मां सिद्दीक़ा का मुक़ाबला किया और न शरीअत की कुछ परवाह की न आत्मशुद्धि की और अपनी मां से नेकी करने वाला नहीं था अपितु बहिष्कृत, जब्र करने वाला निष्ठुर था, दुराचार को ग्रहण किया और कठोरता और भूख पर सब्र न कर सका और नफ़्स का अनुकरण किया और संयम को खाली भूमि की तरह छोड़ दिया और वैर को गुप्त रखा परन्तु क्रोधातुर आंख से न देखा और हर क़दम में दुराचार को ग्रहण किया तथा विशेष किया जिसने क्षमा के साथ उपकार किया उसी को सज्दा कर दिया यद्यपि वह धर्म और संयम का शत्रु हो, और जब कोई सांसारिक माल उस पर प्रस्तुत किया गया तो

سجد لكل مَن تبرّعَ باللُهَى، ولو كان عدوَّ الدين والتُّقى، وإذا عُرِض عليه حُطامٌ فقال لنفسه: ها. وأثنى على الكافرين طمعًا فى المَوات، لا خوفا من عقوبات المُوات، وصلّى خلفهم للصِّلات، لا لبركات الصَّلاة. اتّخذَ النفاق شِرْعة، والاقتباس منه نُجْعة، وصرف الله عنه المعارف، ولو كان زُمَرٌ مِن مَعارف. فما بقى معه من سَروات الصحابة ولا سرايا الملّة، حتى رجع مضطرًّا ومخذولًا إلىٰ باب الصدّيق، وكان يعلم أنه كالزنديق لكن البطن ألجأه إليه، وما وجد حطبَ تَنُّورِ المَعِدة إلا لديه. وإنّ صاحِبَه اغتال بعضَ ولده، فما امتنع من التردد إليه، وفجَعه بالفَدَك فما غارَ عليه، بل كان علىٰ بابه كالمعتكفين. وتواترَ عليه جور الشيخَين، حتى جرت عبرة العينَين كالعينَين، فما انتهى من الرجوع إلى هذين الكافرَين، بل أبدى

अपने नफ़्स को कहा की ले ले और भूमि को प्राप्त करने के लिए काफ़िरों की प्रशंसा की न इस विचार से कि उनके विरोध से मृत्यु की आशंका है और उनके इनाम के लिए उनके पीछे नमाज़ पढ़ता रहा न कि नमाज़ की बरकतों के लिए दुराचार का तरीका ग्रहण किया और इस कमाई को अपना भोजन बनाया। और ख़ुदा ने उससे लोगों के मुंह फेर दिए और यद्यपि वे परिचित थे तो उसके साथ सहाबा के युवाओं में से कोई न रहा और न इस्लामी सेना में से कोई उसका साथी हुआ यहां तक कि बेचैन और विफल होकर अबू बक्र सिद्दीक़ के दरवाज़े पर आया। और जानता था कि यह नास्तिकों की तरह है परन्तु पेट ने उसे उसकी ओर जाने के लिए बेचैन कर दिया और उसने अपने पेट के तन्दूर का ईंधन उसी के पास पाया और उमर रज़ि ने उसकी कुछ सन्तान को क़त्ल कर दिया परन्तु वह फिर भी उसकी ओर जाने से न रुका और अबू बक्र ने फ़िदक के मामले में उसको दर्द पहुंचाया परन्तु फिर भी उसे ग़ैरत न आई अपितु अबू बक्र के दरवाज़े पर ऐतकाफ़ करने वालों की तरह पड़ा रहा और उस पर दोनों शेख़ों का निरन्तर ज़ुल्म हुआ यहां तक कि आंखों से आंसुओं के झरने जारी हुए परन्तु वह इन काफ़िरों के पास जाने से न रुका बल्कि वैर और झूठ से आज्ञापालन प्रकट किया।

الإطاعة بالنفاق والمَين۔

واشتدّ عَلَيْه غصبهم ونهبهم حتى صفَرت الراحة، وفُقدت الراحة، فما ترك لُقيّاهم، وما كره رَيّاهم، بل كان يستمرّ على بابهم، ويستمرى فُضْلةَ أنيابهم، وَما باعدَهم كالمُستنكفين، بل كان يُخْلِقُ لهم ديباجته، ويُعرِض عليهم حاجته، ويدور على أبوابهم كالسّائلين الملحفين وكان عليه أن يترك المدينة وأهلها الكافرين المرتدّين، ولو كانوا من المترَفين والمخصِبين، بل كان من الواجب أن يقتعد مَهْرِيًا، ويعتقل سَمْهَرِيًا، ويُهاجر من أرضٍ إلى أرض، ويطلب رفعًا مِن خفض، ويُنادى بين الناس أن الصحابة ارتدوا كلهم أجمعون، ثم إذا أحسّ الإيمان من قوم فكان عليه أن يُلقى بأرضهم جِرانه، ويتخذهم جيرانه، ويجعلهم لنفسه معاونين، ويقتل

और उन्होंने लूटमार करके उसे तबाह किया यहां तक कि हथेली खाली हो गई और आराम जाता रहा परन्तु उसने उनसे मिलना न छोड़ा और उनकी सुगंध से विमुख न हुआ अपितु अनिवार्य तौर पर उपस्थित होता रहा। और उनके दांतों की बची हुई झूठन को हज़्म करता रहा और शर्म रखने वालों के समान उनसे पृथक न हुआ अपितु उनकी सेवा में अपने सम्मान को बट्टा लगाता था और अपनी ज़रूरत उनके सामने प्रस्तुत करता था और उनके दरवाज़ों पर मांगने वालों के समान फिरता था और उसको चाहिए था कि मदीना और उसके निवासियों को जो काफ़िर और मुर्तद थे छोड़ देता यद्यपि वे लोग समृद्धिशाली होते अपितु आवश्यक तो यह था कि एक सुदृढ़ ऊंट पर सवार हो जाता और भाला लटका लेता और एक ज़मीन से दूसरी ज़मीन में चला जाता और नीचाई के बाद ऊंचाई मांगता और लोगों में ऊंचे स्वर से कहता के सहाबा सब मुर्तद हो गए फिर जब किसी कौम में ईमान को पाता तो उचित था उस ज़मीन में रहन सहन करता और उनको अपना पड़ोसी और सहयोगी बनाता और मदीना के समस्त लोगों को क़त्ल कर डालता यदि वे मुसलमान नहीं थे फिर उसे नींद कैसे आई और वह देखता था कि जो इस्लाम का दिन था उसका चेहरा अंधकारमय हो गया और ईमान तथा

أهلَ المدينة كلهم إن لم يكونوا مسلمين. فكيف تمضمضت مُقلته بنومها، وكان يرى الملّة قد اكفهرّ وجه يومها، وأمحلتْ بلاد الإيمان والمؤمنين.

لِمَ لم يُهاجر ولم يلق نفسه فی أرجاء آخرين، وكان أُعطِیَ منطق البلاغة، وكان يُزيِّن الكلمَ ويلوّنها كالدباغة، فما نزل عليه لَمْ يستعمل فی استمالة الناس صناعته، وما أرى فی الإصباء براعته، بل تمائل كل التمائل علی النفاق والتقيّة، وحسبه للعدا كالرقية؟ أهذا فعلُ أسدِ الله؟ كلّا بل هو افتراؤكم يا معشر الكذّابين. إنه كان حاز من الفضائل مغنمًا، وكان بقوى الإيمان تَوْأمًا، فما اختار نفاقًا أينما انبعث، وما نافق فی كل ما فعل ونفث، وما كان من المرائين. فلما نضنضتم فی شأنه نضنضة الصلّ، وحملقتم إليه حملقة البازی المطلّ، مع دعاوی الحبّ والمصافاة،

मोमिनों के देश पर दुर्भिक्ष का प्रभुत्व हो गया। क्यों हिजरत न की और क्यों अपने नफ़्स को दूसरों के किनारों में न डाल दिया और उसे भाषा की सुबोधता दी गई थी और वाक्यों को ख़ूब सजाता था और रंगीन करता था जैसा कि चमड़े को रंगा जाता है तो उस पर यह बला क्या उतरी कि उसने लोगों को अपनी ओर खींचने में सरसता और सुबोधता से काम न लिया और हृदयों को अपनी ओर फेरने में अपने वर्णन की माधुर्यता को न दिखाया अपितु अहंकार और तक़िय्य: की ओर झुक गया और निफ़ाक़ (अहंकार) को शत्रुओं के लिए जादू के समान समझा। क्या यह कार्य ख़ुदा के शेर का है। कदापि नहीं। अपितु यह तो हे झूठों के गिरोह तुम्हारा इफ़्तिरा है अली[रज़ि] तो ख़ूबियों का संग्रहीता था और ईमानी शक्तियों के साथ जुड़वां था उसने किसी स्थान पर दोगलापन ग्रहण नहीं किया और अपने कथन एवं कर्म में कपटपूर्ण तरीका प्रयोग नहीं किया और दिखावा करने वालों में से न था। अत: जब तुम उसकी प्रतिष्ठा में ऐसी जीभ हिलाते हो जैसा कि सांप और उसकी ओर इस प्रकार देखते हो जैसा कि बाज़ जो शिकार पर गिरता है और यह सब कुछ उस प्रेम के बावजूद है जिसका तुम्हें दावा है तो फिर तुम उसके ग़ैर में कुछ कोताही कैसे कर सकते हो क्योंकि वहां तो शत्रुता की भावनाएं भी हैं और इसी प्रकार तुमने ख़ातमुल अंबिया सल्लल्लाहु अलैहि

فكيف تقصّرون فى غيره مع جذبات المعاداة؟ و كذٰ لك استحقرتم خاتم الانبياء ، وقلتم دُفن معه الكافران من الاشقياء ، يمينا و شمالا كالإخوان والابناء. فانظروا إلى توهينكم يا معشر المجترئين. ونحن نستفسر منك أيها النجفىّ الضال، فأجب متحملا ولا يكبر عليك السؤال.

أترضى بأن تُدفَن أُمُّك المتوفّاة بين البغيّتين الزانيتين الميّتين؟ أو يُقبَر أبوك فى قبر المجذومَين الفاسقين؟ فإن كرهتَ فكيف رضيتَ بأن يُدفَن سيّد الكونَين بين جنبى الكافرَين الملعونَين؟ ولا يعصمه فضل اللّٰه من جوار الجارَين الجائرَين الخبيثَين والكفر أكبر من الزنا وأشنع عند ذوى العينين. ففكّرْ كيف تحقّرون خاتم النبيين، وتسوّغون له مكروهات لا تسوّغون لانفسكم ولا بنات وأمّهات ولا بنين.

वसल्लम का तिरस्कार किया और कहा कि उसके साथ दो काफ़िर दाएं-बाएं भाइयों और बेटों की तरह दफ़्न किए गए अत: तुम्हें गुस्ताख़ लोगों के गिरोह उस अपमान की ओर देखो जो तुम कर रहे हो। और हे गुमराह नजफ़ी हम तुझसे एक बात पूछते हैं तो ठहर कर उत्तर दे और तुझ पर प्रश्न भारी न हो क्या तू इस बात पर राज़ी हो सकता है कि तेरी मां दो व्यभिचारिणी औरतों के साथ दफ़्न कर दी जाए या तेरा बाप दो कोढ़ी व्यभिचारियों के बीच गाड़ दिया जाए। अत: यदि तू इस बात से घृणा करता है तो तू किस प्रकार राज़ी हो गया कि दोनों लोकों के सरदार को दो लानती काफ़िरों के बीच दफ़्न कर दिया जाए और ख़ुदा तआला का फज़्ल (कृपा) उसको दो ज़ालिम और अपवित्रों के पड़ोस से न बचाए और कुफ्र व्यभिचार से बहुत बड़ा और आंखों के नज़दीक अधिक निकृष्ट है। अत: सोच कि तुम लोग क्योंकर ख़ातमुन्नबिय्यीन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अपमान कर रहे हो और वे घृणित बातें उसके लिए वैध रखते हो जो अपने बेटों मांओं और बेटियों के लिए वैध नहीं रखते।

हे झूठ और असत्य की सहायता करने वालो! ख़ुदा तुम्हें तबाह करे अपितु रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पड़ोस में दो ऐसे आदमी दफ़्न किए

تبًّا لکم ولما تعتقدون یا حُماةَ الفسق والمَیْن۔ بل دُفن بجوار رسول اللّٰہ رجلان کانا صالحَین مطهّرَین مقرّبَین طیّبَین، وجعلهما اللّٰہ رفقاء رسوله فی الحیاة وبعد الحَیْن، فالرفاقة هذه الرفاقة وقلَّ نظیره فی الثقلَین۔ فطوبی لهما أنهما معه عاشا، وفی مدینته وفی مأواه استُخلِفا، وفی حُجر روضته دُفِنا، ومِن جنّة مزاره أُدْنِیا، ومعه یُبعثان فی یوم الدین۔ وانظرْ إلٰی علیّ أنه إذا أُعطِیَ منصب الخلافة، فما بعَّد تربةَ هٰذَین الإمامَیْن مِن روضة خیر البریّة. فإن کان یزعم أنهما لیسا مؤمنَیْن طیّبَیْن، فکیف ترَکهما ولم یُنـزِّه قبر رسول اللّٰہ عن هٰذین القبرین؟ فالذنب کلّ الذنب علی عنق ابن أبی طالب، کأنه لَمْ یبال عِرض رسول اللّٰہ مِن نفاق غالب، وما أری الصدق کالمخلصین۔ أهذا أسد اللّٰہ وضرغام الدین؟ أهذا هو الذی یُحسَب

गए हैं जो नेक थे पवित्र थे सानिध्य प्राप्त थे और ख़ुदा ने उनको जीवन में तथा मरणोपरान्त अपने रसूल के साथी ठहराया। अत: मैत्री यही मैत्री है जो अन्त तक निभी। इसका उदाहरण कम पाओगे। अत: उन को मुबारक हो जिन्होंने उनके साथ जीवन व्यतीत किया और उसके शहर तथा उसके स्थान में ख़लीफ़े नियुक्त किए गए और उसके रौज़: (मक़बर:) में दफ़्न किए गए और उसके मज़ार के स्वर्ग से करीब किए गए और क़यामत को उसके साथ उठेंगे और अली रज़ि की ओर दृष्टि डाल कि जब उसको ख़िलाफ़त का पद दिया गया। तो उसने इन दोनों इमामों की कब्र को आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रौज़: से पृथक न किया। अत: यदि यह गुमान करता था कि वे दोनों पवित्र दिल मोमिन नहीं हैं तो क्योंकर उनकी क़ब्रों को आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की कब्र के साथ शामिल रहने दिया। तो समस्त गुनाह अली रज़ि की गर्दन पर है जैसे उसने अहंकार के कारण आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सम्मान की कुछ परवाह न की और श्रद्धा न दिखाई क्या यही ख़ुदा का शेर और असदुल्लाह है। क्या यह वही व्यक्ति है जो बड़े सयंमियों में से समझा गया है?

من أكابر المتّقين؟

فاعلموا أن تُقاةَ عليّ لا تثبت إلّا بعد تقاة الصدّيق، ففكِّرْ ولا تعتدِ كالزنديق، ولا تُلق بأيديك إلى حُفرة الهالكين. وإنكم تحبّون أن تُدفَنوا فى أرض الكربلاء ، وتظنّون أنكم تُغفَرون بمجاورة الاتقياء ، فما ظنّكم بالسعيدَيْن الذين دُفِنا إلى جنبَيْ نَبِيِّهِ القدر خاتم النبيين وإمام المتقين. وسيّد الشافعين؟ ويل لكم لا تتفكّرون كالخاشعين، ولا يسفر عنكم زحام التعصّبات، ولا تُعطَون حسن التوفيقات، ولا تُمعِنون كالمستبصرين. وكيف نشكوكم على سبّكم وإنكم تلعنون الصحابة كلّهم إلّا قليلا كالمعدومين،

وتلعنون أزواج رسول الله أمّهات المؤمنين، وتحسبون كتاب الله

अत: जान लो कि अली रज़ि का तक़्वा (संयम) तब सिद्ध होता है कि अबू बक्र सिद्दीक का तक़्वा सिद्ध हो। तो सोचो और एक नास्तिक की तरह हद से बाहर मत निकलो और अपने हाथों से मौत के गढ़े में मत पड़ो और तुम चाहते हो कि तुम कर्बला की मिट्टी में दफ़्न किए जाओ और गुमान करते हो कि तुम मुत्तक़ियों (सयंमियों)के पड़ोस से क्षमा कर दिये जाओगे। तो उन दो नेकों के बारे में तुम्हारा क्या गुमान है जो आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पहलू में दफ़्न किए गए जो इमामुल मुत्तक़ीन इमामुश्शाफ़िईन और ख़ातमुन्नबिय्यीन है। तुम पर अफ़सोस कि तुम विनय एवं ग़ुरबत के साथ विचार नहीं करते और तुमसे पक्षपात की भीड़ दूर नहीं होती और तुम्हें नेक कामों की सामर्थ्य नहीं मिलती और तुम बुद्धिमान की भांति नहीं सोचते। और हम तुम्हारी गालियों की शिकायत क्या करें क्योंकि तुम समस्त सहाबा को गालियां देते हो परन्तु कुछ कम।

और तुम आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पत्नियों उम्महातुल मोमिनीन को लानत से याद करते हो और गुमान करते हो कि ख़ुदा की किताब में कुछ न्यूनधिकता की गई है और कहते हो कि वह बयाज़े उस्मान है और ख़ुदा

كلاما زِيّدَ عليه ونقص، وتقولون إنه بياض عثمان وأنه ليس من ربّ العالمين. فلعَنكم الله بفسقكم وصرتم قومًا عمين. وحسبتم الإسلام كواد غير ذى زرع خاليا من رجال الله المقرّبين. فأىُّ عِرض بقى مِن أيديكم يا معشر المُسرفين؟

وأَرَيتُم تصوير علىّ كأنه أجبن الناس، وأطوع للخنّاس. اعتلق بأهداب الكافرين اعتلاق الحرباء بالاعواد، وآثر نار النفاق ليفيض عليه عُباب المراد. أخزى نفسه بتنافى قوله وفعله، ورضى بشىء لم يكن من أهله. وحمد الكافرين فى المحافل، وأثنى عليهم فى المجامع والقوافل، وحضر جنابهم وما ترك الطمع، حتى انزوى التأميل وانقمع، فما آووا لِمَفاقره، وما

की ओर से नहीं है। इसलिए ख़ुदा ने तुम्हारे पाप के कारण तुम पर लानत की और तुम अंधे हो गए और तुम ने इस्लाम को ऐसा समझ लिया जैसा कि एक बियाबान जिसकी भूमि खुश्क और खेती से खाली है अर्थात ख़ुदा के सानिध्य प्राप्त लोगों से रिक्त है तो कौन सा सम्मान तुम्हारे हाथों से शेष रहा है हे सीमा से निकलने वालो?

और तुमने अली की तस्वीर ऐसी प्रकट की कि जैसे वह सर्वाधिक कायर है और नऊज़ुबिल्लाह शैतान का अनुयायी है उसने काफ़िरों के दामन को ऐसा पकड़ा और उनसे ऐसा लटका जैसा कि सूर्य उपासक शाखाओं के साथ और कपट की अग्नि उसने ग्रहण की ताकि उस पर मनोकामना का बहुत सा पानी डाला जाए। अपने कथन और कर्म के विरोधाभास से स्वयं को बदनाम किया और उस चीज़ पर राज़ी हो गया जिसका वह पात्र नहीं था। और उसने महफ़िल में काफ़िरों की प्रशंसा की और जमावड़ों एवं काफ़िलों में उनका यशोगान किया और उनके सामने उपस्थित हुआ तथा लालच को न छोड़ा यहां तक कि आशा गुम हो गई और उसका मलियामेट हो गया तो उन्होंने उसकी भिन्न-भिन्न प्रकार की दरिद्रता पर दया न की और उन प्रशंसाओं के साथ खुश हुए जो उसके कलाम के वाक्यों में भरी हुई थी उन्होंने उसका फ़िदक़ का बाग़

فرحوا بمحامد أُترعتْ فی فقره، بل اغتصبوا حديقة فَدَكِه، وقاموا لفتكِه، وما أبرزوا له دينارًا، ليُطعِم بطنًا أمّارًا، وما كانوا راحمين. وما نزلت عليه من السماء مائدة، وما ظهرت من الخَلق فائدة، ودِيسَ تحت أقدام الجائرين. وكان لم يزل يدعو ويفتكر، ويصوغ ويكسر، ولم يكن من الفائزين.

إلى أن انقطعت الحِيَل وركد النسيم، وحصحص التسليم، فخرَّ تقيةً على بابهم، وطلب القوة من جنابهم، وهم كانوا مستكبرين. وغُلّقتْ عليه أبواب إجابة الدعاء، وسُدّتْ طرق الحيل والاهتداء. فانظر أهذه علامات عباد الله المؤيَّدين، وأمارات الصادقين المقبولين، وآثار المخلصين المتوكّلين؟ ثم انظرْ كيف حقّرتم شأن المرتضى الذى كان من المحبوبين الموفّقين؟

وأمّا ما طلبتَ منّی آية من الآيات، فانظُرْ كيف أراك الله أجلَّ الكرامات،

छीन लिया और उसके क़त्ल करने के लिए खड़े हो गए और उसे एक मुहर न दी ताकि अपने पेट के शासक को भोजन देता। और दया करने वाले न थे और उस पर आकाश से कोई दस्तरख़्वान न उतरा और न सृष्टि से कुछ लाभ हुआ और ज़ालिमों के क़दमों के नीचे कुचला गया और हमेशा दुआ करता था और सोचता था और सुनार का काम करता था और दौड़ता था और सफल नहीं होता था।

यहां तक कि समस्त यत्न समाप्त हो गए और वायु स्थिर हो गई और सर झुकाना पड़ा तो उनके दरवाज़े पर तक़िय: के तौर पर गिर पड़ा और उनके पास से शक्ति की मांग की और वे अहंकारी थे और उस पर दुआ के दरवाज़े बन्द किए गए और यत्न तथा हिदायत पाने का मार्ग बन्द किया गया। अत: देख कि क्या ये उन लोगों की निशानियां हैं जो ख़ुदा से सहायता प्राप्त होते हैं और क्या यह सच्चे और मान्य लोगों के लक्षण हैं? और निष्कपट लोगों तथा ख़ुदा पर भरोसा करने वालों के आसार हैं फिर देख कि तुम लोगों ने किस प्रकार मुर्तज़ा अली का तिरस्कार किया है वह अली जो प्रियजनों और सामर्थ्य प्राप्त लोगों में से था।

परन्तु तू ने जो मुझसे कोई निशान मांगा है तो देख कि ख़ुदा ने तुझे कैसा महान

وهو أنی کنتُ دعوت علیٰ رجل مفسد مُغْوی کالشیطان، وتضرّعتُ فی الحضرۃ لیذیقه جزاء العدوان، فأخبرنی ربّی أنه سیُقتَل و یُبعَّد من الإخوان، و کان اسمه " لیکھرام" و کان من البراهمة، و کان معتدیا فی السبّ والشتم وجاوز الحد فی الخباثة. فلما دعوتُ علیه وتضرّعتُ فی حضرۃ الباری، وأقبلت کل الإقبال علی جبّاری، سُمِع دعائی فی الحضرۃ، ومَنّ علیّ ربّی بالرحمة والنصرۃ، وبشّرنی ربی بأنه یموت فی ستّ سنة، فی یوم دنا من یوم العید بلا تفاوۃ، وأومأ إلی لیلةِ یومِ الاحد، وإلی أنه یُقتَل بحکم الربّ الصمد، ولا یموت بمرضة، ویموت بقتلٍ مهیب مع حسرۃ، لیکون آیة للطالبین. فلما انقضٰی من المیعاد قریبًا من خمسة أعوام، واطمأن الهالك وزعم أن النبأ کان کأوهام، نزل أمر اللّٰه علیه وأتی بفتح مبین. ففرحتُ

निशान दिखाया है और वह यह है कि मैंने एक उपद्रवी के लिए जो शैतान की तरह बहकाने वाला था बद-दुआ की थी। और ख़ुदा के आगे मैं गिड़गिड़ाया ताकि उसे ज़ुल्म का स्वाद चखाए तो मेरे रब्ब ने मुझे सूचना दी कि वह क़त्ल किया जाएगा और अपने भाइयों से दूर डाल दिया जाएगा और उसका नाम लेखराम था और ब्राह्मणों में से था और गाली देने में हद से बढ़ गया था तो जब मैंने उस पर बद-दुआ की और ख़ुदा के आगे गिड़गिड़ाया।

और पूर्ण ध्यान के साथ ख़ुदा की ओर ध्यान किया तो ख़ुदा के आगे मेरी दुआ सुनी गई और ख़ुदा ने रहमत तथा सहायता के साथ दुआ पर उपकार किया और मेरे ख़ुदा ने मुझे खुशख़बरी दी कि वह छः वर्ष के अन्दर मर जाएगा और उस दिन मरेगा जो ईद के बाद का दिन होगा और रविवार की रात का संकेत किया और यह कि ख़ुदा तआला के आदेश से वह क़त्ल किया जाएगा और भयंकर क़त्ल के साथ मरेगा और हसरत के साथ तथा कोई रोग नहीं होगा ताकि अभिलाषियों के लिए निशान हो और जब मीआद लगभग पांच वर्ष गुज़र गई और मरने वाला संतुष्ट हो गया कि भविष्यवाणी एक भ्रम था ख़ुदा का आदेश उस पर उतरा और महान विजय प्रकट हुई तो मैं ऐसा प्रसन्न हुआ जैसा कि एक क़ैदी

فرحةَ المطلَق من الاسار، وهزّةَ الناجی من حفرة التبار. وقبل أن یأتینی أحد بفصِّ خبر وفاته، بشّرنی ربی بمماته، و کنتُ أفکّر فی هذه البشارات، فإذا عبد اللّٰہ جاء بالتبشیرات، وحصحص الحق وزهق الباطل وقُضِیَ الامر من ربّ الکائنات، وفرح المؤمنون کما وُعد من قبل واسودّ وجوه أهل المعادات،

وظهر أمر اللّٰہ وهم کانوا کارهین. و کان هذا الرجل وقاحا طویل اللسان، کثیر السب والهذیان، طلب منی آیة ملحِّحًا فی طلبه، وشرط لی أن أصرّح المیعاد فی عُلَبِه، وأُصرّح یوم موته، مع إظهار شهر فوته، وأبیّن کیفیة وفاته، ووقت مماته، و کتب کلها ثم طالب کالمُصرّین. فلبّیتُه ممتطیا شملة عنایة الرحمٰن، ومنتضیا سیف قهر الدیّان. و کنت لفرط

छूटकर प्रसन्न होता है और जैसा कि एक व्यक्ति मौत के गड्ढे से मुक्ति पाता है और इससे पूर्व कि कोई व्यक्ति उसकी मृत्यु की सूचना मेरे पास लाए मेरे ख़ुदा ने उसकी मृत्यु के बारे में मुझे खुशख़बरी और मैं उन खुशख़बरियों को सोच रहा था इतने में अब्दुल्लाह खुशख़बरी लेकर आया और सच प्रकट हो गया और झूठ मिट गया और ख़ुदा ने फैसला कर दिया तथा मोमिन खुश हो गए जैसा कि वादा दिया गया था और शत्रुओं के मुंह काले हो गए

और ख़ुदा का आदेश प्रकट हुआ और वे घृणा करते रहे और यह व्यक्ति अत्यंत बेशर्म ज़ुबान दराज़ गालियां देता तथा बकवास किया करता था उसने मुझसे एक निशान मांगा और मांगने में बहुत आग्रह किया और यह शर्त लगाई कि मैं उसके निशान में मीआद को खोलकर बता दूं और उसकी मृत्यु के दिन को स्पष्ट करने और मरने का महीना बता दूं और जिस ढंग से मरेगा वह विवरण वर्णन करूं और मरने का समय बता दूं और इन सब बातों को लिखा और फिर आग्रह करने वालों के समान मुझ से मांग की तो मैंने उसके प्रश्न को स्वीकार करके उत्तर दिया इस हालत में कि मैं ख़ुदा तआला की तेज़ रफ़्तार ऊंटनी पर सवार था और इस हालत में जब मैं दण्ड देने वाले की प्रकोपी तलवार को खींच रहा था और मैं यथाशक्ति निशान के

اللهج بظهور الآية، والطمعِ فی إعلاء کلمة الملّة، أجاهد فی الحضرة الاحدية، وأصرف فی الدعاء ما جلّ وعظُم من القوّة، ثم ترکت الدعاء بعد نزول السکينة، وتواتُر الوحی الدالّ علی الإجابة. فلما انقضی أربع سنة من الميعاد، ودنا منّا عيد من الاعياد، أُلقیَ فی نفسی أن أتوجّه مرّة ثانية إلی الدعاء، وکذالك أشار بعض الاصدقاء فصبرت أنتظر الوقت والمحلَّ، وأتعلل بعسٰی ولعلَّ، إلی أن أدرکتُ ليلة القدر فی أواخر رمضان، فعرفتُ أن الوقت قد حان، ورأيت ليلةً نشرت أردية الاستجابة، ودعت الداعين إلیٰ المأدبة، ونادت کل من خاف نابَ النُوَب، وبشّرت کل من أسلمه اليأس للکرب. فنهضتُ للدعاء نهوض البطل للبِراز، وأَصلتُ لسان التضرّع کالعَضْب

प्रकट होने के लिए लालची था और इस्लाम के कलिम: को ऊंचा करने के लिए लालसा रखता था ख़ुदा के आगे कठोर तपस्या करता था और मुझ में जितनी शक्ति की श्रेष्ठता थी दुआ में व्यय करता था फिर मैंने आराम उतरने के बाद दुआ को छोड़ दिया और इसलिए कि ऐसा निरंतर इल्हाम जो दुआ की स्वीकारिता को बताता है तो जब मीआद मैं से चार वर्ष गुज़र गए और एक ईद हमसे क़रीब आ गई तो मेरे दिल में डाला गया कि में फिर दुआ करूं और ऐसा ही कुछ दोस्तों ने संकेत किया अत: मैंने सब्र किया और मैं समय और स्थान का प्रतीक्षक था और अब करता हूं अब करता हूं का घूंट पी रहा था यहां तक अन्तिम रमज़ान में मैंने लैलतुल क़द्र को पाया तो मैंने जान लिया कि अब समय आ गया और मैंने एक ऐसी रात को देखा जिसने स्वीकारिता की चादरें बिछा दी थीं। और दुआ करने वालों को दावत की और बुलाया था और प्रत्येक को जो संकटों के दांतो से डरता था बुलाया प्रत्येक को निराशा ने ग़मों के सुपुर्द कर रखा था। खुशख़बरी दी तो मैं दुआ के लिए ऐसा उठा जैसा कि एक दिलेर लड़ने के लिए उठता है और मैंने विनय की जीभ ऐसी खींची जैसा कि तेज़ तलवार। यहां तक की विनम्रता ने बुलन्दी के स्थान पर मुझे बिठाया और मुझे दुआ के स्वीकार होने की खुशख़बरी दी गई तो मैं उस व्यक्ति के

الجُراز، حتى أحلَّنى التذلل مقعد العلاء ، وبُشّرتُ بالإجابة من حضرة الكبرياء. فجلستُ كرجل يرجع برُدْنٍ ملآن، وقلبٍ جَذْلان، وسجدتُ لربّ يُجيب دعاء المضطرين. و كان فى هذه الآية إعلاءَ كلمة الملّة، و إتمامَ الحجّة على الكَفَرة الفَجَرة، ولكن الذين ملكوا أثاث عقل صغير، و اتّسموا بحمق شهير، ما آمنوا بهذه البيّنات، و تركوا النور و اتّبعوا سبل الظلمات، وجحدوا بآيات الله ظلمًا وزورًا، و كانوا قومًا بُورًا، ومن المستكبرين. ويقولون إنّا نحن المسلمون. وليس فيهم سِيَر المسلمين. فى قلوبهم مرض فيزيد الله مرضهم ويموتون محجوبين، إلاّ قليل منهم فإنهم من الراجعين. ويبغون عَرَض الدنيا وعِرضها ولا يتّقون الله ربّ العالمين. فسيُضرَب عليهم الذلّة ويُمْسُون أخا عَيلة، يسألون الناس ولا يملكون بِيّتَ ليلةٍ، كذٰلك يجزى الله الفاسقين.

समान बैठा जो भरी आस्तीन के साथ रुजू करता है। और दिल खुश होता है और मैंने उस प्रतिपालक को सज्दा किया जो बेचैनों की दुआएं सुनता है। और उस निशान में इस्लाम के कलिम: की बुलन्दी थी और काफ़िरों पर अकाटय तर्क पूर्ण होता है। परन्तु वे लोग जो थोड़ी सी बुद्धि के मालिक हैं और मूर्खता की विशेषता में प्रसिद्ध हुए इन खुले खुले निशानों पर ईमान नहीं लाए और प्रकाश को त्याग दिया और ज़ुल्म तथा झूठ से ख़ुदा के निशानों का इनकार किया। और वह तबाह हो चुकी क़ौम थी और अहंकार करने वाले थे और उन्होंने कहा कि हम मुसलमान हैं उन में मुसलमानों की आदतें नहीं हैं। उनके दिलों में रोग है अत: ख़ुदा उनके रोग को बढ़ाएगा और पर्दे की हालत में मरेंगे परन्तु उनमें से थोड़े कि जो रुजू करेंगे और ये लोग दुनिया का माल और दुनिया का सम्मान चाहते हैं और ख़ुदा से जो रब्बुल आलमीन है नहीं डरते। अत: शीघ्र ही उन पर अपमान मार दिया जाएगा और भूखे-नंगे हो जाएंगे लोगों से मांगेंगे और रात का भोजन उनके पास नहीं होगा और ख़ुदा तआला इसी प्रकार पापियों को दण्ड देता है।

و إذا قيل لهم آمِنوا بما أنزل الله من الآيات، قالوا لن نؤمن ولو كان إحياء الاموات، وطبَع الله على قلوبهم بما كانوا مفترين. و كانوا يستفتحون مِن قبل، فلمّا جاء هم الفتح وصاب النَبل، أعرضوا عنه، فويل للمعرضين. وجحدوا بها واستيقنتها أنفسهم، فما بالهم إذا ماتوا ظالمين

أبَقِىَ فى كنانتهم مرماة، أو فى قلوبهم مماراة؟ كلّا بل مزّقهم الله كل ممزّق فلا يتحرّكون إلا كالمذبوحين. ألا يرون كيف يُفحَمون الفينة بعد الفينة، ويُخزَون كل عام مع رقصهم كالقينة، وتراءت سُحُبُهم جَهاما، ونُخُبُهم لئاما، ولمعانُهم ظلاما، وجَنانهم عَباما، فبأىّ آية بعده يؤمنون؟ أما أحلّنى ربى محلَّ مَن يبلغ قصوى الطلب، ونقلنى مِن وَقْدِ الكُرب إلى رَوح الطَرب، وأيّدنى وأعاننى، وأهان كل من أهاننى،

और जब उनको कहा जाए कि जो ख़ुदा ने निशान उतारे उन पर ईमान लाओ। कहते हैं कि हम कभी ईमान नहीं लाएंगे यद्यपि मुर्दे से जीवित किए जाएं और उनके दिलों पर ख़ुदा ने मोहर लगा दी। क्योंकि वे मुफ़्तरी थे और इस से पहले वे काफ़िरों पर विजय चाहते थे तो जब विजय आई और तीर निशाने पर लगा तो इससे उन्होंने मुंह फेरा अत: उन पर अफ़सोस है और उन्होंने इन्कार किया तथा उनके दिल विश्वास कर गए तो क्या हाल है उनका जब अत्याचारी की हालत में मरेंगे।

क्या उनके तूणीर (तर्कश) में कोई तीर शेष रह गया है? या उनके दिलों में कोई वैर शेष है? कदापि नहीं अपितु ख़ुदा ने उनको टुकड़े-टुकड़े कर दिया और अब तो एक मज़्बूही हरकत है क्या नहीं देखते कि वे कभी-कभी कैसे निरुत्तर किए जाते हैं और हर वर्ष अहंकारपूर्ण नाच के बावजूद अपमानित किए जाते हैं और उनके बादल बिना पानी के निकले और उनके चुने हुए कृपण सिद्ध हुए और उनका प्रकाश अंधकार, उनके दिल असभ्य और बुद्धिहीन सिद्ध हो गए तो इसके पश्चात वे किस निशान पर ईमान लाएंगे क्या मेरे ख़ुदा ने मुझे उस महल पर नहीं उतारा जो मनोकामना प्राप्ति का

وأرانی العید، ووفّٰی المواعید، وأری الفتح کل مَن فتَح العینَ ، وطوَی قصة کیف وأین، وأتمّ الحجّة علی المنکرین. فالحمد للّٰہ الذی کفانی من غیر تدبیری، وجعل لی فرقانا وفرّق بین قبیلی ودبیری. وکنتم لا تُصْغُون إلی العظات، ولا تحفظونها بل تؤذون بالکلم المحفِظات، فدق اللّٰہ رأسکم بالآیات، وجاء کم سُلطانه بالرایات، وأدّبکم بالزجر والغضب، لتأخذوا نفوسکم بهذا الادب. فلا تستنّوا استنان الجیاد، وفکِّروا فی فعل ربّ العباد، لعلکم تُعصَمون کالراشدین. ما لکم تتکاید کم کلماتُ الحق والصواب، وتمیلون من الیقین إلی الارتیاب، ولا تترکون سبل المجرمین؟

وانظروا إلٰی آیات رأیتموها، وخوارق شاهدتموها، أهذه من المکائد

स्थान है और मुझे व्याकुलताओं की अग्नि से खुशी की समृद्धि तक पहुंचाया तथा मेरा समर्थन किया और मेरी सहायता की और प्रत्येक जो मेरा अपमान चाहता था उसे अपमानित किया और मुझे ईद दिखलाई और वादों को पूर्ण किया और प्रत्येक आंख खोलने वाले के लिए विजय को दिखाया और क्योंकर तथा कहां के किस्से को लपेट दिया और इन कार्यों पर हुज्जत पूरी कर दी। अत: उस ख़ुदा की प्रशंसा है जो मेरे उपाय के बिना मेरे लिए पर्याप्त हो गया और मुझ में तथा मेरे विरोधियों, दोस्तों और दुश्मनों में एक विलक्षण बात पैदा कर दी और तुम लोग नसीहत की ओर कान नहीं धरते थे। नसीहतों को याद नहीं रखते थे अपितु देने वाले शब्दों के साथ याद करते थे।

इसलिए ख़ुदा तआला ने निशानों के साथ तुम्हारे सर को कूटा और उसकी हुज्जत झण्डों के साथ तुम्हारे पास आई और ख़ुदा ने डांट-डपट और क्रोध के साथ तुम्हें आदर दिया है ताकि तुम इस आदर पर स्थापित हो जाओ अत: तुम तेज़ घोड़े के समान उद्दंडता मत करो और ख़ुदा तआला के कार्य पर विचार करो ताकि तुम रशीदों के समान बच जाओ तुम्हें क्या हुआ कि सच और सही कलिमें तुम पर भारी गुज़रते हैं और विश्वास से संदेह की ओर जाते हो तथा अपराधियों का मार्ग नहीं छोड़ते।

الإنسانية، أو من الطاقة الربّانية؟ وإنّي عزمتُ عليكم فاشهدوا إن كنتم مقسطين. وإنه مَن كان أُعطىَ حظًّا من التقوىٰ، ولو كمُصاصة النوىٰ، فلا يكتم شهادة أبدا. وأمّا الذى اتّبع الهوَى، وما خَشِىَ الله الاعلىٰ، وما تواضعَ وما استحيَا، فليُظْهِرْ ما نحا وتمنّى، ولينكرِ اللّٰهَ وما أولىَ مِن جدوَى، ومِن نصرته والعدوَى، فسوف ينظر هل ينفعه كيده أو يكون من الهالكين.

أيها الناس، لا تُحقّروا الله والآيات، واستغفِروا الله وَاعْنُوا له من الفُرطات. أجَهِلْتم مآلَ قوم كذّبوا من قبل هذا الزمان، أو لكم براءة فى زُبر الله الديّان؟ فعُوذوا بالله مِن ذات صدوركم إن كنتم خاشعين. قُوموا فُرادَى فرادَى، واجتنِبوا مَن عادا، ثم فكِّروا أما أُوتيتم مثل ما أوتىَ قبلكم من الكفّار؟ أما جاءتكم آيات الله القهّار؟ أما حُقّرتم بتحقير حضرة الكبرياء

और उन निशानों की ओर देखो जिनको तुम देख चुके हो और उन विलक्षण निशानों की ओर जिनका तुम अवलोकन कर चुके हो। क्या मानवीय यह कपटों में से है या ख़ुदा की शक्ति से और मैं तुम्हें कसम देता हूं। अत: गवाही दो यदि न्यायवान हो। और वह व्यक्ति जो संयम से कुछ भाग दिया गया है यद्यपि गुठली के छिलके के समान दिया गया हो तो वह गवाही को कभी नहीं छुपाएगा। परन्तु वह व्यक्ति जो लोभ लालच का अनुयायी हुआ और ख़ुदा से न डरा और न आवभगत की, न शर्म की तो चाहिए कि जो इरादा किया वह प्रकट करे और चाहिए कि ख़ुदा और उस के अनुदान से इन्कारी हो जाए और उसकी सहायता और मदद से इन्कार करे। तो शीघ्र ही देखेगा कि क्या उसका छल उसे लाभ देता है या मरने वालों में से हो जाता है।

हे लोगो! ख़ुदा और उसके निशानों का तिरस्कार मत करो और उससे गुनाहों की माफ़ी मांगो और उसके सामने अपने गुनाहों के भय से विनय करो क्या तुम्हें उस क़ौम का अंजाम भूल गया जिन्होंने तुमसे पहले झुठलाया या ख़ुदा ने दण्ड देने वालों की किताबों में तुम्हें बरी रखा गया है। अत: अपने बुरे खतरों से ख़ुदा तआला की ओर शरण ले जाओ यदि डरने वाले हो। एक एक होकर खड़े हो जाओ और शत्रुता करने वालों से बचो फिर विचार करो कि क्या तुम्हें वे सबूत नहीं दिए गए

؟أما قُضيتْ ديونكم كالغرماء؟ فَوَحَقِّ المنعِم الذى أحلَّنى هذا المحلّ، وأرى لتصديقى العقد والحلّ، ووهب لى الولد وأهلك لى العِدا اللئام، وأرى فى آياته الإيجاد والإعدام، و أرى فى ندوة المذاهب إعجاز الإنشاء، ثم أرى فى العجل المقتول إعجاز الإفناء ، وأظهر أية القول وآية الفعل للناظرين، وأرى الكسوف والخسوف فى رمضان، وأفحمكم ببلاغتى وعلّمنى القرآن، فسكتّم بل متّم مع غلوّكم فى العناد، وأُخزيتُم ورُميَت عظمتكم بالكساد، فأصبحتم كالمغبونين. إن هذا لحق فلا تكونوا من الممترين.

أيّها الناس إنى جئتكم من الربّ القدير، فهل فيكم من يخشى قهر هذا الغيور الكبير، أو تمرّون بنا غافلين؟ وإنّكم تناهيتم فى المكائد، وتماديتم فى الحِيَل كالصائد، فهل رأيتم إلا الخذلان والحرمان؟

जो तुमसे पूर्व काफ़िरों को दिए गए और क्या तुम्हारे पास निशान नहीं आए क्या तुम ख़ुदा का तिरस्कार करने से तिरस्कृत और अपमानित नहीं हो चुके। क्या तुम्हारे ये समस्त कर्ज़ कर्ज़दारों की तरह अदा नहीं किए गए उस वास्तविक इनाम देने वाले की क़सम है जिसने मुझे इस महल में दाख़िल किया और मेरे सत्यापन के लिए बांधा और खोला और मुझे सन्तान दी और मेरे लिए शत्रुओं को मार दिया और अपने निशानों में अविष्कार करने और समाप्त करने को दिखाया और धर्म महोत्सव में पैदा करने का निशान दिखाया और क़त्ल किए हुए बछड़े में मारने का निशान दिखाया और कथनी और करनी का निशान देखने वालों के लिए दिखलाया।

और ख़ुदा तआला ने तुम्हें सूर्य और चन्द्र ग्रहण रमज़ान में दिखाया और मेरी बलाग़त के साथ तुम्हें दोषी किया और तुझे क़ुर्आन सिखाया तो तुम चुप हो गए अपितु वैर के बावजूद मर गए और तुम बदनाम किए गए और तुम्हारी महानता अशोभनीय हो गई। अत: तुमने घाटा पाने वालों की तरह सुबह की। यह सच है इसलिए तुम सन्देह करने वालों में से मत हो।

हे लोगो मैं तुम्हारे पास शक्तिशाली रब्ब की ओर से आया हूं। अत: क्या तुम में कोई ऐसा आदमी है जो उस बड़े स्वाभिमानी से भय करे या लापरवाही के साथ

وهل وجدتم ما أردتم غيرَ أن تُضيّعوا الإيمان؟ فاتّقوا الله يا ذرارى المسلمين! أما تنظرون كيف أتمّ الله لى قوله، وأجزلَ لى طَوله؟ فما لكم لا تلفِتون وجوهكم إلى آيات الخبير العلّام، وتنصّلون لى أسهم الملام؟ أما رأيتم بطلَ زعمِكم، وخطأ وهمكم؟ فلا تقوموا بعده للذمّ، ولا تنحتوا فِرْية بعد العَجْم، و كُفّوا ألسنكم إن كنتم متّقين. توبوا إلى الله كرجل سُقِطَ فى يده، وخشِى مآله وسوء مقعده، وإن الله يحبّ التوّابين.

وإنّى عُلّمتُ مُذ بوركَتْ قدمى، وأُيّدَ لِسْنى وقلمى. إنّ الّذين اتّخذوا العناد شِرعة، و كَلِمَ الخبثِ نُجعة، إنهم سيُخذَلون، ويُغلَبون ويُخسَأون، ولا يلقون بُغْيتهم ولا يُنصَرون وتحرقهم جذوتهم، فهم مِن جذوتهم يُعدَمون. وأمّا الذين سُعِدوا منهم فسيُهدَون بعد ضلالهم، ويتداركهم رُحْم ربّهم

हम से गुज़र जाओगे और तुमने अपने छलों को चरम सीमा तक पहुंचा दिया और शिकारियों की तरह चालबाज़ी में बड़ी देर लगाई तो क्या तुमने अपमान और वंचित होने के अतिरिक्त कुछ और भी देखा और क्या तुमने वह बात पाई कि जिसको तुम ने ईमान को नष्ट किए बिना ढूंढा। तो हे मुसलमानों की सन्तान ख़ुदा से डरो। क्या तुम नहीं देखते कि ख़ुदा ने मेरी बात को कैसे पूरा किया और मेरे लिए अपना बहुत अनुदान दिखाया फिर तुम्हें क्या हो गया कि ख़ुदा के निशानों की ओर मुंह नहीं करते और मेरे लिए निन्दा के तीर बाण की नोक पर रखते हो क्या तुमने अपने गुनाह का खण्डन नहीं देखा और अपने भ्रम की ग़लती तुम पर प्रकट नहीं हुई इसलिए इसके पश्चात निन्दा के लिए खड़े मत हो।

और परखने के बाद झूठ को मत गढ़ो और जीभों को बन्द करो यदि तुम संयमी हो। उस व्यक्ति के समान तौब: करो जो शर्मिंदा होता है और अपने अंजाम और बुरी आख़िरत से डरता है और ख़ुदा तौब: करने वाले से प्रेम करता है।

और मुझे उस दिन से जो मेरा क़दम मुबारक किया गया और मेरी क़लम और मेरी ज़ुबान को सहायता दी गई इस बात का ज्ञान दिया गया कि जिन लोगों ने वैर को अपना तरीका ग्रहण किया है और अपवित्र बातों को ख़ुराक ठहराया है शीघ्र ही वे असफल रहेंगे और पराजित किए जाएंगे और रद्द किए जाएंगे

قبل نکالھم، فیستیقظون مُسترجعین، و یترکون حقدًا ولَدَدًا، و یخرّون علی الاذقان سُجّدًا، ربنا اغفِرْ لنا إنّا کنّا خاطئین، فیغفر اللّٰہ لھم وھو أرحم الراحمین۔ فیومئذ ینعکس الامر کلہ و یتجلّی اللّٰہ للناظرین۔ وتری الناس یأتوننا أفواجًا، وتری الرحمۃ أمواجًا، وتتمّ کلمۃ ربّنا صدقا وعدلا، وتری کیف ینیر سراجا، فحینئذٍ تشرق أیّام اللّٰہ وتفنٰی فتن المفسدین۔ و یُقضَی الامر بإتمام الحجّۃ والإفحام، وتھلك الملل کلھا غیر الإسلام، وتری القَتَرۃ رھَقتْ وجوہ الکافرین۔ فما لکم إلی ما تکذّبون؟ أتجعلون رزقکم أنکم تکفرون؟ أغَرَّتْکم کثرۃ علمائکم، وتظاھُر آرائکم؟ وقد رأیتم مبلغ علمکم وعلم فضلائکم، وشاھدتم نقص فھمکم ودھائکم، وآنستم کیف ولّیتم مدبرین.وأیھا النجفیّ لِمَ تؤذینی وقد رأیت آیاتی،

और अपनी मनोकामना को नहीं पाएंगे और मदद नहीं दिए जाएंगे और उनका शोला उन्हीं को जलाएगा और मिटा दिए जाएंगे परन्तु वे जो नेक हैं वे गुमराही के बाद हिदायत दिए जाएंगे और कष्ट से पहले ख़ुदा की दया उनको संभाल लेगी और इन्ना लिल्लाह कह कर जाग उठेंगे और वैर तथा झगड़े त्याग देंगे और सज्दा करते हुए ठोड़ियों पर गिरेंगे कि हे ख़ुदा हमें क्षमा कर हम ग़लती पर थे तो ख़ुदा उन्हें क्षमा कर देगा और वह सब दयावानों से अधिक दयावान है। अत: उस समय समस्त बातें उलट जाएंगी और ख़ुदा देखने वालों के लिए प्रकट हो जाएगा और तू लोगों को देखेगा कि फौजों की फौजें हमारे पास आते हैं और तू दया को देखेगा कि लहरें मार रही हैं और सत्य तथा न्याय से हमारे रब्ब की बात पूरी हो जाएगी। और तू उसे देखेगा कि किस प्रकार दीपक को रोशन करता है। तो उस समय ख़ुदा के दिन चमकेंगे और उपद्रवियों के फ़ितने फ़ना किए जाएंगे और हुज्जत पूरी करके बात पूरी की जाएगी और इस्लाम के अतिरिक्त प्रत्येक मिल्लत तबाह हो जाएगी और तू झूठों के मुंह पर धूल पाएगा। अत: तुम्हें क्या हो गया है और तुम कब तक झुठलाओगे क्या इस ख़ुदाई सिलसिले से तुम्हारा यही हिस्सा है कि तुम काफ़िर ठहराओ क्या तुम्हारे उलेमा की प्रचुरता और तुम्हारी रायों की सहमति ने तुम्हें घमंडी

وشاهدتَ حُججی وبیّناتی؟ ثم أبیتَ وهذیتَ، فقاتلك اللّٰه کیف هذیتَ، وقد رأیت آثار الصادقین. أیها الثعلب أإنك تخوّفنی وتُغری علیّ هذه الدولة، وما رأتْ منّا الدولة إلا الإخلاص والنصرة، واللّٰه یحفظ عباده من مکائد الخبیثین. ثم إنّك اخترت فی کل أمرٍ طریق الدجل والضَیْم، ورعدتَ کالجَهام لا کالغیم، ونطقت کالمعارف العرفاء مع البُعد والرَیْم، فما هذا أصَحِبْتَ إبلیس ذاتَ العُوَیْم، أو هذا من سِیَر المتشیّعین؟ وخاطبتنی فی رسالاتك، وقلت إنّی جُبتُ البلاد لمباراتك، وما هذا إلا زور مبین. بل الحق أنك سافرت لهوًی من الاهواء، وسمعتَ الریف، فطمِعتَ الرغیف کالفقراء، ووردتَ هذه الدیار من برهة طویلة، لا من مدّة قلیلة،

किया है और तुमने अपने ज्ञान और अपने विद्वानों के ज्ञान का अनुमान भी देख लिया और तुमने अपनी समझ और बुद्धि की कमी का अवलोकन भी कर लिया और तुमने देख लिया कि तुम किस प्रकार पराजित हुए। और हे नजफ़ी! तू मुझे क्यों दुख देता है और तू मेरे निशानों को देख चुका है और मेरे तर्कों को सुन चुका है फिर तूने अवज्ञा की और बकवास की। अत: ख़ुदा तुझे मारे तू ने यह कैसी बकवास की। हालांकि सच्चों के निशान तू ने देख लिए हे लोमड़ी! क्या तू मुझे डराता है और इस सरकार को मुझ पर उत्तेजित करता है और इस सरकार ने हमसे निष्कपटता तथा सहायता के अतिरिक्त कुछ नहीं देखा और ख़ुदा तआला ख़बीसों के धोखों से अपने बंदों पर नज़र रखता है फिर तूने प्रत्येक बात में छल और अत्याचार का मार्ग ग्रहण किया है। और उस बादल की तरह तूने गरज दिखाई जिसमें पानी न हो और तू ने आत्मज्ञानियों की तरह कलाम किया हालांकि तू दूर और अलग है। फिर यह क्या तरीक़ा है क्या तू कुछ दिन इब्लीस की शागिर्दी में रहा है या यह शियों की आदत ही होती है और तू ने अपने पत्रों में मुझे सम्बोधित करके कहा है कि हमने तेरे मुबाहसे के लिए दूर का सफर तय किया है। यह सर्वथा झूठ है अपितु सच बात यह है कि तू ने कुछ

فانظر إلٰی کذبك یا رئیس المفترین۔ وأظنّ أن بلادك أمحَلَتْ، أو المتربة علیك اشتدّت، ففررت إلی بلاد المخصِبین، لتدور حول البیوت، وتکسب القوت کبنی غبراءَ مُشَقْشِقین۔ فما أجاءك إلّا فقرك إلٰی مغنانا الخصیب، فألقیت بھا جِرانك وآثرت الحبوب علی الحبیب، ثم سترت الامر یا مضطرم الاحشاء، ومضطرًّا إلی العَشاء، وتجافیتَ عن طرق الصادقین۔ ھذا غرضك ومُنْیتك من ھذا السفر، ولکنّك سترجع خائبا ولا تری فائزا وجه الحَضَر؛ فاسترجِعْ علی ضَلّة الْمَسْعَی، وإمحال المرعَی، وسوء الرجعَی، واخسَأْ فإنّك من المفسدین۔ وإنّی التقطتُ لفظَك کلَّ ما نفثتَ، ورددتُ علیك جمیع ما رفثتَ، فَکُلُّ مَا سقط علیك فھو منك یا أخا الغول، ولیس منّا إلا جواب الغویّ الجھول، وما کنّا سابقین۔ ولو کنت تخاف عِرضك وعزّتك، لھذّبتَ قولك ولفظتك، ولکن کنتَ من السفھاء السافلین۔

कामवासना संबंधी इच्छाओं के लिए सफर किया है और तूने इस देश की अच्छी हालत सुनी तो रोटियों का लालच तुझे लग गया और तू एक लम्बे समय से इस देश में है न कि थोड़े।

तो हे झूठ गढ़ने वालों के सरदार! अपने झूठ की ओर देख और मैं गुमान करता हूं कि तेरे देश में दुर्भिक्ष पड़ गया या तुझ पर कंगाली और निराहार विजयी हो गया तो तू इस कारण से इन लोगों के देश की ओर दौड़ा जो अन्न की गुंजाइश रखते हैं ताकि भिखारियों की तरह चिल्ला कर भीख मांग कर गुज़ारा करे इसलिए हमारे हरे-भरे देश की ओर तेरी कंगाली और निराहार तुझे खींच लाया। तू ने यहां अपनी गर्दन को डाल दिया और देश के दोस्तों पर अन्न को ग्रहण कर लिया फिर तू ने हे भूख के जलाए हुए और रात के भोजन के मोहताज वास्तविकता को छुपा दिया और सच्चों के मार्ग से अवज्ञाकारी हो गया। इस सफर से यह तेरा उद्देश्य और अभिलाषा है परन्तु तू हताश और घाटे में लौटेगा और सफलता में अपना देश नहीं देखेगा तो अपना प्रयास नष्ट होने पर इन्ना लिल्लाह कह। और चरागाह के दुर्भिक्ष पर तथा बुरी वापसी पर अफ़सोस कर और दूर हो क्योंकि तू

وأمّا نحن فلا يُصيبنا ضرّ بكلماتكم، ويرجع إليكم سهم جهلا تكم، وما تفترون كالفاسقين۔ وكذٰلك إذا اشتهرَ أَفِيْكَةُ الإفّاكين على غير سفّاكين، فأمدتم الهنود كالمحتالين، وقلتم إنّ هذا الرجل كرجلكم فخُذوه إن كان من المغتالين۔ وما قام منكم أحد لنستوفى منه اليمينَ، وما كان أمر أحدٍ منكم مِن غير أن يَمِينَ۔ لا تبطَروا ولا تفرَحوا بكثرة جمعكم، فإنّ الله قادر على قمعكم۔ فاجتنِبوا البطر مُرتاعين۔ ولا تقولوا إنّ الزحام جمعوا عليك لاعنين، وقد كُذّب الرُسل من قبل وأُوذوا ولُعِنوا، حتى إذا جاء أمر الله فسوّد وجوه المكذّبين۔

و قد جرت عادة ا لله فى أوليائه ، و نُخبِ أصفيائه ، أنهم يؤذَون فى مبدء الامر، ويُسلَّط عليهم أوباشٌ من الزُمر، فيسبّونهم ويشتِمونهم

उपद्रवी है और मैंने जो कुछ तू बोला था तेरे ही शब्द लिए हैं और जो कुछ तू ने बुरा-भला कहा मैंने तुझे वापस दे दिया। तो जो कुछ तुझ पर गिरा वह तेरी ही ओर से है। हे सेनापति के भाई और हमारी ओर से तो केवल उत्तर है और हमने पहल नहीं की और यदि तुझे अपने सम्मान और आबरू की आशंका होती तो तू सभ्यता पूर्ण बात करता परन्तु तू कमीनों और नीच लोगों में से था।

परन्तु हमें तुम्हारी बातों से कष्ट नहीं पहुंच सकता और तुम्हारे तीर तुम्हारी ओर ही लौट जाते हैं और जो कुछ तुम झूठ गढ़ते हो वह तुम पर ही आता है और इसी प्रकार जब झूठ बांधने वालों ने अकारण लोगों को ख़ूनी बनाया जो ख़ूनी नहीं थे तो तुमने चालबाज़ों की तरह अकारण हिंदुओं की सहायता की

और तुमने कहा कि जैसा लेखराम ऐसा ही यह व्यक्ति है। अत: यदि यह क़ातिल है तो इसे पकड़ लो और कोई तुम में से खड़ा न हुआ था ताकि हम उससे क़सम लेते तथा तुम्हारा और कोई कार्य न था इसके अतिरिक्त कि झूठ बोलो। मत इतराओ और न इतना अधिक प्रसन्न हो क्योंकि ख़ुदा तुम्हारी जड़ उखाड़ने पर समर्थ है तो डरते हुए इतराने से बचो और यह मत कहो कि लोग तुझ पर सहमत

ويكفّرونهم مستهزئين. ولا يُبالون الافتراء ، ويقولون فيهم أشياء ، ويُغرى بعضهم بعضا بأنواع المكر والتدابير، ولا يغادرون شيئا من المكائد والدقارير، ويفترون مجترئين. ويريدون أن يُطفئوا أنوارهم، ويخرّبوا دارهم، ويحرقوا أشجارهم، ويُضيّعوا ثمارهم، وكذلك يفعلون متظاهرين. ويزعمون أن يدوسوهم تحت أقدامهم، ويُمزّقوهم بحسامهم، ويجعلوهم أحقر المحقّرين. فإذا تمّ أمر التوهين والتحقير والإيذاء ، وظهر ما أراد الله من الابتلاء ، فيتموّج حينئذ غيرةُ الله لأحبّائه من السماء، ويطّلع الله عليهم ويجدهم من المظلومين، ويرىٰ أنهم ظُلموا وسُبّوا وشُتموا وكُفّروا من غير حق وأُوذوا من أيدى الظالمين. فيقوم ليُتِمَّ لهم

होकर लानत करते हैं। और इससे पहले रसूलों को झुठलाया गया और दुख दिए गए और लानत किए गए यहां तक कि जब ख़ुदा का आदेश आया तो झुठलाने वालों का मुंह काला किया गया।

और ख़ुदा तआला की आदत उसके वलियों तथा उसके चुने हुए लोगों में इस प्रकार से जारी हुई है कि वे अपनी प्रारंभिक बातों में कष्ट दिए जाते हैं और लोफ़र लोग उन पर हावी किए जाते हैं तो वे लोफ़र उन्हें गालियां देते हैं और बुरा भला कहते हैं और ठट्ठा करते हुए काफ़िर ठहराते हैं और झूठ बांधने की कुछ परवाह नहीं करते और उनके बारे में भिन्न-भिन्न प्रकार की बातें करते हैं और उनके कुछ लोग कुछ को भिन्न भिन्न प्रकार के यत्नों और उपायों से उकसाते हैं तथा झूठ और छल से कोई चीज़ भी उठा नहीं रखते और साहस के साथ झूठ बांधते हैं और इरादा रखते हैं कि उनके प्रकाश को बुझा दें और उनके घर को ख़राब कर दें और उनके वृक्षों को जला दें और उनके फ़लों को नष्ट कर दें और इसी प्रकार एक दूसरे की शरण होकर आते रहते हैं और इरादा करते हैं कि उनको अपने पैरों के नीचे कुचल दें और तलवार के साथ उनको टुकड़े-टुकड़े कर दें। और सब अपमानितों से अधिक अपमानित कर दें तो जब

سُنّته، و یُریھم رحمته، و یؤیّد عباده الصالحین. فیُلقی فی قلوبھم لیُقبِلوا علی اللّٰہ کلّ الإقبال، و یتضرّعوا فی حضرته فی الغدوّ و الآصال، و کذٰلك جرت سُنّته فی المقرّبین المظلومین. فتکون لھم الدولة و النصرة فی آخر الامر، و یجعل اللّٰہ أعداء ھم طُعْمةَ الاسد و النمر، و کذٰلك جرت سُنّته للمُخلصین۔

إنھم لا یُضاعون و یُبارَکون، ولا یُحقَّرون و یُکرَمون و یُحمَدون ولا یُسَبُّون، ویسعی الرجال إلیھم ولا یُترَکون یُدخَلون فی النار، ولکن لا للتبار، و یُولَجون فی اللُجّة، ولکن لا للضیعة، بل اللّٰہ یُظھِر أنوارھم عند الابتلاء ، ثم یُھلِك أعداء ھم بأنواع الإخزاء ، فیُتبِّر فی ساعةٍ ما عَلوا فی مدّة، و یبرّئھم مما قالوا، و ینزّھھم عما افتعلوا، و یفعل لھم أفعالًا یتحیّر الخَلق برؤیتھا، و یُنزل أمورًا یتزعزع القلوب بھیبتھا، و یُرِی کل أمر

अपमान और कष्ट की बात चरम सीमा को पहुंच गई और जो अज़माइश ख़ुदा के इरादे मे थी वह हो चुकी तो उस समय ख़ुदा तआला का स्वाभिमान उसके दोस्तों के लिए जोश मारता है और ख़ुदा उनकी ओर देखता है और उन्हें अत्याचार पीड़ित पाता है और देखता है कि वे अत्याचार किए गए और गालियां दिए गए और अकारण काफ़िर ठहराए गए और अत्याचारियों के हाथ से दुख दिए गए तो वह खड़ा होता है ताकि उनके लिए अपनी सुन्नत पूरी करे तथा अपनी दया दिखाए और अपने नेक बन्दों की सहायता करे। तो उनके दिलों में डालता है ताकि पूर्ण रूप से ख़ुदा तआला की ओर ध्यान दें और सुबह-शाम उसके सामने गिड़गिड़ाएं और इसी प्रकार उसकी सुन्नत उसके सानिध्य प्राप्त लोगों के बारे में जारी है। तो अन्ततः दौलत और मदद उनके लिए होती है और ख़ुदा तआला उनके शत्रुओं को शेरों और चीतों की ख़ुराक कर देता है और इसी प्रकार निष्कपट लोगों में अल्लाह की सुन्नत जारी है वे नष्ट नहीं किए जाते और बरकत दिए जाते हैं और तिरस्कृत नहीं किए जाते और बुज़ुर्ग किए जाते हैं और प्रशंसा किए जाते हैं और गालियां नहीं दिए जाते और लोग उनकी ओर दौड़ते हैं तथा छोड़े नहीं जाते आग में दाख़िल किए जाते हैं परन्तु न तबाह करने के लिए और दरिया में दाख़िल

كالصول المهيب، ويُقلّب أمر العدا كل التقليب، ويُرى الظالمين أنهم كانوا كاذبين؛ ويؤيدهم بتأييدات متواترة، وإمدادات متوالية متكاثرة، ويجرّد سيفَه على المجترئين.فاعلموا أنه هو أرسلنى عند فساد الديار، وأنه هو ربّ هذه الدار، وأنه سينصرنى ويبرّئنى من تُهم الاشرار. فاحفظ قصّتى التى هى أحسن القصص، وذُق ما نذيقك ولو متجرّعًا بالغصص. أزعمتَ أنى أكيد كيدًا للدنيا الدنيّة، وأصيد صيدًا للأهواء النفسانية؟ أيها الجهول! هذا قياس قِسْتَ على نفسك الامّارة، فإنّك من قوم لا يعلمون حقيقة الطهارة، ويلعنون قومًا مُطهَّرين. أيها الغوىّ! إنا لا نبغى المشيخة والعلاء، ولا الإمارة والاستعلاء، ولا نميل إلى الترفّه والاحتشام، ولا نطلب ما طاب وراق من الطعام، ونجد فى نفسنا أذواقَ حُبّ الرحمٰن،

किए जाते हैं परन्तु न मारने के लिए अपितु इब्तिला के समय ख़ुदा तआला उनके प्रकाशों को प्रकट करता है। फिर उनके शत्रुओं को भिन्न-भिन्न प्रकार की बदनामी से मारता है तो एक घड़ी में उस संपूर्ण इमारत को तबाह कर देते हैं जो एक लंबे समय में बनाई गई थी और शत्रुओं के कथनों से उन्हें बरी करता है और उनके आरोपों से उन्हें पवित्र करता है और उनके लिए वे कार्य करता है कि उनको देखकर लोग हैरान हो जाते हैं और वे बातें उतारता है जिनके भय से हृदय कांप जाते हैं। और प्रत्येक बात भयानक आक्रमण के साथ प्रकट करता है और शत्रु के कारोबार को बिल्कुल उल्टा देता है और ज़ालिमों को दिखाता है कि वे झूठे थे तथा निरन्तर समर्थनों के साथ और लगातार सहायताओं के साथ मदद करता है और धृष्टों पर अपनी तलवार खींचता है। अत: जान लो कि उसने युग की ख़राबी के समय मुझे भेजा है और वही इस घर का मालिक है और वह शीघ्र ही मेरी सहायता करेगा और दुष्टों के आरोपों से मुझे बरी कर देगा इसलिए मेरे इस किस्से को याद रख कि जो सब किस्सों से उत्तम है और चख जो हम तुझे चखाते हैं। यद्यपि क्रोध के घूंट के साथ। क्या तू ने यह गुमान किया है कि मैं दुनिया के लिए छल कर रहा हूं या मैं कामवासना संबंधी इच्छाओं के लिए शिकार खेल रहा हूं। हे जाहिल तू ने यह अनुमान अपने नफ़्स पर किया है। क्योंकि तू उस क़ौम

وسُكْرًا فاق صهباء الدِنان، فلا نريد أَرائِكَ منقوشة، ولا طنافس مفروشة، إنْ نريد إلا وجه المحبوب، فالحَمْدُ لِلّٰہ علیٰ ما أوصلَنا إلى المطلوب، وأرانا ما تغيَّبَ من أعين العالمين. والعجب كلّ العجب أن عبد الحق الغزنوی يسبّنی منذ خمس سنين، ولا يُباحثنی كالصّالحين المتّقين، ولا يتّقی اللّٰہ بعد رؤية الآيات، ولا ينتهی عن الافتراء ات، وسلك مسلك الظالمين۔ وإنی صبرتُ علٰی مقالاته، وأعرضتُ عن جهلا ته، حتیٰ غلا فی السبّ والشتم والتوهين، وسمّانی بأسماء الفاسقين، وأشاع اشتهارات، وأری جهلات، وكان من المعتدين۔ فرأينا أن نردّ عليه وقومه ونكسّر نفوسهم الامّارات، ونذيقهم جزاء السَّبُعِيّة وسوءِ الجذبات، وإنّما الاعمال بالنيّات، وإنّ اللّٰہ يعلم ما فی القلوب ويعلم ما فی الارض والسماوات. وإنّا أسّسنا كل ما قلنا علٰی تقویٰ وديانة، وصدقٍ وأمانة، واجتنبنا الرفث وفضول الهذر، وكل

में से है जो पवित्रता की वास्तविकता को नहीं जानते और पवित्र पर लानत भेजते। हे गुमराह हम बुज़ुर्गी और श्रेष्ठता को नहीं चाहते और न हम अमीरी और बुलन्दी के इच्छुक हैं और न हम समृद्धि और नौकर-चाकर की ओर झुकते हैं और न हम अच्छे खाने मांगते हैं और हम अपने हृदय में रहमान के प्रेम का शौक पाते हैं। और वह नशा जो शराब से बढ़कर है। अत: हम नक्श-निगार वाला तख़्त नहीं चाहते और न फ़र्श जो बिछाते हैं मांगते हैं। हम केवल प्रियतम का चेहरा चाहते हैं। अत: ख़ुदा का धन्यवाद है जिसने हमें अभीष्ट तक पहुंचाया और हमें वह दिखाया जो दुनिया की आंखों से छुपा हुआ था और समस्त आश्चर्य यह है कि अब्दुल हक़ ग़ज़नवी पांच वर्ष से मुझे गालियां निकाल रहा है और सदाचारियों की तरह मुबाहस: नहीं करता और निशानों के देखने के बाद ख़ुदा से नहीं डरता और झूठ गढ़ने से नहीं रुकता और अत्याचारियों के मार्ग पर चलता है और मैंने उसकी बातों पर सब्र किया और उसकी मूर्खता से मुंह फेर लिया यहां तक कि उसने गाली और अपमान में अतिशयोक्ति की और पापियों के नामों के साथ मुझे पुकारा और विज्ञापन प्रकाशित किए और मूर्खता प्रदर्शित की और हद से बाहर जाने वालों में से था। तो हमने उचित समझा कि उसका और

شجرة تُعرَف من الثمر. ونستكفى بربّ النّاس الافتنانَ، بهذا الوسواس الخنّاس. ونعلم بعلم اليقين أنّه ليس بذاته مبدأ هذا السبّ والتوهين، بل علّمه إبليس آخر من الغزنويين. ولا ريب أنهم هم العلل الموجبة لفتنته، ومنبتُ شُعبتِه، وجرموثةُ شَذَبَتِه، وحطبُ تلهُّبِ جذوتِه، ومحرِّكُ عَوْمَرته. يذكرون النعلَين عند المقال، كأنهم يتمنّون ضرب النعال، ويتضاغىٰ رأسهم لِيُدَقَّ بالاحذية الثقال. وما قام عبد الحق هذا المقام الشاين، إلا بعد ما أرَوه صِفاتى كمَشايِنَ، فويل لهم إلى يوم القيامة، ما سلكوا كأبيهم طرق السلامة، وتركوا سبل الصلاح معتدين. وإنهم ما استسرّوا عنّى حينًا من الاحيان، وأعلم أنهم هم المفسدون وأئمّة العدوان بيد أنى كنتُ أظن أنهم يتعلّقون بأهداب صالحٍ، ويُحسَبون مِن وُلْدِه مع كونهم كمثل

उसकी क़ौम का खण्डन लिखें और उनकी तामसिक वृत्ति का खण्डन करें और उनको दरिंदगी तथा बुरी भावनाओं का दण्ड चखाएं। और समस्त कार्य नीयतों के साथ हैं और ख़ुदा तआला जानता है जो कुछ पृथ्वी और आकाश में है और हमने प्रत्येक बात की बुनियाद संयम और ईमानदारी पर डाली है और हमने अश्लीलता से बचाव किया है और प्रत्येक वृक्ष फल से पहचाना जाता है। और हम उस खन्नास के फ़ित्ने में पड़ने से ख़ुदा तआला की शरण मांगते हैं। और हम निश्चित ज्ञान से जानते हैं कि वह नीच स्वयं इस गाली और अपमान का कारण नहीं अपितु उस ग़ज़नवियों में से एक और शैतान ने सिखाया है और निस्सन्देह कि यही लोग उसके फ़ित्ने के कारण हैं और उसकी शाख के उगाने वाले और उसकी शाख़ की जड़ हैं और उसके शोले के भड़कने का ईंधन हैं और उसकी आवाज़ और आर्तनाद के कारण बात के समय जूतों की चर्चा करते हैं जैसे वे जूतों के इच्छुक हैं और उनका सर फ़रियाद कर रहा है ताकि जूतों के साथ कूटा जाए और अब्दुल हक़ इस बुरे स्थान पर खड़ा नहीं हुआ परन्तु इसके बाद की मेरी विशेषताएं उसको इन लोगों ने दोषों की तरह दिखाईं तो क़यामत तक उन पर अफ़सोस है कि उन्होंने अपने बाप की तरह सलामती के मार्ग का अनुकरण नहीं किया और योग्यता को त्याग दिया

طالحٍ، فدرأتُ السيئات بالحسنات، ونافستُ فی المصافاة. و كنتُ أصبر على ما آذونی بالجور والجفاء ، وأرجو أنهم ينتهون من الغلواء ، حتی إذا بلغ شرّهم إلى الانتهاء ، وما انتهوا من النُباح والعُواء ، فعرفت أنهم المردودون المخذولون، والاشقياء المحرومون. فهناك أردتُ أن أستفلّ غَرْبَهم، ونذيقهم حربَهم، ولا نُجاوز فی قولنا حد الديانة، بل نردّ إليهم كلماتهم كردّ الإمانة.

أيها الغویّ المسمّی بعبد الجبّار، لِمَ لا تخشی قهر القهّار؟ أتتكبر بلحيةٍ كثّة، أو مَشيخةٍ مجتثّة؟ أتُخفی نفسك كالنساء ، وتُغری علينا جَرْوَك للإيذاء ؟ أيستسنی الناس بهذا الكيد شأنَك، أو يستغزرون عرفانك؟ كلّا۔

और वे कभी मुझ से छुपे नहीं और मैं जानता हूं कि वही उपद्रव और अत्याचार के इमाम है परन्तु मैं सोचता था कि वे लोग एक सदाचारी के दामन से सम्बद्ध हैं और उसकी सन्तान में से गिने जाते हैं इसके बावजूद कि वे एक दुराचारी के समान हैं तो मैंने बुराई का बदला नेकी के साथ दिया और दोस्ती में दिलचस्पी की और मैं उनके ज़ुल्म और बेवफाई पर सब्र करता रहा और आशा रखता था कि वे अपनी हद से बाहर जाने से रुक जाएंगे यहां तक कि जब उनकी बुराई चरम सीमा तक पहुंच गई और बकवास करने से नहीं रुके तो मैंने जान लिया कि वे धिक्कृत और तिरस्कृत हैं और भाग्यहीन तथा वंचित हैं तो उस समय मैंने इरादा किया कि उनकी तेज़ी को दूर करूं और उनकी लड़ाई का स्वाद उन्हें चखाऊं और हम अपनी बात में ईमानदारी से आगे कदम नहीं रखते अपितु हम उनकी बातों को अमानत की तरह उनको वापस करते हैं।

हे गुमराह अब्दुल जब्बार नामक! तू ख़ुदा के कोप से क्यों नहीं डरता क्या तू घुनदार दाढ़ी के साथ अहंकार करता है या तेरा शेख़ होने पर गर्व है। क्या तू स्वयं को स्त्रियों की तरह छुपाता है और अपने जब्र को हम पर छोड़ता है क्या इस छल के साथ लोग तेरी प्रतिष्ठा को ऊंचा समझेंगे ताकि तेरी पहचान बड़ी

بل هو سببٌ لهوانك، وعلّة موجبة لخسرانك. تحسب نفسك من أخائر الصلحاء ، وتسلك مسلك الاشقياء والسفهاء. تعيش عيشة الفاسقين، ثم ترجو أن تُعَدّ من الصالحين. وإذا زرعتَ حَبَّ السمّ المبيد، فمن الغباوة أن تطمع اجتناء الثمر المفيد. انظرْ نظرة في أعمالك، ولا تُهلِكْ نفسك بسوء أفعالك.

أيها الغويّ! الوقت وقت التوبة، لا أوان الجدال والخصومة. وقد تجلّى ربّنا ليُظهر دينه على الاديان، وقد أشرقت شمس الله لإزالة ظلام العدوان. فالآن ينظر الله إلى كلّ مكذّب بعين غضبَى، فكيف تظن نفسك من أهل الصلاح والتقوى؟ صدء بالك، وأرداك أعمالك ومالك، حتى أحالت نَخْوتُك حليتَك، وغَيَّرتْ عَذِرةُ باطنك صورتَك.

समझी जाएगी कदापि नहीं अपितु वह तेरे अपमान का कारण है और तेरी क्षति का कारण है तू स्वयं को बहुत नेक लोगों में से समझता है और अभागों के मार्ग पर चलता है तू पापियों की तरह जीवन व्यतीत करता है फिर अभिलाषा रखता है कि सौभाग्यशालियों में से गिना जाए और यद्यपि कि तू ने हर जगह ज़हर का बीज बोया अत: यह मूर्खता है कि तू लाभप्रद फल चुनने की आशा रखे अपने कर्मों को तनिक देख और बुरे कामों से स्वयं को तबाह न कर।

हे गुमराह! यह समय तौब: का समय है न कि युद्ध और शत्रुता का समय और हमारे रब्ब ने झलक दिखाई है ताकि अपने धर्म को अन्य धर्मों पर विजयी करे और ख़ुदा का सूर्य अन्धकारों को दूर करने के लिए चमक उठा है इसलिए ख़ुदा तआला इस समय प्रत्येक झुठलाने वाले की ओर प्रकोप की दृष्टि से देख रहा है तो तू स्वयं को सुधारकों में से क्योंकर समझता है तेरा दिल ज़ंग पकड़ गया और तेरे कार्यों तथा माल ने तुझे मार दिया यहां तक कि तेरे अहंकार ने तेरी शक्ल को बदल डाला और तेरी आंतरिक पवित्रता ने तेरी सूरत को परिवर्तित कर दिया। अत: जिसने तेरे नक्श-व-निगार को गहरी नज़र से देखा और तेरे चेहरे की पड़ताल के लिए आंख को छोड़ा वह जान लेगा कि तू एक भेड़िया है न कि

فمن أمعنَ النظر فى وشمك، وسَرّح الطرف فى مَيْسمك، عرف أنّك كالسِّرحان، لا من نوع الإنسان، ومن الاشرار، لا من الصلحاء الاخيار، فاتق الله ولا تكن من الظالمين.

انظُرْ ما هذا المسلك الذى سلكتَ، واتق فإنك هلكتَ. أُوتيت الدنيا فما شكرتَ، وذُكّرت فما تذكّرت. تُبْ أيها الغوىّ اللئيم، وقد شِخْتَ واستشنَّ الاديمُ، وقرُب أن يتأوّد القويم، وحان الوقت الوخيم. ما لك لا تعنو ناصيتك لربّ العباد، ولا تترك طرق الخبث والفساد؟ ألا تؤمن بيوم المَعاد، أو تنكر وجود الله القادر على الإعدام والإيجاد؟ فأصلِحْ نفسك قبل أن تأكلك الدودُ، ويجيئك الاجل الموعود، وبادِرْ لما يحسن به المآل، قبل أن يأخذك الوبال، وحَيَّهَلْ بالتوبة قبل أن تنخر عظمك فى التربة، فإن

इन्सान का प्रकार और दुष्टों में से है न कि नेकों और सदाचारियों में से। तू ख़ुदा से डर और अत्याचारियों में से न हो।

देख यह क्या तरीक़ा है जो तू ने अपना लिया और डर कि तू मर गया तुझे दुनिया दी गई तो तू ने धन्यवाद नहीं किया और तुझे स्मरण कराया गया तो तू ने स्मरण नहीं किया तौब: कर। हे गुमराह और तू बूढ़ा हो गया और चमड़ा पुराना हो गया और समय निकट आ गया कि पीठ टेढ़ी हो जाए और भारी समय निकट आ गया। क्या कारण है कि तेरा माथा ख़ुदा के लिए नहीं झुकता और तू पाप तथा उपद्रव के तरीकों को नहीं छोड़ता क्या तू क़यामत के दिन पर ईमान नहीं लाता या तू ख़ुदा तआला के अस्तित्व पर ईमान नहीं रखता जो मारने और पैदा करने पर सामर्थ्यवान है। अत: इससे पूर्व कि तुझे कीड़े खा लें और मौत आ जाए अपने नफ़्स का सुधार कर और उन चीज़ों की प्राप्ति के लिए शीघ्रता कर जिससे अंजाम अच्छा हो जाए इससे पूर्व कि तुझे विपदा पकड़ ले। और तौब: की ओर जल्दी कर इससे पूर्व की कब्र में तेरी हड्डी गल सड़ जाए और ख़ुदा तआला तौबा: करने वालों और पवित्रता ढूंढने वालों को दोस्त रखता है और ख़ुदा की वसील: (माध्यम) दो ही चीज़ें हैं तक़्वा (संयम) और हृदय की

الله يحبّ التوابين ويحبّ المتطهرين. وإنما الوُصْلة إلى الرحمٰن۔ التقوىٰ وتطهير الجنان. فاتّق الله ولا تكن من المجترئين.ثم نرجع إلى عبد الحق، الذى تكبر ووثب كالبقّ، فاعلم يا عدوَّ الصالحين، ومكفِّرَ المؤمنين، إنك آذيتنى، فقاتلَك الله كيف آذيتنى، وعاديتنى، فتبًّا لك لما عاديتنى. أما كنتُ من المهلِّلين المسلمين؟ أما كنتُ من المصلّين الصائمين؟ فكيف كفّرتنى قبل تفتيش الاحوال، وأفحَتَ دمَ الصدق بأباطيل المقال؟

وعزوتَ فتح المباهلة إلى نفسك الامّارة، مع أنّ الله أذلّك وأراك سوء العاقبة۔ وكان مرام دعائك المتهالك، أَنْ يجعلنى الله كالهالك، فسوّد الله وجهك وأسلمَك إلى لَحْدِ الذلّة، وأَدخلك فى جَدَثٍ أضيقَ مِن سمّ الإبرة، وأكرمنى إكرامًا كثيرا بعد المباهلة، وأعزّنى وخصّنى بأنواع النعمة، حتى

पवित्रता। अत: ख़ुदा से डर और दिलेरों में से मत हो फिर हम अब्दुल हक़ की ओर रुजू करते हैं जिसने अहंकार किया और मच्छर की तरह कूदा है तो हे सदाचारियों के शत्रु और मोमिनों के काफ़िर कहने वाले तुझे मालूम हो कि तू ने मुझे दुख दिया अत: ख़ुदा तुझे मारे। तू ने यह कैसा दुख दिया और तू ने मुझ से दुश्मनी की तो ख़ुदा तुझे तबाह करे। तू ने यह दुश्मनी क्यों की क्या मैं कलिमा गो मुसलमान नहीं था?

क्या मैं नमाज़ पढ़ने वालों और रोज़ा रखने वालों में से नहीं था तो तू ने असल सच्चाई की पड़ताल से पहले मुझे काफ़िर कैसे ठहरा दिया और झूठी बातों के साथ तूने सच्चाई का खून किया।

और तू ने मुबाहिले की विजय को अपनी ओर सम्बद्ध किया इस बात के बावजूद कि ख़ुदा ने तुझे अपमानित किया और तुझे बुरा अंजाम दिखाया और तेरी बहुत-बहुत दुआ का उद्देश्य यह था कि ख़ुदा मुझे मरने वाले की तरह करे तो अल्लाह ने तेरा मुंह काला किया और अपमान की कब्र में तुझे सोंपा और ऐसी कब्र में तुझे दाखिल किया जो सुई के नाके से अधिक तंग थी। और मुबाहले के बाद मुझे बड़ी महानता प्रदान की और नाना प्रकार की नेमत से

ما انقطع آثارها إلیٰ هٰذا الوقت من الحضرة، و إن فيها لآ يات للمتوسّمين. وأنت رأيت كلَّ رفعتی وعلائی، ثم انتصبتَ بترك الحياء بسبّی و إزرائی. و كيف نأمن حصائد ألسن الفجّار، وما نجا الرسل كلهم من كَلِمِ اللئام الكفّار۔ ولكن عليك أن تعی منّی أن غوائل كلامك عليك، وأنّ رأسك تليَّن بنعليك، وما ظلمتنا ولكن ظلمت نفسك يا أجهل الجاهلين.

أيها الجهول! تحارب ربك ولا تخشاه، وتختار الفسق ولا تتحاماه۔ كلما تواضعتُ استكبرتَ، و كلما أكرمتُ حقّرتَ.

وما كان هذا إلَّا لضيق ربعك، وقساوة زرعك، ثم كان قدرُ الله فيك افتضاحك، فما اخترتَ طريقًا كان فيه صلاحك، وما أقصرتَ عن السبّ والإيذاء ، وآذيتنی فبلّغت الامر إلی الانتهاء ، والآن أكتب جواب

मुझे विशिष्ट किया यहां तक कि इस समय तक उसके आसार समाप्त नहीं हुए और इसमें विचार करने वालों के लिए निशान हैं और तू ने मेरी समस्त बुलन्दी को देखा फिर शर्म को छोड़कर तू मुझे गालियां देने में व्यस्त हो गया। और हम दुष्कर्मियों की जीभ से कैसे मुक्ति पा सकें। तथा किसी रसूल ने कृपणों की बातों से मुक्ति नहीं पाई परन्तु तुझ पर अनिवार्य है कि मेरी यह बात स्मरण रखे कि तेरे कलाम की विपत्तियां तुझ पर हैं और तेरा सर तेरे ही जूतों के साथ नरम किया जाएगा और तू ने हम पर अत्याचार नहीं किया अपितु अपने नफ़्स पर अत्याचार किया।

हे मूर्ख तू अपने रब्ब से लड़ाई करता है और नहीं डरता और दुष्कर्म को ग्रहण करता है और परहेज़ नहीं करता। मैंने जितनी आवभगत की तू ने घमंड किया और मैंने जितना आदर किया तू ने तिरस्कार किया।

और यह सब तेरी तंग दिली और हृदय की कठोरता के कारण हुआ। तेरे ख़ुदा का प्रारब्ध यह था कि तू बदनाम हो। तो तूने कोई सुधार का तरीका ग्रहण नहीं किया और तू ने कोई दक़ीक़: गाली और कष्ट का शेष नहीं छोड़ा और तू ने मुझे दुख दिया और बात को चरम सीमा तक पहुंचा दिया और अब मैं तेरे

اعتراضاتك، ليعلم الناس تعصّبك وجهلا تك، ولتستبين سبيل المجرمين. فمنها ما هذيتَ فی قصة آتم، وترکتَ الحیاء واخترت الإفك الاعظم. وقد علمتَ أن آتم قَدْ مات، وتمّ فیه نبأُ اللّٰه فلحِق الاموات، وصدّق اللّٰه فیه قولی وأخزی القتّاتَ، فلا تغضّ عینك کالعمین. وأمّا ما تکلمتَ فی موته بعد المیعاد، فهذا حُمقك یا قُضاعةَ العناد. أیّها الجهول! کان موت "آتم" مشروطًا بعدم الرجوع، وقد ثبت أنه خاف فی المیعاد وزجّیٰ أوقاته بالخوف والخشوع، فلما انقضی میعاده وعاد إلی سیرة الإنکار، أخذه نکال اللّٰه ومات فی سبعة أشهر من آخر الاشتهار.

ومکَر النصاری مکرًا کُبّارًا، واشتهروا خلاف ما وارا، وأمّا "آتم" فما تألّی وما بارا. وقد کان ذکرُ مکرهم فی "البراهین"، وکان فیها ذکرُ فتنتهم

आरोपों का उत्तर लिखता हूं ताकि लोग तेरी मूर्खता से अवगत हों। और ताकि अपराधियों का मार्ग खुल जाए। अत: एक वह आरोप है जो तू ने आथम के किस्से में बकवास की और धर्म को छोड़कर झूठ बांधा है। और तू जानता है कि आथम मर गया और इसमें ख़ुदा की ख़बर पूरी हुई और वह मुर्दों में जा मिला और इसमें ख़ुदा ने मेरे कथन को सच्चा किया और आलोचना करने वालों को अपमानित किया। अत: अंधों की तरह आंखें बन्द मत कर। और तू ने जो कुछ वार्तालाप किया है कि वह मीआद के बाद मरा है तो यह तेरी मूर्खता है। हे वैर के कुत्ते हे मूर्ख! आथम की मृत्यु रुजू न होने के साथ शर्त वाली थी और सिद्ध हो गया कि वह मीआद में भयभीत रहा और अपने समयों को भय में गुज़ारा। तो जब मीआद गुज़र गई और उसने इन्कार की आदत की ओर रुजू किया तो ख़ुदा के अज़ाब ने उसे पकड़ा और अन्तिम विज्ञापन से सात माह में मर गया।

और नसारा ने बड़ा छल किया और इस बात के विरुद्ध प्रसिद्ध किया जो आथम ने छुपाया परन्तु आथम ने न क़सम खाई और न मैदान में आया और नसारा के छल की चर्चा बराहीन अहमदिया में मौजूद है और उसमें इस उड़ने वाले फ़ित्ने की चर्चा थी और उस परस्पर बुने हुए झूठ का घटना से पूर्व वर्णन

المتطائرة،وبيان فِريتهم المنسوجة،قبل ظهور ذالك الواقعة.فانظر إلى دقائق علم الله الخبير، وحكم الله اللطيف القدير، ولا تهذِ كالمستعجلين. ألا ترى إلى شريطة كانت فى نبأ "آتم"، والله أحقُّ أن يوفى شرطَه الذى قدّم، فاتّق الله واجتنبْ بهتانًا أعظم. ألا تُنزّه نفسك عن نقض الشرائط يا عدوّ الاخيار، فكيف لا تُنزِّه السبّوحَ القدّوس عن تلك الإقذار؟ وتعلم أنّ "آتم" ما تفوّهَ بلفظة فى أيام الميعاد، وترك سيرته الاولىٰ وما أظهر ذرّة من العناد، بل أظهر رجوعه من الاقوال والافعال، والحركات والسكنات والاحوال، وما أثبتَ ما ادّعٰى،مِن صولِ الحيّة وغيرها من البهتانات الواهية وما تألّىٰ، بل أعرض وولّىٰ، وشهدقوم من الاشهاد،أنه أنفدأيّام الميعاد،بالخوف والارتعادثم إذا أنكر بعد الاشهر المعيّنة،فأخذه صولُ المَرَضة،وأوصله الموت إلى التربة.فلو كان هذا

था। अत: ख़ुदा के बारीक ज्ञान पर दृष्टि डाल और शक्तिशाली तथा रहस्य की हिकमतों को देख और जल्दबाज़ों की तरह बकवास मत कर। क्या तू उस शर्त की ओर नहीं देखता जो आथम की भविष्यवाणी में थी। और ख़ुदा सबसे अधिक यह अधिकार रखता है कि अपनी शर्त को जो पहले वर्णन कर दी पूरा करे। अत: ख़ुदा से डर और झूठे आरोप से बच। क्या तू अपने नफ़्स को शर्तों के तोड़ने से पवित्र नहीं समझता। तो किस प्रकार उस पवित्र और पुनीत को इन अपवित्रों से लिप्त करता है। और तू जानता है कि मीआद के दिनों में आथम कोई बात जीभ पर नहीं लाया और पहले आचरण को उसने त्याग दिया और थोड़ी सी भी शत्रुता व्यक्त न की अपितु अपने रुजू को कथनों और कार्यों तथा गतिविधियों और क्षमताओं एवं हालतों से प्रकट किया और सांप के आक्रमण इत्यादि आरोपों को वह सिद्ध न कर सका और क़सम न खाई अपितु किनारा किया और मुंह फेरा और एक कौम ने गवाहों में से गवाही दी कि उसने मीआद के दिनों को डर और लर्ज़े में गुज़ारा।

फिर जब निर्धारित दिनों के बाद इन्कारी हो गया तो उसे रोग के आक्रमण ने पकड़ा और मौत ने उसे कब्र तक पहुंचाया अत: यदि यह इन्कार मीआद के

الإنكار فی المیعاد، لمات فیه بحکم ربّ العباد، وما کانَ اللّٰہ أن یأخذہ مع خوف استولیٰ علی مُھْجته، ولا یبالی ماذکر فی شریطته، إنه لا یُخلِف ماوعد، ولا یطوی مامھَد، وإنه لا یظلم الناس حتی یظلموا أنفسھم، وإنه أرحم الراحمین.

وإن کنتَ لا تنتھی من التکذیب کاللئام، وتظنّ أنّ الفتح کان للنصاری لا للإسلام، فعلیك أن تُقسِم باللّٰہ ذی العزّۃ، وتشھد حالفا أنّ الحق مع النصاری فی ھذہ القضیّة، وتدعو اللّٰہ أن یضرب علیك ذلّةً وخزیًا من السماء، إن کان الامر خلاف ذلك الادّعاء. فإن لم یُصبك بعد ذالك ھوان وذلّة إلیٰ عام، فأُقِرُّ بأنی کاذب وأحسبك کإمام.

وإن لم تُقسِم ولم تنتهِ فلعنة اللّٰہ علیك یا عدوّ الإسلام. إنّك ترید عزۃ نفسك لا عزۃ خیر الانام. وأمّا ماذکرت أنّ النصاری ومثلك من الیھود، لعنونی

अन्दर होता तो आथम मीआद के अन्दर ही मरता और ख़ुदा तआला ऐसा न था कि बावजूद इसके कि आथम की जान पर भय विजयी रहता फिर भी उसको पकड़ लेता और अपनी शर्त की कुछ परवाह न करता। वह अपने वादे के विरुद्ध नहीं करता और जो बिछाया उसे नहीं लपेटता वह लोगों पर अत्याचार नहीं करता जब तक वह स्वयं अत्याचार न करें और वह समस्त दयावानों से अधिक दयावान है।

और यदि तू झुठलाने से नहीं रुकता और सोचता है कि विजय नसारा के लिए हुई न कि इस्लाम के लिए तो तुझ पर अनिवार्य है कि तू ख़ुदा तआला की क़सम खा जाए और क़सम खा कर कहे कि इस मुकद्दम: मे सच नसारा के साथ है और ख़ुदा तआला से दुआ करे कि वह आकाश से अपमान की मार उतारे यदि वस्तु स्थिति घटना के विरुद्ध हो तो यदि इसके पश्चात एक वर्ष तक तेरा अपमान और बदनामी न हुई तो मैं इक़रार कर लूंगा कि मैं झूठा हूं और तुझे इमाम की तरह जानूंगा।

और यदि तू क़सम न खाए तथा न रुके तो तुझ पर लानत। हे इस्लाम के शत्रु! तू अपने नफ़्स का सम्मान चाहता है न कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का। परन्तु यह जो तू ने वर्णन किया कि नसारा और तुझ जैसे यहूदियों ने आथम के मुकदमे में मुझ पर लानत की और धिक्कृत समझा तो हे विकृत

في أمر "آتم" وحسبوني كالمردود، فاعلم أيها الممسوخ أن الحُكم على الخواتيم، و كذالك جرت عادة الله من القديم۔ إن أولياء الله و أصفيائه يُؤذَون في ابتداء الحالات، و يُلعَنون و يُكفَّرون و يُذكَرون بأنواع التحقيرات، ثم يقوم لهم ربهم في آخر الامر، و يبرّئهم مما قالوا و ينجّيهم من ألسن الزمر، و كذالك يفعل بالمحبوبين۔ أما قرأت أن العاقبة للمتّقين؟ فالفرح بمبدأ الامر من سِيَرِ الفاسقين، و اللعنة التي تُرسَل إلى أهل الفلاح و السعادة، تُرَدّ إلى اللاعنين، فتظهر فيهم آثار اللعنة۔ فالإبشار بمثل ذلك اللعن ندامة في الآخرة، و جعلُه أمارة الفتح من أمارات الحمق و السفاهة، بل الفتح فتحٌ يُبديه الله لعباده في مآل الامر و العاقبة، و كذٰلك الخزي خزيُ الخاتمة، و لا اعتبار لمبادئ الامور، بل الحكم كله على آخر المصارعة، و عليه مدار العزة و الذلّة، و الفتح و الهزيمة۔ و كلّ لعنٍ لم يُبْنَ

हो चुकी समझ कि आदेश अन्त पर होता है और इसी प्रकार हमेशा से ख़ुदा की आदत जारी है निस्सन्देह उसके वली और चुने हुए लोग प्रारंभ में सताए जाते हैं और लानत किए जाते हैं और काफ़िर ठहराए जाते हैं और भिन्न-भिन्न प्रकार का तिरस्कार किया जाता है फिर उनका रब्ब उनके लिए खड़ा हो जाता है और उनको विरोधियों के कथन से बरी कर देता है और इसी प्रकार वह प्रेमियों से करता है। क्या तू ने नहीं पढ़ा कि अंजाम अंततः संयमियों के लिए है। इसलिए प्रारंभिक परिस्थितियों से प्रसन्न होना दुराचारियों के आचरण में से है और वह लानत जो कल्याणकारी और नेक लोगों की ओर भेजी जाती है वह लानत करने वालों की ओर वापस भेजी जाती है तो उनमें लानत की निशानियां प्रकट हो जाती हैं अतः ऐसी लानतों के साथ खुश होना अंततः शर्मिंदा होना है और उसे विजय की निशानियों में से ठहराना मूर्खता और नीचता की निशानियों में से है अपितु विजय वह विजय है जिसे ख़ुदा तआला अपने बन्दों के लिए अंजाम और मामलों की समाप्ति पर प्रकट करता है। तथा इसी प्रकार अपमान वह है जो अंजामकार अपमान हो और प्रारंभिक बातों का कुछ विश्वास नहीं अपितु समस्त आदेश कुश्ती के अंजाम पर है। और उस पर सम्मान, अपमान, विजय और पराजय का मदार है और प्रत्येक लानत जिसका आधार सही घटना

على الواقعة الصحيحة، فهو بلاء على اللاعن وعذاب عليه فى الدنيا والآخرة. والعاقلون يتدبّرون الخاتمة والمآل، والسفيه يفرح بمبادى الامر ويخدَع الجُهّال. فانظر الآن وتطلّب أين "آتم" عمّك الكبير؟ فلو لم يمت فأين ذهب أيها الشرير؟ وتعلم أنّ الله ذكر شرطًا فى إلهامه فرعاه، فأخّر موت "آتم" لخوف عراه، وأكمل شرط نبئه ووفّاه. ثم إذا تمرّد أرداه، فتمّ ما قال ربّنا وفاح ريّاه، وأذلّ الله من كذّب وأخزاه، وحصحص الحق وبورك مغناه، فهذه شقوتك إن كنت ما تراه.

ياقرد غزنى اين آتم سل عشيرته	هَل مَاتَ اَوْ تُلْفِيهِ حَيًّا بين احباب
هل تَمّ ما قلنا من الرحمٰن فى الخصم	هَل حَان اَوْ فِى حَيْنِهٖ شك لمرتاب
ان كُنْتَ تُبصر ايّها المحجوبُ من بخل	فانظر الى الشرط الذى اَلْغيت لعتابى

पर नहीं वह लानत करने वाले पर बला और दुनिया तथा आख़िरत में उस पर अज़ाब है और बुद्धिमान लोग अन्त और अंजाम को सोचते हैं और मूर्ख प्रारंभिक परिस्थितियों से प्रसन्न होता है और मूर्खों को धोखा देता है। अत: देख और ढूंढ कि इस समय आथम तेरा चाचा कहां है। और यदि नहीं मरा तो हे दुष्ट वह कहां गया? और तू जानता है कि ख़ुदा तआला ने अपने इलहाम में एक शर्त वर्णन की उसका ध्यान रखा। अत: इसलिए कि आथम डरा कि उसकी मौत में विलम्ब डाल दिया और अपनी शर्तों को पूरा किया फिर जब आथम उद्दण्ड हो गया तो उसे मार दिया और हमारे रब्ब का कथन पूरा हो गया और उसकी सुगंध फैल गई और ख़ुदा ने झुठलाने वाले को अपमानित किया और बदनाम किया और सच प्रकट हो गया और उसका घर मुबारक किया गया अत: यह तेरा दुर्भाग्य है यदि तू इसे नहीं देखता।

हे ग़ज़नी के बन्दर! आथम कहां है और कबीले से पूछ क्या वह मर गया या तू उसके दोस्तों में जीवित पाता है।

क्या इस शत्रु में हमारे ख़ुदा की बात पूरी हो गई क्या वह मर गया या उसके मरने में सन्देह करने वाले को सन्देह है।

हे महजूब यदि तुझे कंजूसी के कारण कुछ दिखाई देता है तो भविष्यवाणी की

قَدمَاتَ آتم ايّها اللّعّان من فسق	اِخْسَأْ فانّ اللّٰه صدّقنى واحبابى
انظر الٰى نبأ تجلّى الاٰن كذكاء	اردى المهيمن عجل اَهْلِ الويد بعذاب
للصدق فيه لارباب النُهى ارج	يشفى الصدور و يروى قلب طُلَّاب
عَيْنٌ جرت لرياض دين اللّٰه تونسها	عين الرجال ولكن كُنتَ ككلاب

ثم إن كنتَ تجعل لعنة الخَلق دليلا علٰى سخط ربّ العالمين، ففكِّرْ فى "عبد اللّٰه" الذى تحسبه من الصالحين، كيف انصبّ عليه مطر الذلّة والهوان واللعنة، وكيف صار ذليلا محقَّرًا مِن أيدى العلماء وعامّة البريّة، وكيف أخرجوه من بلاده كالكَفَرة الفَجَرة، حتّٰى اشتدّت عليه الاهوال، وصفرت الراحة ونُهب المال، وأعوَلَ العيال، وعُذِّب بالعذابالموقع،

उस शर्त को देख जिसकी तू ने उपेक्षा की है।

हे लानत करने वाले आथम मर गया दूर हो कि ख़ुदा ने हमारी बातें पूरी कीं

उस भविष्यवाणी की ओर देख जो अब सूर्य की तरह पूरी हो गई ख़ुदा ने हिन्दुओं के बछड़े को अज़ाब के साथ क़त्ल किया।

इस भविष्यवाणी में सच्चाई की एक सुगंध है जो सीनों को शिफ़ा प्रदान करती है और हृदय को तृप्त करती है।

यह झरना धर्म के बाग़ के लिए जारी हुआ है इसको मर्दों की आंख देखती है परन्तु तू कुत्तों के समान था।

फिर यदि तू प्रजा की लानत को ख़ुदा के प्रकोप का प्रमाण ठहराता है तो अब्दुल्लाह के हाल में सोच जिसे तू सदाचारियों में से समझता है उस पर किस प्रकार अपमान और लानत की वर्षा पड़ी और किस प्रकार उलेमा के हाथ से अपमानित और तिरस्कृत हुआ और क्योंकर उसे इस देश में से काफ़िरों की तरह निकाल दिया यहां तक कि भय उस पर विजयी हुआ और हाथ खाली हो गया और माल लूटा गया और वंश फ़रियाद करने लगा और ऐसे अज़ाब से अज़ाब दिया गया जो उसे बुरा मालूम होता था और इस मुहताजी के साथ पीसा गया जो घायल और ज़ख़्मी करने वाली थी और एक लम्बे समय तक पैर घिसाते फिरना उसके लिए जूती के समान था

ودُقِّق بالفقر المُوقع. وطالما احتذى الوَجَى، واغتذَى الشَجَى، واستبطن الجَوَى. وكذٰلك أنفدَ عمرَه فى الكُرَب، وانتياب النُوَب، ثم هاجر إلى الهند مخذولًا ملومًا، وعاش مطعونًا مكلومًا. ما زال به قطوب الخطوب، وحروب الكروب، ولعنُ اللاعنين، وطعن الطاعنين، حتى تواترت المِحَنُ، وتكاثرت الفتن، وأقوَى المجمع، ونبا المرتَع. وكان يُداس تحت هذه الشدائد حتى فاجأه الموت، وأخذه كالصائد الفوتُ، وأدخله فى الزمر الفانيين. فما ظنّك أكان هو من الصلحاء أو من الفاسقين؟

فثبت أنّ لَعْن الفاسقين وأهل العُدوان، لا يدلّ على سخط الرحمٰن، وإيذاء المفسدين وأهل الشرور، لا ينقُص مراتب أهل العمل المبرور، بل يكون لعنهم وسيلةَ رُحمِ حضرة الكبرياء، ووُصلة الاجتباء والاصطفاءوكذلك بشّرنى ربى فى تلك الفتنة، وإن شئتَ فارجع إلى "البراهين الاحمدية" وانظُرْ

और ग़म खाना उसका भोजन था और भूख को गुप्त रखता था और इसी प्रकार उसने बेचैनियों में जीवन व्यतीत किया और निरन्तर कष्टों में समय गुज़ारा फिर हिन्द देश की ओर ऐसी हालत में हिजरत की कि निन्दाओं का निशाना था और तानों और ज़रक़ी होने की हालत में जीवन व्यतीत किया और हमेशा घटनाओं से चिड़चिड़ा होना उसका भाग्य था और बेचैनियां उस से लड़ रही थीं और लानत करने वालों की लानत और कटाक्ष करने वालों के कटाक्ष। यहां तक कि मेहनतें लगातार हूईं और फ़ित्ने बहुत हुए और समूह ख़ाली हो गया और चरागाह दूर जा पड़ी और इन संकटों के नीचे कुचला जा रहा था कि सहसा उसे मौत आ गई और शिकारी की तरह उसे मौत ने पकड़ लिया और उसे फ़ना होने वालों में दाखिल कर दिया तो तेरा क्या गुमान है कि वह नेक था या व्यभिचारी?

अत: सिद्ध हुआ कि व्यभिचारियों और अत्याचारियों की लानत ख़ुदा तआला के प्रकोप को प्रमाणित नहीं करती और उपद्रवियों का दुख देना नेक कार्य करने वालों के पदों को कम नहीं करता बल्कि उनकी लानत ख़ुदा तआला की दया का माध्यम हो जाती है और पवित्रता का कारण बन जाती है। इसी प्रकार आथम

كيف أخبر ربّى فيها عن هذه القصة، وأنبأ مِن نبأ "آتم" وفتن النصارىٰ ويهود هذه الملّة، وأخبر أن النصارى يمكرون بك فى الازمنة الآتية، ويهيّجون فتنة عظيمة ويكونون معهم علماء هذه الامّة. فهذه شهادة من الله قبل هٰذه الواقعة، فهل أنتم تؤمنون بشهادات حضرة العزّة؟ وإن كنتَ لا تترك الآن ذكر اللعنة، ففكِّرْ فى هذا النبأ وانظُرْ مَن لعَنه الله فيه ومَن جعله موردالرحمة. وانظر أنّه كيف أخبر أنّ النصارىٰ يمكرون ويأتون بالفِرية، ثم يفتح الله ويجعل الكرّة لاهل الحق بإراءة الآية الواضحة، وينصر عبده ويُحقّ الحقّ ويُبطل الباطل بالصولة العظيمة، ويخزى قومًا كافرين. فهذه الانباء التى كُتبَت فى "البراهين" من الله العلّام، كانت مكنونةً فيها لهذه الايام، ليُتمّ الله حجّته على الخواص والعوام، ولتستبين سبيل المجرمين.

के फ़ित्ने में मुझे मेरे ख़ुदा ने खुशख़बरी दी और यदि चाहे तो पुस्तक बराहीन अहमदिया की ओर रुजू कर और देख किस प्रकार ख़ुदा ने इसमें उस किस्से की खबर दी और उस भविष्यवाणी की खबर दी जो आथम के बारे में थी और नसारा (इसाईयों) के फ़ित्नों और इस मिल्लत के यहूदियों के फ़ित्ने की ख़बर दी कि नसारा (इसाईयों) भविष्य में तुमसे एक छल करेंगे और एक बड़ा फ़ित्ना खड़ा करेंगे और उनके साथ मौलवी हो जाएंगे तो इस घटना से पूर्व ख़ुदा की यह गवाही है अत: क्या तुम ख़ुदा की गवाहियों पर ईमान लाते हो? और यदि तू अब भी लानत की चर्चा नहीं छोड़ता तो इस ख़बर पर विचार कर और देख कि इसमें किस को ख़ुदा ने लानती ठहराया और किस को दया का पात्र ठहराया और देख कि उसने किस प्रकार सूचना दी कि नसारा छल करेंगे और झूठ बांधेंगे फिर ख़ुदा विजय देगा और सच्चों की बारी लाएगा और स्पष्ट निशान दिखाएगा और अपने बन्दे की सहायता करेगा और झूठ को बड़े आक्रमण से मिटा देगा और काफ़िरों की क़ौम को अपमानित करेगा अत: यह ख़बरें जो बराहीन अहमदिया में ख़ुदा तआला की ओर से लिखी गईं इन दिनों के लिए छुपी हुई थीं ताकि अल्लाह तआला अपनी हुज्जत को विशेष और सामान्य लोगों पर पूरा करे। और ताकि

أيّها المسارعون إلَى الحرب والخصام، والسّاعون من النور إلى الظلام، ما لكم لا تتفكّرون فى الكلام، ولا تتّقون قهر الله ذى الجلال والإكرام؟ أ تُتركون فى دنياكم ولا ترون وجه الحِمام؟ أآثرتم عيشة الحياة الدنيا، أو نسيتم يوم الإثام والعقبٰى؟ توبوا توبوا، وإلى الله ارجعوا، فإنّه لا يُحبّ قومًا فاسقين.

وممّا ادّعيتَ يا مَن أضاع الدين، أنك قلتَ إنى أناضل فى العربيّة كالمرتجلين، وأستملى كالأدباء الماهرين، وأكون من الغالبين. وَيْحَك يا مسكين، لِمَ تُخزى اسم دنياك وقد ضاع الدين؟ ألستَ الذى أعرفك من قديم الزمان؟ غبيُّ الفطرة سفيه الجَنان، كثير الهذيان قليل العرفان، الموصوم بمَعرّة لَكَنِ اللسان؟ أتصارع بهذه القوة الفاتكَ البازل، وتحارب الكَمِىَّ الجازل؟ كلا بل تريد أن تُرى الناس وَصْمتك، وتشهد علىٰ جهلك أُبْنتك،

अपराधियों का मार्ग खुल जाए।

हे वे लोगो जो युद्ध और लड़ाई की ओर दौड़ते हो और प्रकाश से अंधकार की ओर दौड़ने वाले हो तुम्हें क्या हो गया कि तुम कलाम में विचार नहीं करते और ख़ुदा के प्रकोप से नहीं डरते? क्या तुम अपनी दुनिया में छोड़े जाओगे और मौत का मुंह नहीं देखोगे। क्या तुमने इस दुनिया के जीवन को स्वीकार कर लिया या बदले के दिन और आख़िरत को तुमने भुला दिया तौब: करो और ख़ुदा की ओर रुजू करो क्योंकि वह पापियों को दोस्त नहीं रखता।

और हे धर्म को नष्ट करने वाले! तेरे दावों में से एक यह है कि तू ने कहा है कि मैं अरबी में बिना विचार किए तुरन्त बोलने वालों के समान मुकाबला करूंगा और प्रख्यात अदबीयों की तरह लिखूंगा और विजयी रहूंगा अफ़सोस तुझ पर हे दरिद्र! तू अपने दुनिया के नाम को क्यों बदनाम करने लगा और धर्म तो नष्ट हो चुका क्या तू वही नहीं जिसे मैं पुराने समय से जानता हूं प्रकृति का मूर्ख और दिल का धूर्त बहुत बक-बक करने वाला मारिफ़त में कम, जीभ की हकलाहट का दाग़ रखने वाला। क्या तू इस शक्ति से दिलेर बहुत शक्ति रखने वाले के साथ कुश्ती करेगा और कांटे वाले सवार के साथ युद्ध करेगा कदापि नहीं बल्कि तू

وإن كنتَ عزمتَ علىٰ مناضلتى، وأردتَ أن تذوق حَرْبِى وحربتى، فأدعوك كما يُدعى الصَيّد للاصطياد، أو يُدنَى النار للإخماد. بيد أنى اشترطتُ من الابتداء أن لا يُعارضنى أحد إلّا بنيّة الاهتداء، فاسمع منّى أنّى أُناضلك علىٰ هٰذه الشريطة، ليهلك من هلك بالبيّنة. فإناتّفقَ أن أُغلَب فى النضال، وتغلب فى محاسن المقال، فأتوب على يدك بالإخلاص التام، وأحسبك من الاتقياء الكرام، وإن اتّفقَ أنّ اللّٰه أظهر غلبتى فى الجدال، فما أريد منك شيئا إلّا أن تتوب فى الحال، وتبايعنى بالتّذلّل والانفعال وتُصدّق دعواتى بصدق البال، وتدخل فى سِلك جماعتى بالاستعجال، وتؤثرنى على النفس والعِرض والمال. فإن كنتَ رضيت بهذه الشريطة، فتعالَ تعالَ بصحّة النيّة، واشْهَدْ

तो अपना दोष लोगों को दिखाना चाहता है और तू अपनी बेतुकी बातों को अपनी मूर्खता पर गवाह बनाना चाहता है और यदि तूने मुझ से युद्ध का इरादा कर लिया है और संकल्प कर लिया है कि मेरे युद्ध और मेरे प्रहार का स्वाद चख ले, तो मैं तुझे इस प्रकार बुलाता हूं जैसा कि शिकार पकड़ने के लिए बुलाया जाता है या आग बुझाने के लिए निकट की जाती है परन्तु यह बात है कि मैं पहले से यह शर्त रखता हूं कि कोई व्यक्ति हिदायत पाने की नीयत के अतिरिक्त मुझ से मुकाबला न करे तो मुझसे सुन कि मैं इस शर्त के साथ तुझसे मुकाबला करूंगा ताकि जो बय्यिन: के साथ मरा और वह मर जाए तो यदि यह सहमति हो गई कि मैं पराजित हो गया और बलाग़त में तू विजयी हुआ तो मैं तेरे हाथ पर निष्कपटता पूर्वक तौब: करूंगा और तुझे सौभाग्यशाली बुजुर्गों में से समझूंगा और यदि यह संयोग हुआ कि मैं विजयी हुआ तो मैं तुझ से तौब: के अतिरिक्त और कुछ नहीं चाहता और यह कि उसी समय पूर्ण विनयपूर्वक तू मुझ से बैअत भी करे और सच्चे हृदय से मेरे दावे का सत्यापन करे और जल्दी से मेरी जमाअत में सम्मिलित हो जाए और अपने ज्ञान और सम्मान तथा माल पर मुझे अपनाए। अतएव यदि तू इस शर्त पर सहमत हो गया तो सही नीयत के साथ आजा और एक जमावड़े में उपस्थित हो

مجمعَ الحیّ، لیتبیّن الرشد من الغیّ، وتعلم أنی ما أرید فی هذه الدعوة، أن تحسبنی الناس أدیبًا فی العربیة، ولا أبالی أن یرمونی بجهالة، أو یقولوا أُمِّیٌّ لا یطّلع علی صیغةٍ، إنْ أریدُ إلَّا إقامة الآیة، وإثبات الدعوی بهذه البیّنة، لیتم حجّة الله علی الناس، ولینجو الخلق من الوسواس، ولیمتنعوا من الغوایة، وتنکشف علیهم أبواب الهدایة، ویأتونی توّابین مُصدّقین.

فإن کنتَ تُعاهدنی علی هذا، ولستَ کالذی نقَض العهد وآذَی، فقُمْ بهذا الشرط للنضال، وأْتِنی حالفًا بوجه الله ذی الجلال، وأَشهِدْ علیه عشرةَ عَدْلٍ من الرجال، ثم اشتهِرْه بعد طبعه بصدق البال، فترانی بعده حاضرًا عندک فی الحال، کبازی متقضّی علیٰ طیور الجبال، فتُمزَّق کلّ ممزَّق بإذن ربّ العالمین.

هذا عهد بینی وبینک، لیظهر منه مَیْنی أو مَیْنُک، ولیهلک من کان من الکاذبین. وإنّ الکذب یُخزی أهله، ویُحرق رحله، ولکنکم لا تبالون

ताकि हिदायत और गुमराही में अन्तर हो जाए। और तू जानता है कि मैं इस दावत में यह नहीं चाहता कि मुझे लोग अरबी में साहित्यकार समझें और मैं इस बात की परवाह नहीं करता कि लोग मुझे अनपढ़ कहें या यह कहें कि एक अशिक्षित है इसे एक सीग़: भी मालूम नहीं। मैं तो केवल निशान को स्थापित करना चाहता हूं और इस तर्क के साथ दावे को सिद्ध करना मेरा उद्देश्य है। ताकि लोगों पर ख़ुदा की हुज्जत पूरी हो जाए और ताकि शैतान से लोग मुक्ति पाएं और ताकि गुमराही से रुक जाएं और उन पर हिदायत के मार्ग खुल जाएं और तौब: तथा सत्यापन की हालत में मेरे पास आएं।

अत: यदि तू इस बात पर मेरे साथ समझौता करता है और तू ऐसा आदमी नहीं जो समझौता तोड़े और दुख दे तो इस शर्त के साथ लड़ाई के लिए खड़ा हो और ख़ुदा की क़सम खाकर मेरे पास आ जा और इस पर दस न्यायवान गवाहों की गवाही कर ले फिर वह निबंध छपवाकर प्रसिद्ध कर दे इसके पश्चात तू मुझे अविलम्ब अपने पास उपस्थित पाएगा ऐसा जैसे बाज़ पहाड़ के पक्षी पर पड़ता है तो उस समय तू ख़ुदा के आदेश से टुकड़े-टुकड़े किया जाएगा।

الله ویوم الإخزاء ، وتقولون ما تشاء ون بترك الحياء . ألا إنّ لعنة الله على المزوِّرين، الذين يُخفون الحق ويزيّنون الباطل ويريدون أن يُطفئوا نور الله مفسدين۔ وقالوا اهجُروا هؤلاء ولا تلاقوهم مسلِّمين، ولا تُصلّوا على أمواتهم، ولا تتّبعوا جنازاتهم، واقتلوهم إنْ قدرتم على قتلهم فى حين، واسرقوا أموالهم، وانهبوا رِحالهم، وكفّروهم وسبّوهم واشتموهم، ولا تذكروهم إلا مُحقّرين۔ تبًّا لهم! كيف نحتوا مسائل من عند أنفسهم وما خافوا أحكم الحاكمين۔ أولئك عليهم لعنة الله والملائكة وأخيار الناس أجمعين، وأولئك هم شرّ البريّة تحت السماء ولو سمّوا أنفسهم عالِمين.

ثم اعلم أنى كتبتُ مكتوبى هٰذا فى اللسان العربيّة، لاختبرك قبل أن أجيئك للمناضلة، فإنى أظنّك غبيًّا ومن الجاهلين. وما أريد أن يكون ذهابى إليك صُلفة، وأكون كالذى يقصد عَذِرة، أو يأخذ فى يده رَوثة، وما

यह वह वादा है जो मुझ में और तुझ में है ताकि मेरा या तेरा झूठ प्रकट हो जाए और ताकि झूठा मर जाए और झूठ उसके पात्र को अपमानित करता है और उसके सामानों को जला देता है परन्तु तुम लोग ख़ुदा और उसके अपमानित करने के दिन की परवाह नहीं करते और शर्म को छोड़कर जो चाहते हो कहते हो ख़बरदार हो कि झूठ को सजाने वालों पर ख़ुदा की लानत है वे लोग जो सच को छुपाते हैं और झूठ को सजाते हैं और चाहते हैं कि ख़ुदा के प्रकाश को उपद्रव पूर्ण बातों से बुझा दें और कहा कि इन लोगों को छोड़ दो और अस्सलामो अलैकुम के साथ उनको मत मिलो और उनके मुर्दों पर नमाज़ मत पढ़ो और उनके जनाज़ों के साथ मत जाओ और यदि क़ुदरत पाओ तो उनको क़त्ल कर डालो और उनके मालों को चुराओ और उनके सामान को लूट लो और उनको गालियां दो और अनादर करते हुए उनकी चर्चा करो उनके लिए तबाही हो क्योंकर अपने पास से मसअले बना लिए और ख़ुदा तआला से नहीं डरते उन पर ख़ुदा तआला की लानत है और फरिश्तों की लानत तथा समस्त नेक पुरुषों की लानत और यह लोग आकाश के नीचे निकृष्टतम सृष्टि हैं यद्यपि स्वयं को मौलवी करके पुकारें।

फिर तुझे मालूम हो कि मैंने यह पत्र इसलिए लिखा है ताकि मैं इससे पूर्व कि

أريد أن أُعطى جاهلا بحثًا عزّة المقابلة، وأرفع له ذِكره فى العامّة. فإن كنتَ من أدباء هذا اللسان، فلا يشقّ عليك أن تريني فى العربيّة بعض درر البيان، بل إن كنتَ بارعًا من غير التصلّف والمَيْن، فستكتب جواب ذلك المكتوب فى ساعة أو ساعتين، ولا تردّ مسألتى كالجاهل المحتال، بل تُملى بقدر ما أمليتُ وترسل فى الحال. وعليك أن تراعى مماثلتى فى النظم والنثر والمقدار، وتأتى بما أتيتُ به من درر كدرر البحار. وإذا فعلتَ كله فأَرسِلْ إليّ مكتوبك العربيّ بالسرعة، ثم أَنزِلُ ساحتك كالصاعقة المحرقة، ويفتح الله بيننا بالحق وهو خير الفاتحين. وإن كنتَ ما أرسلتَ جوابك إلى سبعة أيام، أو أرسلت فى الهندية كعوام، أو عربية غير فصيحة كجَهام، أو أرسلت قليلا من كلام، فيثبت أنك من السفهاء الجاهلين، لا من الأدباء المتكلّمين، ومن العجماوات، لا من رجال يؤثر

तेरे पास आऊं तुझे परख लूं क्योंकि मैं तुझे जाहिलों में से समझता हूं और मैं नहीं चाहता कि मेरा तेरे पास आना बेफ़ायदा हो और मैं नहीं चाहता कि मैं ऐसे व्यक्ति के समान हो जाऊं जो गन्दगी का इरादा करता है या अपने हाथ में गोबर लेता है और मैं नहीं चाहता कि एक जाहिल को मुक़ाबले का सम्मान दूं और सामान्य लोगों में उसकी चर्चा बुलन्द करूं। अत: यदि तू इस भाषा के साहित्यकारों में से है तो यह बात तुझ पर भारी नहीं होगी कि तू अरबी में कुछ वर्णन के मोती दिखाए अपितु यदि तू वास्तव में सरस सुबोध है बिना डींगों के तो शीघ्र ही इस पत्र का उत्तर एक घड़ी या दो घड़ी में लिख देगा और मेरे प्रश्न को जाहिल चालबाज़ के समान अस्वीकार नहीं करेगा अपितु जितना मैंने लिखा है उतना तो लिखेगा और तुरन्त भेज देगा और तुझ पर अनिवार्य होगा कि पद्य और गद्य और मात्रा में समानता का ध्यान रखे और मेरी तरह अपने कलाम को बलाग़त के जवाहरात से भरे और जब तू ने यह सब कुछ कर लिया तो अपना उपद्रवी पत्र शीघ्र ही मेरी ओर भेज दे फिर मैं तेरे घर के सहन में जलाने वाली बिजली के सामान उतर जाऊंगा और ख़ुदा तआला हम में सच्चा फ़ैसला कर देगा और वह उत्तम फ़ैसला करने वाला है। और अगर तूने सात दिन तक उत्तर न भेजा या हिंदी भाषा में जन सामान्य की तरह भेजा या ग़ैर फ़सीह अरबी

نطقهم علی ثمار العجمات، فأترُكُك كما يُترَك سقطُ من المتاع، وأُعرض عنك كإعراض الناس عن السباع، وأشيع فی هذا الباب شيئا لاؤلی الالباب والمستبصرين.

وأمّا ما تدعونی متفرّدًا فی المباهلة، فهذا دجلك وكيدك يا غُول البادية. ألا تعلم أيّها الدجّال، والغویّ البطّال، أن الشرط منی فی المباهلة مجیئُ عشرة رجال، لملاعنة وابتهال، فی حضرة مُعين الصادقين؟ فما قبلتَ شريطتی، وكان فيه نفعك لا منفعتی. ثم أردتُ أن أتمّ الحجّة عليك وعلی رهطك المتعصّبين، فرضيتُ بثلاثة من رجال عالمين، وخفّفتُ عليك وقنِعتُ يا عدوّ الاخيار، بأن تباهلنی مع عبد الواحد وعبد الجبّار، وإنهما أكابر جماعتك وحرثاء زراعتك، وابنا شيخٍ أمين. ففررتَ فرار الظلام من النور، وولّيتَ دُبُر الكذب والزور، ودخلتَ الجُحر كالمتخوّفين.

में जो उस बादल की तरह है जिसमें पानी नहीं या तू ने कुछ थोड़ा सा कलाम भेजा तो सिद्ध हो जाएगा कि तू जाहिलों में से है न कि साहित्यकारों में से और चौपाइयों में से है न कि उन मर्दों में से है कि उनका कलाम खजूरों से अधिक पसन्द किया जाता है तो मैं तुझे छोड़ दूंगा जैसे की रद्दी सामान छोड़ दिया जाता है और तुझ से पृथक हो जाऊंगा जैसा कि दरिन्दों से पृथक हुआ जाता है और बुद्धिमानों के लिए इस बारे में कुछ छपवा दूंगा।

और तू जो मुबाहले के लिए मुझे अकेला बुलाता है तो हे बियाबान के मसान! तेरा छल है। हे दज्जाल और गुमराह बत्ताल क्या तू नहीं जानता कि मेरी ओर से मुबाहल: के लिए दस आदमी की शर्त है जो लानत डालने और रोने धोने के लिए आएं तो तूने मेरी शर्त को स्वीकार नहीं किया और इसमें तेरा फ़ायदा था न कि मेरा। फिर मैंने इरादा किया कि तुझ पर और तेरे गिरोह पर समझाने का अन्तिम प्रयास पूरा करूं तो मैं तीन आदमियों के साथ सहमत हो गया और तुझ पर मैंने कमी कर दी और मैंने कहा कि हे नेकों के शत्रु अब्दुल वाहिद और अब्दुल जब्बार को लेकर मेरे साथ मुबाहल: कर और वे

وما وَرَدَ على صاحبَيْك؟ إنهما فرّا وفقاء اعينيك، وما جاء انى كالمباهلين۔ وأيُّ خوف منعهما من المباهلة إنْ كانا يُكفّرانى على وجه البصيرة؟ فأين ذهبا إن كانا من الصادقين؟ ومن أقوالك فى اشتهارك، أنك خاطبتنى وقلتَ بكمال إصرارك: إنك تحترق فى النار وتغرق فى الماء، ولا يمسّنى ضرٌّ لو دخلتهما وأُحفَظُ من البلاء أمّا الجواب۔ فاعلم أيها الكذّاب أنك رأيتَ كلّ ذالك بعد المباهلة الاولى، وأُغرقتَ وأُحرقتَ يا فُضلةَ النُّوكىٰ۔ فأنبِئْنا أين خرجتَ من الماء؟ بل مُتّ فى ماء التندّم كالاشقياء ۔ وأين نُجّيتَ من النار؟ بل احترقتَ بنار الحسرة التى تطّلع على الاشرار، وما صارت النار عليك بردًا وسلامًا، بل أكلتك نار إخزاء الله ولقيت آلامًا، وكذٰلك يُخزى الله المفترين۔ إنّ الّذين يتكبّرُون بغير الحق هم الفاسقون حقّا ولو

दोनों तेरी खेती के ज़मींदार अमीन शेख़ के बेटे हैं तो तू ऐसा भागा जैसा कि अंधकार प्रकाश से भागता है और तू ने झूठ की पीठ को फिराया और डरने वालों की तरह बिल में जा छुपा।

और तेरे दोनों साहिबों को क्या हुआ कि वे दोनों भाग गए और तुझे अंधा कर गए और मुबाहल: करने वालों की तरह मेरे मुकाबले पर न आए और किस भय ने उन्हें मुबाहल: से मना किया। यदि वे मुझे पूर्ण विवेक के साथ काफ़िर जानते थे यदि वह सच्चे थे तो कहां चले गए और तेरे समस्त कथनों में से जो तेरे विज्ञापन में है जो तूने मुझे संबोधित करके पूर्ण आग्रह के साथ कहा है कि तू आग में जल जाएगा और पानी में डूब जाएगा और मुझे यदि मैं इन दोनों में दाखिल हूं तो कुछ दुख नहीं पहुंचेगा परन्तु हे कज़्ज़ाब हमारा उत्तर यह है कि तू प्रथम मुबाहल: के बाद यह सब कुछ देख चुका है और तू डुबोया गया और जलाया गया। हे मूर्खों के फ़ुज़्ले (बचे हुए) अत: हमें बता कि कब तू पानी में से निकला। अपितु तू तो शर्म के पानी में अभागों की तरह डूब गया और तुझे आग से कहां मुक्ति प्राप्त हुई अपितु तू उस हसरत की आग में जल गया जो दुष्टों पर भड़कती है और तुझ पर आग ठंडी न हुई अपितु

حَسِبُوا أنفسهم منَ الصّالحيْن۔ وَالذينَ وَجَدُوا فضل ربّهم يُعرَفون بأنوارهم، ويمشون علَى الارض هونًا لانكسارهم، ولا يمشون مستكبرين۔ وآخر دعوانا أن الحمد لله ربّ العالمين.

قَصِيْدَةٌ مِّنَ المُؤلّف

إنّى صَدوقٌ مصلِحٌ مترحم	سَمٌّ مُعاداتى وسِلْمِى أسلمُ
إنى أنا البستان بستانُ الهُدىٰ	تأتى إلىّ العَين لا تتصرّمُ
روحى لتقديس العلىِّ حمامةٌ	أو عند ليبٌ غارِدٌ مترنّمُ
مَا جئتكم فى غير وقت عابثًا	قد جئتكم والوقت ليل مظلِمُ

ख़ुदा की अपमानित करने वाली आग तुझे खा गई और तू कई पीड़ाओं को जा मिला और ख़ुदा इसी प्रकार झूठ गढ़न वालों को अपमानित करता है। वे लोग जो अकारण अहंकार करते हैं वही वास्तव में पापी हैं यद्यपि स्वयं को सदाचारी समझें और जो लोग ख़ुदा तआला की कृपा पाने वाले हैं वे अपने प्रकाशों से पहचाने जाते हैं और नम्रता पूर्वक पृथ्वी पर चलते हैं और अहंकार से क़दम नहीं रखते और हमारी अन्तिम दुआ अल-हम्दुलिल्लाहि रब्बिल आलमीन है।

क़सीदा लेखक की ओर से

मैं सच्चा और सुधारक हूं और मेरी शत्रुता ज़हर और मेरी मैत्री सलामती है।

मैं हिदायत का बाग़ हूं मेरी ओर वह झरना आता है जो कभी समाप्त नहीं होता।

मेरी रूह ख़ुदा की पवित्रता वर्णन करने के लिए एक कबूतर है या बुलबुल है जो मधुर स्वर में बोल रही है।

मैं तुम्हारे पास असमय नहीं आया मैं उस समय आया कि एक अंधकारमय रात थी।

صارت بلاد الدين مِن جَدبٍ عتا	أَقْوَى و أقفَـرَ بعد روضٍ تعلَمُ
هل بقى قوم خادمون لدينِنا	أم هل رأيتَ الدين كيف يُحطَّمُ
فالله أرسلـنى لأُحيىَ دينـهُ	حقٌّ فهل من راشدٍ يستـسلمُ
جُهد المخالف باطل فى أمْرنا	سيف من الـرحمٰن لا يتـثلَّمُ
فى وجهنا نور المهيمن لا يِـحُ	إن كان فيكم ناظـرٌ متوسّمُ
اليوم يُنقَض كلّ خيطِ مكائدٍ	لَـيْنٌ سَحيلٌ أو شديد مُبْرَمُ
مَن كان صَوَّالًا فيُقطَع عِرْقهُ	يُرديـه عاليةُ القنا أو لَهْـذَمُ
اَللّٰهُ آثـرَنا و كفَّـل أمـرَنا	فالقلب عند الفتن لا يتجَمْجَمُ
ملِكٌ فلا يُخـزَى عزيزُ جنابهِ	إن المقـرَّب لا أبا لكَ يُكرَمُ

धर्म की बादशाहत दुर्भिक्ष के प्रभुत्व के कारण खाली हो गई बाद इसके कि वह एक बाग़ के समान थी।

क्या वह क़ौम शेष है जो हमारे धर्म की सेवा करें और क्या तू ने नहीं देखा कि धर्म को किस प्रकार गिराया जाता है।

अतः ख़ुदा ने मुझे भेजा ताकि मैं उस धर्म को जीवित करूं यह सच है तो क्या कोई है जो आज्ञा पालन करे।

विरोधी की कोशिश हमारे मामले में बेकार है यह ख़ुदा की तलवार है जिस में रुकावट नहीं हो सकती।

हमारे मुंह में ख़ुदा तआला का प्रकाश स्पष्ट है यदि तुम में कोई देखने वाला हो।

आज प्रत्येक छल का धागा तोड़ दिया जाएगा नर्म इकतारा हो या कठोर दो तारा हो।

अतः जो व्यक्ति आक्रमणकारी हो तो उसकी धमनी काट दी जाएगी और भाले का ऊपर का सिरा या नीचे का सिरा उसे मार देगा।

ख़ुदा ने हमें चुन लिया और हमारे काम का अभिभावक हो गया तो दिल फ़ित्नों के समय दुविधा में नहीं होता।

वह बादशाह है उसके पास का प्रिय कभी बदनाम नहीं होता और सानिध्य

كَفِّرْ وما التكفير منك ببدعةٍ	رسمٌ تقادمَ عهده المتقدّمُ
قد كُفِّرتْ مِن قبل صحبُ نبيّنا	قالوا لئام كفرةٌ، وهُمُ هُمُ
اُنظُرْ إلى المتشيعين ولعنهم	ما غادروا نفسا تُعَزُّ وتُكرَمُ
جاء تك آياتى فأنت تكذِّبُ	شاهدتَ راياتى فأنت تُكتِّمُ
يا من دنا منّى بسيف زجَاجةٍ	فاحذَرْ فإنى فارسٌ مستلِئِمُ
يُدرِيْك مَن شهِد الوقائع أنّنى	بطلٌ وفِىْ صفِّ الوغى متقدّمُ
كمْ من قلوبٍ قد شققتُ جذورَها	كمْ من صدورٍ قد كلَمتُ وأكلُمُ

प्राप्त अवश्य सम्मान पा लेता है।

तू मुझे काफ़िर कहता है और काफ़िर कहना कोई बिदअत नहीं यह तो एक पुरानी रस्म चली आती है।

इससे पूर्व हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सहाबा काफ़िर ठहराए गए और राफ़िज़ियों ने कहा कि यह कंजूस का सिर हैं और इनकी शान वही है जो है।

शियों और उनकी लानत की ओर देख कि उन्होंने किसी सम्मान वाले को नहीं छोड़ा।

मेरे निशान तेरे पास आए और तू झुठला रहा है और तूने मेरे झण्डे को देखा और फिर छुपाता है।

हे वह मनुष्य जो कांच की तलवार के साथ मेरे पास आया मुझसे डर कि मैं कवचधारी सवार हूं।

घटनाओं को जानने वाला आदमी तुझे जतला देगा मैं निडर हूं वह युद्ध की पंक्ति में सबसे आगे।

बहुत से दिलों की जड़ें मैंने फाड़ दीं और बहुत से सीनों को मैंने ज़ख़्मी कर दिया और करता हूं।

وإذا نطقتُ فإن نطقى مفحِمٌ	سيفٌ فيقطَع مَن يكيد ويجذِمُ
حاربتُ كلَّ مكذِّب وَبآخَرٍ	للحرب دائرة عليك فتعلَمُ
يَا لائِمِى إنّ المكارم كلّها	فى الصّدق فاسْلُكْ سُبُلَ صدقٍ تسلَمُ
إن كنت أزمعتَ النِّضال فإنّنا	نأتى كما يأتى لصيدٍ ضَيغَمُ
هَلّا أريتَ العِلم يا ابنَ تصلُّفٍ	إن كنتَ عَلّامًا بما لا أعلَمُ
قدضاعمرك فى السّفاهة والعَمى	طوبٰى لمن بعد السَّفاهة يحلُمُ
قد جآء إنّ الظنّ إثمٌ بعضُهُ	فارفقْ ولا يُضْلِلْ جَنانَك مأثَمُ

और जब मैं बोलूं तो मेरा बोलना तेरा मुंह बन्द करने वाला है तलवार है वह मक्र करने वालों को काट देती है।

मैं प्रत्येक जलाने वाले से लड़ा और सब के अन्त में तुझ पर लड़ाई का चक्र आएगा और फिर तू जान लेगा।

हे मेरे निन्दा करने वाले समस्त महानताएं सच्चाई में हैं अत: सच्चाई का तरीका ग्रहण कर ताकि सलामत रहे।

यदि तू ने मुकाबले का इरादा किया है तो हम उस शेर की तरह आएंगे जो शिकार के लिए आता है।

हे डींगे मारने वाले के बेटे! तू ने अपना ज्ञान क्यों न दिखलाया यदि तू वह चीज़ जानता था जो मुझे मालूम नहीं।

तेरी आयु मूर्खता और अंधेपन में नष्ट हो गई मुबारक वह व्यक्ति जो मूर्खता के पश्चात बुद्धिमान हो जाए।

क़ुर्आन करीम में आया है कि कुछ गुमान पाप है अत: नर्मी कर और तेरे दिल को गुनाह गुमराह न करे।

الكِبر يُخزى أهلَه العاتى ومَنْ	لِلّٰهِ يصغُر فالمهيمن يُعظِمُ
يَا أيّها الناس اذكروا آجالكم	إن المنايا لا تُرَدّ وتهجُمُ
يَا أيّها الناس اعبدوا خلّاقكم	توبوا وإنّ الله ربٌّ أرحَمُ
إنّى أرى الدنيا تمرّ بساعةٍ	غَيمٌ قليل الماء لا يتلوّمُ
فلهذه لا تُسخِطوا معبودكم	توبوا وطوبىٰ لِلّذى يتندّمُ
توبوا وإن العُذر لغوٌ بعد ما	كُشِفَتْ سرائركم واُخِذَ المجرمُ
إنا صرَفنا فى النصيحة رحمةً	ما حَملَ حسنُ بياننا وتكلُّمُ

अहंकार, अहंकारी को बदनाम करता है और जो ख़ुदा के लिए छोटा होता है ख़ुदा उसे बड़ा कर देता है।

हे लोगो अपनी मौत का समय समरण रखो और मौत जब आती है तो रोकी नहीं जाती और सहसा आती है।

हे लोगो! अपने पैदा करने वाले की इबादत करो, तौब: करो और ख़ुदा समस्त दयावान में सर्वाधिक दयालु है।

मैं दुनिया को देखता हूं शीघ्र गुज़र जाती है यह एक ऐसा बादल है जिसमें पानी थोड़ा है और अधिक विलम्ब नहीं करता।

अत: इस दुनिया के लिए अपने माबूद (उपास्य) को नाराज़ मत करो तौब: करो और मुबारक वह जो शर्मिंदा होता है।

तौब: करो और उस समय तौब: करना बे फ़ायदा है जबकि तुम्हारे भेद खोले गए और अपराधी पकड़ा गया।

हमने दया की दृष्टि से वे सब नसीहत देने में ख़र्च कर दिया है जो कुछ भी हमारे वर्णन का अधिकार सहन कर सका।

واللهِ إنى قد بُعثْتُ لخيرِكُمْ	والله إنى مُلهَمٌ ومُكلَّمُ
إن كنتَ تبغى حربنا فنحاربُ	بارِزْ فإنى حاضر متخيّمُ

القَصِيْدَةُ الثانية

لكَ الحمدُ يا تُرْسى وحِرْزى وجَوْسَقى	بحمدك يُرْوَى كلُّ مَن كان يستقى
بذكرك يجرى كلُّ قلب قد اعتقٰى	بحبك يحيٰى كل مَيِّتٍ مُمَزّق
وباسمك يُحفَظ كلُّ نفس من الردا	وفضلُك يُنجى كلَّ مَن كان يُزبَقِ
وما الخير إلا فيك يا خالقَ الورىٰ	وما الكهف إلا أنت يا مُتَّكَأَ التَّقِى

ख़ुदा की क़सम मैं तुम्हारी भलाई के लिए अवतरित किया गया हूं और ख़ुदा की क़सम मैं मुल्हम और मुकल्लम हूं।

यदि तू हमारी लड़ाई को चाहता है तो हम लड़ाई करेंगे मैदान में आ कि हम उपस्थित हैं और तम्बू लगा रहे हैं।

दूसरा क़सीद:

हे मेरी शरण और मेरे क़िले (दुर्ग) तेरी प्रशंसा हो, तेरी प्रशंसा से प्रत्येक व्यक्ति जो जल चाहता है तृप्त हो जाता है।

प्रत्येक ठहरा हुआ दिल तेरे ज़िक्र से जारी हो जाता है और तेरे प्रेम के साथ प्रत्येक मुर्दा जीवित हो जाता है।

और तेरे नाम के साथ प्रत्येक व्यक्ति मौत से बचता है और तेरी कृपा हर एक क़ैदी को रिहाई प्रदान करती है।

और समस्त भलाई तेरी ओर से है, हे संसार के स्रष्ठा और तू ही संयमियों की शरण है।

وتعنو لك الإفلاك خوفا وهيبة	وتجرى دموع الراسيات وتَثبِقِ
وليس لقلبى يا حفيظى وملجأى	سواك مُـريحٌ عند و قت التأزُّقِ
يميلالورىعندالكروبإلىالورى	وأنت لنا كهفٌ كبيتٍ مُسَـردَقِ
وإنك قد أنزلتَ آياتِ صدقنا	فـويلٌ لغُمـْرٍ لا يراها وينـهَقِ
ألم يرَ عِجّلًا مات فى الحىّ داميًا	أهذا من الرحمن أو فعل بُنْدقى؟
أرى الله آيته بتدميرِ مفسدٍ	وتعرفـها عين رأتْ بالتعـمّقِ
وما كان هذا أوّلَ الآى للعدا	بل الآىُ قد كثرتْ فأمعِنْ وحقِّقِ

और तेरे आगे भयंकर होकर आकाश झुके हुए हैं और पर्वतों के आंसू जारी हैं और बह रहे हैं।

और मेरे दिल के लिए हे मेरे निगरान और शरण कोई अन्य आराम पहुंचाने वाला नहीं जब तंगी आए।

दुख के समय दुनिया दुनिया की ओर ध्यान देती है और तू हमारे लिए ऐसी शरण है जैसे अत्यंत सुदृढ़ घर।

और तू ने हमारी सच्चाई के निशान उतारे हैं अत: वह मूर्ख मर चुका है जो इन निशानों को नहीं देखता और निरर्थक शोर करता है।

क्या उस बछड़े को उसने नहीं देखा जो अपने कबीले में खून में लथड़ा हुआ होकर मर गया क्या यह ख़ुदा का काम है या मेरी बंदूक का काम है।

ख़ुदा ने अपना एक निशान उपद्रवी को मार कर दिखा दिया और उस निशान को वह आंख पहचान सकती है जो ध्यान पूर्वक देखे।

और यह शत्रुओं के लिए कोई पहला निशान नहीं अपितु निशान बहुत हैं अत: सोच और छानबीन कर।

و لِلّٰہِ آیات لتأیید دعوتی	فآنِسْ بعین الناظر المتعمقِ
ألا رُبَّ یوم قد بدت فیه آیُنا	ولا سیّما یوم علا فیه منطقی
إذا قام عبد الله عبدُ کریمنا	و کان بحسن اللحن یتلو و یبعُقِ
فکلٌّ من الحُضّار عند بیانهِ	کمثل عُطاشیٰ أهرعوا أو کأَعْشُقِ
وقاموا بجذبات النشاط کأنّهم	تعاطَوا سُلا فًا مِن رحیقٍ مُزَهْزِقِ
ومالت خواطرهم إلیه لذاذةً	کمثلِ جیاعٍ عند خبزٍ مُرَقَّقِ
فأخرجَ حیواتِ العدا مِن جحورها	وأنزَلَ عُصّمًا من جبال التعَزُّقِ

और मेरे दावे के समर्थन में ख़ुदा के लिए निशान हैं अत: उसे आंख से देख जो सोचने वाली और विचार करके देखा करती है।

ख़बरदार हो बहुत से ऐसे दिन हैं जिनमें हमारी निशानियां प्रकट हुईं विशेष तौर पर वह दिन जिस दिन मेरा भाषण विजयी हुआ।

और जिस समय **मौलवी अब्दुल करीम साहिब** खड़े हुए और सुंदर आवाज़ से पढ़ते और तर्जीह के साथ आवाज़ करते थे।

तो समस्त उपस्थिति गण उसके वर्णन के समय प्यासों के समान या आशिकों के समान दौड़े।

और हर्ष भावनाओं के साथ खड़े हो गए जैसे कि उन्होंने वह शराब ले ली जो उस शराब के प्रकार में से थी जो नाच लाने वाली।

और उनके दिल आनन्द के साथ ऐसे झुक गए जैसा की भूखे नर्म रोटियों की ओर झुकते हैं।

तो उसने शत्रुओं के सांपों को उनके बिलों से बाहर निकाला और पहाड़ी बकरों को कंजूसी के पहाड़ों से नीचे उतारा।

و كانوا بِهَمْسٍ يحمدون كأنه	حفيفُ طيور أو صداء التمطُّقِ
حداهم فلم يترك بها قلبَ سَامِعٍ	ولا أُذنًا إلا حدا مثلَ غَيْهَقِ
كأن قلوب الناس عند كلامه	علىٰ قلبه لُفَّتْ كنبتٍ مُعَلّقِ
و كان كسِمْطَيْ لُؤلوءٍ وَّزبرجدٍ	و كان المعانى فيه كالدُّرَر تبرقِ
إليه صبَتْ رَغَبًا قلوبُ أولى النُّهى	إذا ما رأوا دُرَرًا وسِمْطَ التزيُّقِ
ومِن عجب قد أخَذ كلٌّ نصيبَه	وفى السِمط كانت دُرره لم تُفرَّقِ
إذا رُفِعَتْ أستارها فكأنّها	عذارىٰ أَرَيْنَ الوجهَ مِن تحت بُخْنُقِ

और नर्म आवाज़ से प्रशंसा करते थे मानो वह परों की हल्की आवाज़ थी जब जानवर पंक्तिबद्ध होकर उड़ते हैं या जीभ के साथ शेष बहाने को चाटने की आवाज़ थी।

उनको खुश आवाज़ से जिलाया और किसी दिल को न छोड़ा और न किसी कान को परन्तु उसे ऊंट की तरह चलाया।

जैसे लोगों के दिल उसके कलाम के समय उसके दिल पर लपेटे गए जैसा कि एक बूटी वृक्ष पर लिपटती जाती है।

और मोती तथा पुखराज की दो लड़ियों की तरह वह निबन्ध था और उसमें मआनी मोतियों की तरह चमकते थे।

बुद्धिमानों के हृदय दिलचस्पी के साथ उसकी ओर झुक गए जिस समय उन्होंने मोती देखे और सजावट की लड़ी देखी।

और आश्चर्य तो यह है कि प्रत्येक ने अपना हिस्सा ले लिया हालांकि धागे के मोती धागे में मौजूद रहे और उससे पृथक न हुए।

और जब उनके पर्दे उठाए गए तो वे कुंआरी स्त्रियां थीं जिन्होंने बुर्के में से

فظلّ العذارىٰ ينتهبن بجلوة	بَعاءَ قلوب المبصِرين بمأزقِ
فشِبْرٌ من الإيوان لم يبقَ خاليًا	لِمَا ملاءِ الإيوان عشّاق منطقى
و كان الإناس لميلهم نحو كلمتى	بأقطاره القصوى كطيرٍ مُرَنَّقِ
وُقوفًا بهم صحبى لخدمة دينهم	يرون عجائب ربهم مِن تعمُّقِ
و كم من عيون الخلق فاضت دموعها	إذا ما رأوا آياتِ ربٍّ مُوفِّقِ
و كانوا إذا سمعوا كلاما كلؤلؤٍ	و كَلِمًا تُفرِّحهم كمِسْكٍ مدقَّقِ
يقولون كرِّرْها وأرْوِ قلوبَنا	وهُزَّ علينا من عُذَيّقك وانتَقِ

मुंह निकाला।

अत: उन कुंआरी स्त्रियों ने यह शुरू किया कि वे आरिफ़ों के दिलों के माल को लड़ाई में लूटती थीं।

तो मैदान में से एक बालिश्त जगह ख़ाली न रही क्योंकि उस भवन को मेरे कलाम के प्रेमियों ने भर दिया।

तथा लोग इस कारण कि उनको मेरे कलाम की ओर झुकाव था उस भवन के किनारों से ऐसे थे जैसे एक पक्षी एक ओर उड़ कर जाना चाहे और जा न सके।

और उनके पास मेरे दोस्त खड़े थे जो ख़ुदा तआला के अद्भुत काम देख रहे थे।

और बहुत से लोगों के आंसू जारी हो गए जब उन्होंने ख़ुदा तआला के निशान देखे।

और लोगों की यह हालत थी कि जिस समय वे मोतियों के समान कलाम को सुनते थे और उन वाक्यों को सुनते थे जो बारीक की हुई कस्तूरी के समान थे।

कहते थे दोबारा पढ़ और हमारे दिलों को सींच और अपनी खजूरों को हम

هنالك لاحتْ آيةُ الحقّ كالضُّحىٰ	فهل عند أمرٍ واضح مِن مُبَرِّقِ؟
وإنى سُقيتُ المآء ماءَ المعارفِ	وأُعطيت حكما عافها قلب أحمقِ
يمانيّةٌ بيضاءُ دُرَرٌ كأنها	جواهرُ سيف قد فداها لمُوْبَقِ
فكان بكلماتى يجرّ قلوبهم	إليه ولم يسحَرَ ولم يتملَّقِ
وأضحى يسُحُّ الماءَ ماءَ فصاحةٍ	على كل قلب مستعدّ مُجَعْفِقِ
و كلٌّ أراؤوا مِن أسارير وجههم	سرورًا و ذوقًا ما ينافى التأزّقِ
ومَن سمع قولا غيرَ ما قرأ فاشتكى	كما تشتكى إبلٌ عُقَيبَ التبرُّقِ

पर हिला और झाड़।

उस जगह ख़ुदा का निशान प्रकट हो गया अत: कोई है जो स्पष्ट बात को आंख खोल कर देखे।

और मैं आध्यात्मिक ज्ञान का पानी पिलाया गया हूं और वह हिकमतें भी मुझे प्रदान की गई हैं जिनसे मूर्ख घृणा करता है।

वे यमनी हिक्मतें मोतियों के समान हैं जैसे तलवार के जौहर हैं जो सुन्दरता के वध करने का बदला हैं।

अत: वह मेरे वाक्यों के साथ उनके हृदय को आकर्षित करता था और कोई जादू न था न कोई सहानुभूति थी।

और उसने आरंभ किया कि प्रत्येक तैयार हृदय पर जो तैयार हो सरसता का पानी गिराता था।

और प्रत्येक ने अपने चेहरे के चिन्हों से वह आनंद प्रकट किया जो ओछेपन के विपरीत था।

और जिसने मेरे कथन के अतिरिक्त कोई अन्य कथन सुना तो उसने शिकायत

فيا عجبًا مِن ميلهم كالتعشّقِ	وكانوا كمَمْحُوٍّ بعالَمِ سكتةٍ
وكم دررٍ كانت تلوح وتبرُقِ	وكم حِكمٍ كانت بلَفِّ كلامنا
لمارغبوافىوصفقولى كمنتقى	جرائدُ أقوامٍ تصدّتْ لذكرها
أشاعوا كلامى للإناس كمُشْفِقِ	ترى زمرَ الادباء فى أخبارهم
فأصبَتْ بحسنٍ ثم لحنٍ كيَلْمَقِ	وكانت مضامينى كغِيْدٍ بلطفها
علَيْهِ عيونُ قلوبهم بالتوَمُّقِ	ولما رآها أهلُ رأى تمايلتْ
فنَفيانُها قد غسّل أوساخَ خُنْبُقِ	ومرَّ على الاعداء بعضُ رشاشهَا

की जैसा की ऊंट बरूक की बोटी खाकर कष्ट की शिकायत करता है।

और वे लोग मूर्च्छा की अवस्था में तल्लीन के समान थे तो क्या आश्चर्य कि उनका झुकाव था जो प्रेम के समान साथ था।

और हमारे कलाम में बहुत सी शिकायतें थीं और बहुत से मोती सितारे के समान चमक रहे थे।

कौमों के अख़बारों ने उसका ज़िक्र किया है क्योंकि उन्होंने बात के चुनने वालों के समान मेरे कथन की ओर रुचि की है।

तू उनको देखता है कि उन्होंने अपने अख़बारों में प्रकाशित किया मेरे कलाम को लोगों में।

और मेरे निबन्ध दुबली-पतली स्त्रियों के समान थे अत: सुंदरता के साथ फिर उस आवाज़ के साथ जो चोग़े के तौर पर थी दिल उसकी ओर झुक गए।

और जब उस निबन्ध को विद्वान लोगों ने देखा तो उनके दिलों की आंखें दोस्ती के साथ इस ओर झुक गईं।

और उसके कुछ छींटे शत्रुओं पर गिरे तो उसकी उड़ने वाली बूंदों ने घमंडी

إلى هذه الإيام لم يُنْسَ ذكرُها	وكل لطيف لا محالةَ يُرمَقِ
جزى الله عنى مخلصى حين قرأها	فصارت مضامين العدا كالممزَّقِ
و كان الاناس غداة يوم قيامهِ	حِراصًا إليه كمثل طفلٍ لِبَلْعَقِ
وأخبرَنى مِن قبلُ ربّى بوحيه	وقال سيعلوا ما كتبتَ ويبرُقِ
فشهدتْ جذور قلوبهم أنها علَتْ	وفاقتْ و راقتْ كلَّ قلب كصَمْلَقِ
تراءى بعين الناس حسنُ نكاتها	وكلماتها كأنها بيضُ عَقْعَقِ
فوقعتْ مضامينى على كل منكر	كعَضْبٍ رقيقِ الشفرتَين مُشقِّقِ

कंजूस के मैलों को धो दिया।

इन दिनों तक उनका ज़िक्र भुलाया नहीं गया और हर उत्तम अवश्य ही हमेशा देखा जाता है और नज़रें उसकी ओर लगी रहती हैं।

मेरे निष्कपट को ख़ुदा अच्छा प्रतिफल दे जबकि उसने वह निबन्ध पढ़ा तो दुश्मनों के निबन्ध टुकड़े-टुकड़े हो गए।

और जिस दिन वह पढ़ने के लिए खड़ा हुआ तो लोग उसकी ओर ऐसे लोलुप थे जैसे कि एक बच्चा उत्तम खजूर के लिए।

और ख़ुदा ने पहले से वह्यी द्वारा मुझे खबर दी और कहा कि जो कुछ तूने लिखा है विजयी रहेगा और उसकी चमक प्रकट होगी।

तो उनके दिलों ने गवाही दी कि वह निबन्ध विजयी रहा और श्रेष्ठ हुआ और प्रत्येक सीधे और साफ़ दिल को अच्छा मालूम हुआ।

लोगों की नज़र में उसके नुक़्ते और वाक्य ऐसे दिखाई दिए कि जैसे अक़अक़ के अण्डे हैं।

तो मेरे निबन्ध इन्कारियों पर ऐसे पड़े जैसे कि एक पतले किनारे वाली फ़ाड़ने

إلينا بصدقٍ غيرَ مَن كان مُمْحَقِ	و كلُّ من الاحرار ألقَوا قلوبهم
كأسدٍ ونمر غير فأر وخِرْنِقِ	فصِدْنا بكلمٍ كلَّ صيد معظَّمٍ
خَذولٌ أتتْ ترعى خميلةَ منطقى	وتركوا لقولى رأيهم فكأنهم
و قد هنَّؤُ ونا كالحبيب المشوِّقِ	على ألْسُنٍ قد دارَ ذكرُ كلامنا
كوردٍ طَرِىّ الجسم لم يتشقّقِ	و سَرَّ عيونَ الناظرين صفاؤُه
قلوبُ العدا وتواردوا بالتأنُّقِ	ولما بدَتْ روضُ الكلام تضعضعتْ
فهل عند شوقٍ غالبٍ مِن مُعوِّقِ	وقد جَدَّ شيخُ المبطِلين لمنعهم

वाली तलवार।

और समस्त स्वेच्छाचारी लोगों ने अपने दिल हमारी ओर श्रद्धा पूर्वक फेंक दिए सिवाय उस व्यक्ति के जो भलाई और बरकत से वंचित था।

अत: हमने बड़े बड़े शिकारों को शेर और चीते के समान शिकार कर लिया और चूहा तथा खरगोश बाहर रह गया।

और मेरे कथन के लिए उन्होंने अपने कथन छोड़ दिए तो जैसे वह अनुपम हिरनियां थीं जो मेरे कलाम के बाग में चरने लगी।

और जीभों पर हमारे कलाम की चर्चा आई और अभिलाषी मित्र के समान हमें मुबारकबाद दी।

और देखने वालों के दिलों को उसकी सफ़ाई ने प्रसन्न किया गुलाब के फूल के समान जो ताज़ा हो और फटा हुआ न हो।

और जब कलाम के बाग़ प्रकट हुए तो दुश्मनों के दिल हिल गए तथा आश्चर्य करते हुए उन बाग़ों में दाखिल हुए।

और शेख़ बटालवी ने उनको मना करने के लिए कोशिश की परन्तु रुचि

تسلَّتْ عَماياتُ الهنود بسمعها	وما قلَّ بخلُ الشيخ فانظُرْ وعَمِّقِ
ففاضت دموعی مِن تذكُّرِ بخله	أهذا هو الرجل الذى كان يتقى
إذا قام للإسماعِ شيخُ "بطالة"	ففرّتْ جموعٌ كارهين كجَوْزَقِ
ولما تلا الشيخ المزوّر ما تلا	فكان الاناس يرونه كيف ينطِقِ
و كان يَعُتُّ الكلِمَ مِن غير حاجة	و يأ تى بألفاظ كصخرٍ مُدَمْلَقِ
ومَن سمع قولى قبله ظنَّ أنّه	لدى ثمرات العَذْق نافضُ عَسْبِقِ
وقال أرى الإسلام كالجوّ خالِيًا	وما إنْ أرى الآياتِ مِن صالحٍ تقى

रखने वाले को कौन रोक सकता है।

हिन्दुओं के अंधे विचार इस निबन्ध से दूर हो गए और शेख़ बटालवी की कृपणता दूर न हुई इसलिए सोच और विचार कर।

तो मुझे उसकी कृपणता का सोच कर रोना आया क्या यह वही व्यक्ति है जो संयम दिखलाता था।

और जब शेख़ बटालवी सुनाने के लिए खड़ा हुआ तो अधिकतर लोग घृणा करके शुतुरमुर्ग के समान भागे।

और जब झूठे शेख़ ने पढ़ा जो पढ़ा तो लोग उसे देखते थे कि क्यों कर पढ़ा है।

और वह वाक्यों को बिना ज़रूरत बार-बार पढ़ता था और बड़े भारी पत्थर के समान शब्द लाता था।

और जो व्यक्ति मेरा कथन उससे पहले सुन चुका था वह सोचता था कि खजूर के फलों के होते हुए एक कड़वे वृक्ष का फ़ल तोड़ रहा है।

और कहा कि मैं इस्लाम को पोल के समान ख़ाली देखता हूं और इसमें कोई

وقد كان يعلم أنه يتخلّقِ	فصال على الإسلام فى جمع العدا
وداهنَ مِن وجه النفاق كمُنفِقِ	وحمّد كبراءَ الهنود ودينَهم
فأخزاه ربٌّ قادرٌ حافِظُ الحَقِ	أراد ليُخزِىَ ديننا من عداوتى
فقالوا لك الويلاتُ إنك تنعِقِ	فلمّا رأوا سِيَرَ الغراب بنطقه
فأحسِنْ إلينا بالسّكوت وأَطْرِقِ	وقالوا له يا شيخُ وقتُك قد مضى
فقيل: على عقبيك إنك تَدمُقِ	ولما أصرّ على القيام وما نآى
فقالوا إذًا صَهْ صَهْ وَلا تكُ مُقلِقِ	فما طاوعَ الاحرارَ حمقًا وما انتهى

चमत्कार दिखाने वाला पाया नहीं जाता।

अत: दुश्मनों के समूह में इस्लाम पर प्रहार किया और वह ख़ूब जानता था कि वह झूठ बोलता था।

और हिंदुओं के बुजुर्गों और उनके धर्म की प्रशंसा की और मोहताजों के समान वैर से चापलूसी की।

उसने इरादा किया कि मेरी शत्रुता से धर्म को बदनाम करे इसलिए शक्तिशाली ख़ुदा के रक्षक ने उसको ही बदनाम कर दिया।

तो जब लोगों ने उसके कलाम में कौवे का चरित्र देखा तो उन्होंने कहा तुझ पर हाहाकार तू तो कां-कां कर रहा है।

और लोगों ने कहा कि हे शेख़ तेरा समय गुज़र गया। अत: अपनी ख़ामोशी से हम पर उपकार कर।

तो जब अपने खड़े रहने पर आग्रह किया और दूर न हुआ तो कहा गया कि पीछे हट जो तू बिना इजाज़त खड़ा होता है।

तो मूर्खता के कारण उसने अच्छों की बात को न माना और न हटा तो लोगों

فلمّا أبىٰ فنفاه صدرُ المُنْتدىٰ	بزجرٍ يليق بذى مكائدَ أَفْسَقِ
أَهَانَ المُهَيمنُ مَن أراد إهَانتى	فرَمِّقْ وميضَ الحق إن كنت ترمُقِ
يدُ الله تحمى نفسَ مَن هو صادق	وإن المزوّر يضمحلّ ويزهَقِ
وتبقى رجالُ الله عند نهابِرٍ	على النار تفنى الكاذبون كزِيبَقِ
إذا ما بدتْ نارٌ من الله فتنةً	فكل كذوبٍ لا محالة يُحْرَقِ
ومَن يُحرِق الصدّيقَ حِبَّ مهيمنٍ	فطُوْبىٰ لمن يُصْلىٰ بنار التوَمُّقِ
ومن كذّب الصدّيقَ خبثًا وَفِرْيَةً	فيَسفِيه إعصارٌ ويُخزى ويَسفُقِ

ने कहा चुप रह, चुप रह और परेशान न कर।

फिर जब उसने उद्दंडता की तो सभापति ने उसे निकाल दिया और उसे झिड़क कर निकाला जो पापियों का इलाज है।

ख़ुदा ने उस व्यक्ति को अपमानित किया जो मेरा अपमान चाहता था। अत: सच की चमक को देख यदि देख सकता है।

ख़ुदा का हाथ सच्चे की सहायता करता है और झूठा शिथिल हो जाता है और मर जाता है।

और ख़ुदा के मर्द संकटों के समय शेष रहते हैं और झूठे आग पर पारे की तरह नष्ट हो जाते हैं।

जिस समय ख़ुदा की आग प्रकट होती है तो प्रत्येक झूठा जलाया जाता है।

और सिद्दीक़ को, जो ख़ुदा का मित्र है, कोई जला नहीं सकता। अत: मुबारक वह जो मित्रता की आग से जलता है।

जो व्यक्ति दुष्टता और झूठ के द्वारा सच्चे का अपमान करे एक चक्रवात की हवा उसे उड़ाकर ले जाती और उसे बदनाम करती है और उसके मुंह पर

ومهما يكُنْ حقٌّ من الله وَاضِحٌ	وإنْ ردَّها زُمْرٌ مِّنَ النَّاس يبرُقِ
ومَن كان مُفترِيًا يُضَاعِ بسُرعةٍ	ويهلك كذّاب بسمّ التّخَلُّقِ
ترىٰ قوله مِن كُل خيرٍ خَالِيًا	كنبتٍ خبيثِ الريح مُرٍّ سَنَعْبَقِ
فَيُقْطَع نبتٌ لا مُريحٌ وجودُه	وكل نخيل لا محالة يَسمُقِ
وإنى من المولىٰ عُذَيقٌ مُرَجَّبٌ	فيُعرَقُ قاطعُ شجرتى كلَّ مَعْرَقِ
حسبتم قتال الصادقين كهيِّنٍ	وإن سهام الصَّادقين سيَخزِقِ
تقدّمتَ "عبد الحق" فى السبِّ والهجا	فأُقْرِيْك ما أهديتَ لى كالمُشوِّقِ

तमांचा मारती है।

और जिस जगह सच स्पष्ट हो यद्यपि लोग उसे अस्वीकार करें तब भी वह चमक उठता है।

और मुफ़्तरी शीघ्र मारा जाता है और झूठा झूठ के ज़हर से मर जाता है।

तू उसकी बात को प्रत्येक नेकी से खाली पाएगा जैसा कि एक गंदी बदबू वाली कड़वी बूटी जिसका नाम सनअबक है।

अत: ऐसी बूटी काट दी जाती है जिसका अस्तित्व कुछ लाभ नहीं देता और खजूर का प्रत्येक वृक्ष अपनी लंबाई तक पहुंच जाता है।

और मैं ख़ुदा तआला की ओर से वह खजूर हूं जो मेवे के भार की अधिकता से उसके नीचे खंभा दिया गया है अत: जो व्यक्ति मेरे वृक्ष को काटना चाहेगा उसके शरीर से मांस अलग किया जायेगा।

तू ने सच्चों की लड़ाई को आसान समझ लिया है और सच्चों के तीर अन्त में निशाने पर लगा करते हैं।

हे अब्दुल हक़! तू ने गालियों में पहल की तो मैं तेरी वैसी ही दावत करूंगा

وسمّيتَنى كلبًا وقد فُهْتَ شا تما	وجاوزتَ حدّ الامر يا أيها الشقى
وما الكلب إلا صورةٌ أنت روحُها	فمثلك ينبح كالكلاب ويزعَقِ
رميتُك إذ عرّضتَ نفسَك رميةً	ومَن أكثرَ التفسيق يوما يُفسَّقِ
فأسقِيك مِمّا قلتَ كأسًا رويّةً	وذالك دَينٌ لازمٌ كيف يُمحَقِ
فذُقْ أيها الغالى طعامَ التبادلِ	صَفيفُ شِواءٍ بالجَبِيزِ المرقَّقِ
لطَمْناك تنبيهًا فألغيتَ لَطْمَنا	فليتَ لنا النعلينِ مِن جلدِ عَوهَقِ
وتسمع منى كلَّ سبٍّ تريْدهُ	وإنْ ترفُقَنْ فى القول والصول أرفُقِ

जैसा कि तूने अपनी इच्छा से उपहार दिया।

और मेरा नाम तू ने कुत्ता रखा और गालियों से तू ने मुंह खोला है अभागे तू हद से अधिक गुज़र गया।

और कुत्ता एक सूरत में है और तू उसकी रूह है तो तेरे जैसा आदमी कुत्ते की तरह भोंकता है और आर्तनाद करता है।

मैंने तुझे उस समय गाली दी जब तूने अपने नफ़्स को गाली का निशाना बना दिया और जो दुराचारी कहने में हद से गुज़र जाए अन्त में वह दुराचारी ठहराया जाता है।

मैं तेरे ही कथन से तुझे लबालब प्याले पिलाऊंगा और यह अनिवार्य तौर पर अदा करने वाला कर्ज़ है अत: इससे कम नहीं किया जाएगा।

तो हे अतिशयोक्ति करने वाले भाजी का खाना खा भुना हुआ गोश्त है और रोटी के साथ।

हमने चेतावनी के लिए तुझे तमांचा मारा परन्तु तूने तमांचे को कुछ न समझा ऐ काश हमारे पास मज़बूत ऊंट के चमड़े का जूता होता।

और जो तू गाली देना चाहेगा वह हमसे सुनेगा और यदि तू बात और प्रहार

أطلتَ لسَانك كالبغايا وقاحةً	ظلمتَك جهلًا يا أخا الغُول فاتّقِ
وأعلمُ أنّ جموعكم أيها الغوى	علىَّ حِراصٌ لو تُسرّون مُوْبِقى
فأقسمتُ جَهْدًا بالذى هُوَ رَبّنا	سأُصلِى قلوبَ المفسدين وأُحرِقِ
أكفُّ لسانى كلَّ كفٍّ فإنْ تَرُمْ	بِخُبثٍ فإنى دامغٌ هامةِ الشقى
وأشرَاك ما قُلْنا وقد فُهْتَ بالهجا	بكلِمٍ أسالتْنى إليك فأَغْلَقِ
ولا خيرَ فى رفق إذا لم تكن به	مواضعُ رفقٍ تطلُب الرفقَ كالحقِ
ولو قَبْلَ سبِّ المُكْفِرين سببتُهم	لكنتُ ظلوما مُسْرفًا غيرَ متّقى

में नर्मी करेगा तो हम भी नर्मी करेंगे।

तूने व्यभिचारिणी स्त्रियों के समान अपनी जीभ लम्बी की (गुस्ताख़ी की) और हे पिशाच तू ने स्वयं पर ज़ुल्म किया।

और हे गुमराह मैं ख़ूब जानता हूं कि तुम्हारे गिरोह मेरे क़त्ल के लिए बहुत लोलुप हैं यदि मेरे क़त्ल का अवसर पाओ।

अत: मैंने ख़ुदा तआला की क़सम खाई है कि शीघ्र ही मैं उपद्रवियों के दिल जलाऊंगा।

मैं यथासंभव जीभ को बन्द रखता हूं अत: यदि तू बुराई का इरादा करे तो मैं अभागे का सर तोड़ने वाला हूं।

और मेरी बात तुझे क्रोध में लाई और तू पहले बुराई कर चुका ऐसे वाक्यों के साथ जिन्होंने मुझे क्रोधित किया अत: मैं क्रोध करता हूं।

और उस नर्मी में अच्छाई नहीं जो नर्मी के स्थान पर न हो ऐसा स्थान जो नर्मी को चाहता है और अधिकार की तरह उसे मांगता है।

और यदि मैं काफ़िर ठहराने वालों के गाली देने से पहले गाली देता तो मैं

ولكن هجَوا قبلى فأوجَبَ لى الهجا	هجاهم فما عُدْوانُ عبدٍ مُسَبَّقِ
وقد كفَّرونِ وفسّقونِ وإنهم	كذئب سطَوا أو مثل سيفٍ مُشَقِّقِ
وما كان قصدى أن أكلّم مثلهم	ولٰكِنّهم قد كلّفونى فأُقْلَقِ
لهم صولُ كَلْبٍ والتحَوّى كحيّةٍ	وعاداتُ سِرْحانٍ وقلبٌ كخِرْنِقِ
و أرسلنى ربى لكَفْئِ سيولهم	وغيضِ مياهٍ قد عَلَتْ مِن تدفُّقِ
وإنى من المَوْلىٰ وعُلِّمتُ سُبُلَهُ	وأُعطيتُ حِكمًا مِن خبيرٍ مُوفِّقِ
فنجَّيتُ مِن بِدَعِ الزمان وفِتَنِه	أناسا أطاعونى وزادوا تعلُّقى

ज़ालिम और हद से गुज़रने वाला और संयमी न होता।

परन्तु उन्होंने मुझ से पहले निन्दा की तो उनकी निन्दा ने निन्दा करने पर उकसाया तो उस व्यक्ति पर क्या आरोप जिस पर पहल की गई।

उन्होंने मुझे काफ़िर ठहराया और पापी ठहराया तथा उन्होंने भेड़िए की तरह आक्रमण किया या फाड़ने वाली तलवार की तरह।

और मेरी नीयत न थी कि उनकी तरह बातचीत करूं परन्तु उन्होंने मुझे कष्ट दिया अत: मैं भी बेआराम किया गया।

उनका आक्रमण कुत्ते के समान है और सांप की तरह ऐंठना है और भेड़िए के समान आदतें हैं और खरगोश का दिल है।

और मेरे ख़ुदा ने मुझे भेजा है ताकि मैं इस्लाम की ओर से उनके सैलाब को हटा दूं और ताकि मैं उन पानियों को सुखा दूं जो गिरते-गिरते अधिक हो गए हैं।

और मैं ख़ुदा तआला की ओर से हूं और दूरदर्शी समर्थन देने वाले से मुझे हिकमतें दी गई हैं।

अत: मैंने युग की बिदअतों और फ़ित्नों से उन लोगों को मुक्ति दी है जिन्होंने

ألم تر كيف يشقُّ فُلْكى حُبابَها	وتجرى على راس العدا كالمُصَفِّقِ
وأُعطيتُ مِن علم الهُدٰى وتأَفَّقَتْ	بنا شمسُ جلوتِه فصرتُ كمَشرِقِ
ولى آية كبرىٰ فمَن غضَّ بصرَهُ	عنادًا فمَن يعطيه عينَ التأنُّقِ
ألم تر فتنَ الدّهر كيف تكنّفتْ	وهبَّتْ رياحٌ لا كهيجانِ سَوْهَقِ
فجئتُ من الربّ الذى يرحم الورى	ويُرْسل غيمًا عند قحطٍ مُعَنْزِقِ
أنا الضيغم البطل الذى تعرفونه	ثِمال الصّدوقِ مُبيدُ أهلِ التخَلُّقِ
على موطن يخشى الكذوبُ هلاكَه	نقوم بصَمْصَامٍ حديْدٍ وأذلَقِ

मेरा आज्ञापालन किया और मेरा संबंध बढ़ाया।

क्या तू देखता नहीं कि मेरी नौका फ़ित्ना के भारी पानी को कैसे फाड़ रही है और दुश्मनों के सरों पर ऐसी चलती है कि एक हाल से दूसरे हाल तक पहुंचा देती है।

और मुझे हिदायत का ज्ञान दिया गया और उसके जलवे का सूर्य मुझे पहुंचा है और मेरे क्षितिज में से निकला तो मैं पूरब के समान हो गया।

और मेरे लिए महान निशान है अत: जो व्यक्ति शत्रुता से अपनी आंख बन्द करे उसे अच्छाइयों पर विचार करने की आंख कौन दे।

क्या तू देखता नहीं कि युग के फ़ित्नें कैसे छा गए और ऐसी हवाएं चलीं कि तीव्र वायु का चक्रवात क्या होता है।

अत: मैं उस रब्ब की ओर से आया जो सृष्टि पर दया करता है और बादल को तंग करने वाले दुर्भिक्ष के समय भेजता है।

मैं वह बहादुर शेर हूं जिसे तुम पहचानते हो सच्चे की शरण और झूठे को मारने वाला।

उस मैदान में जो झूठा अपनी मौत से डरता है हम तेज़ तलवार के साथ खड़े

فمن جَاءنا فی موطن الحرب وَالوغیٰ	یُداسُ ویُسحَق کالدواء المدقَّقِ
و واللّٰهِ أَلقیتُ المراسی للعدا	وقمتُ لسِلْمٍ أو لحرب مُمَزَّقِ
فإن جنحوا للسَّلم فالسِّلمُ دیننا	وإن نُدْعَ فی الهیْجاءِ لَمْ نتأبَّقِ
أراهم کآرامٍ وعِیْنٍ بصورهم	وإن القلوب کمثل حجرٍ مُدَمْلقِ
وإن تبغِنی فی ندوة السِّلم تُلْفِنی	وإن تَدْعُنی فی موطن الحرب تلتَقِ
ونخضعُ للإعداء قبل خضوعهم	ونرحل بعد الخصم مِن کلّ مأزَقِ
فإن أسلموا خیر لهم ولئن عصوا	فنکلِّمهم مِن بعده کالمشقَّقِ

हो जाते हैं।

अत: जो व्यक्ति लड़ाई के मैदान में हमारे पास आया तो वह पीसा जाएगा जैसा कि औषधि पीसी जाती है।

और ख़ुदा की क़सम मैंने दुश्मनों के लिए लंगर डाला है और मैं सुलह के लिए खड़ा हूं और उस लड़ाई के लिए जो टुकड़े-टुकड़े करने वाली है।

अत: यदि सुलह के लिए झुकें तो सुलह हमारा धर्म है और यदि हम लड़ाई में बुलाए जाएं तो हम छुपे हुए नहीं।

मैं उनको बाह्य रूप में हिरणों और जंगली गायों की तरह देखता हूं और दिल उनके पत्थर के समान कठोर हैं।

और यदि तू मुझे सुलह की मजलिस में बुलाएगा तो वहां पाएगा और यदि तू मुझे युद्ध के मैदान में बुलाएगा तो मैं तुझे मिलूंगा।

और हम दुश्मनों के लिए इससे पूर्व कि वह झुके झुकते हैं और हम मैदान से जब तक दुश्मन कुछ न करे कुछ नहीं करते।

अत: यदि इस्लाम लाए तो उनके लिए अच्छा है और यदि अवज्ञाकारी हुए

وقدجئتكم من نحو عشرين حِجّةً	ففكِّرْ أ هذا مدّةُ المتخَلِّقِ
عجبتَ عَماءً أن أكون ابنَ مريم	وإن شاء ربى كنتُ أعلى وأسبَقِ
وتُذكِّرُ لَعْنَ الخَلق فى أمر "آتمٍ"	وقد لُعِنَ الابرارُ قبلى فحَقِّقِ
وإن الورى عُمىٌ يسبّون عُجْلةً	فليس بشيء لعنُهم يا ابنَ أحمقِ
بل الله يُرجِع لعنَ كُلّ مزوّرٍ	إليّه فيُمسى بالملاعين مُلحَقِ
فدَعْ عنك ذِكر اللّعن يا صيدَ لعنةٍ	ألم تر ما لاقيتَ بعد التَلَقْلُقِ
أ تزعم يا مَن لَعَنَنى بالجفاء أَن	تخلّص منّى بل تُدَق وتُسْحَقِ

तो इसके बाद हम उन्हें ऐसा जख़्मी करेंगे जैसे कि कोई फाड़ा जाता है।

और मैं तुम्हारे पास लगभग बीस वर्ष से आया हूं तो सोच कि क्या यह झूठे की अवधि है।

तूने अंधेपन से आश्चर्य किया कि मैं इब्ने मरयम हो जाऊं और यदि ख़ुदा चाहे तो मैं इस पद से भी श्रेष्ठ पद हो जाऊं।

और **आथम** के मुक़द्दम: में तो लोगों की लानत का ज़िक्र आता है।

तथा लोग अंधे हैं जल्दी से गालियां देना आरंभ कर देते हैं यह मूर्ख के बेटे उनका लानत करना कुछ चीज़ नहीं है।

अपितु ख़ुदा तआला प्रत्येक झूठे की लानत ऐसे पर डालता है तो वह ऐसी हालत में शाम करता है कि लानती होता है।

लानत के शिकार लानत का पीछा छोड़ दे क्या तू ने नहीं देखा कि बकवास के बाद तेरा क्या हाल हुआ।

हे वह व्यक्ति जिसने अन्याय पूर्वक मुझ पर लानत की कि तू मुझसे छुटकारा पा जाएगा अपितु पीसा जाएगा।

كحَبٍّ إذا مَا وقع فی مِطّحَن الرَّحیٰ	فیعرُکُه دور الرّحیٰ ویُدقِّقِ
لعنتم وإنّ اللّٰه یلعن وجهکم	ولا لَعْنَ إلاَّ لعن رَبٍّ ممزِّقِ
و کنت أغُضُّ الطرفَ صبرًا علی الاذیٰ	فلما انتهی الإیذاء ذقتم تخفُّقی
و إن کان صلحاء الزمان کمثلکم	فلا شك أنی فاسق بل کأفسَقِ
وما إن أری فی نفسك العلم والتُّقیٰ	تصول کخنْزیرٍ و کالحمرِ تشهَقِ
رقصتَ کرقصِ بغیّةٍ فی مجالسٍ	وفَسَّقتَنی مع کون نفسك أفسَقِ
ومانکرَہ المضمار إن کنتَ أهله	ونأتیك یومَ نضالکم بالتّشوّقِ

उस दाने के समान जो चक्की के पीसने के स्थान में पड़ जाए तो चक्की उसे पीस डालेगी और बारीक कर देगी।

तुम ने लानत की और ख़ुदा तुम्हारे मुंह पर लानत करता है और लानत ख़ुदा की लानत है।

और मैं कष्ट पर क्षमा करता हूं और जब कष्ट देना इन्तिहा को पहुंचा तो तुम ने मेरे थोड़े को चख लिया।

यदि युग के सदाचारी तुम्हारे जैसे हों तो कुछ सन्देह नहीं कि मैं पापी अपितु सबसे बड़ा पापी हूं।

और मैं तेरे नफ़्स में ज्ञान और बुद्धि नहीं देखता तू सूअर की तरह आक्रमण करता है और गधों की तरह आवाज़ करता है।

और तू व्यभिचारिणी स्त्री के समान नाचा और मुझे पापी ठहराया हालांकि तू सबसे अधिक पापी है।

और हम मैदान से घृणा नहीं करते यदि तू उसके योग्य हो और हम तुम्हारी

ومهما يكنْ حقٌّ من الله وَاضِحٌ	وإنْ ردَّها زمرٌ من الناس يبرُقِ
فذَرْنی و ربّی إننی لك نَاصِحٌ	وإن أ كُ كذّابًا فأُرْدَى وأُوْبَقِ
دعوتَ علیّ فردَّه الله سَاخطا	علیك فصرتَ كمثل ثوبٍ مُخَرْبَقِ
تعالوا نناضِلْ أَيّها الزمر كلكم	ليهلك مَن أرداه سمّ التخلُّقِ
أراكم كذئب أو ككلب بصولكم	وضَاهَى تكلُّمُكم حمارًا ينهَقِ
لقدْ ذاق منا قومنا غيرَ مرّةٍ	حُسامًا جراحتُه إلى الفَرْقِ ترتقی
وإن كنتَ فی شكٍّ فسَلْ شيخَ فَجرةٍ	غويًّا غبيًّا فی البطالةِ مُوبَقِ

लड़ाई में शौक से आएंगे।

और जिस जगह ख़ुदा तआला की ओर से सच स्पष्ट हो और यद्यपि लोग उसे अस्वीकार कर दें वह सच चमक उठता है।

इसलिए मुझे मेरे रब्ब के पास छोड़ दे यदि मैं झूठा हूं तो मार दिया जाऊंगा।

तूने मुझ पर बद्दुआ की तो ख़ुदा ने तेरी बद्दुआ को तुझ पर अस्वीकार कर दिया अतः तू फटे हुए कपड़े की तरह हो गया।

हे गिरोह के समस्त लोगो आ जाओ ताकि वह व्यक्ति मरे जो झूठ के ज़हर से मरा।

मैं तुम्हें भेड़िए के समान देखता हूं या आक्रमण में कुत्ते की तरह और तुम्हारा कलाम गधे की आवाज़ के समान है।

हमारी कौम ने असंख्य बार हमारी तलवार का स्वाद चखा है जिनका ज़ख़्म चोटी तक पहुंचता है।

अतः यदि तुझे सन्देह है तो शेख़ बटालवी से पूछ ले जो मंदबुद्धि और गुमराह तथा झूठ में तबाह किया गया।

لكلّ امريءٍ عزمٌ لامرٍ، وعزمُه	إهانةُ دين الله فاذهَبْ و حَقِّقِ
ألا أيها الشيخ الشقىّ تَعمَّقِ	وفكِّرْ كإنسان إلى ما تَنهقِ
أ كفّرتَ قومًا مسلمين خباثةً؟	ظلمتَك جهلًا فاتّقِ الله وارفُقِ
وتُقطَع أيدى السّارقين لِدِرْهَمٍ	فقُلْ ما جزاء مكفِّرٍ ومفسِّقِ
صبرنا على طغواك فازددتَ شقوةً	وخادعتَ أنعامًا بقولٍ ملفَّقِ
وإن شئتَ بارِزْنى وإن شئت فاستتِرْ	فإنى سأمحو كلَّ ما كنتَ تنمقِ
وجدتُك مِن قوم لئام تأبّطوا	شرورًا وسبّوا الصالحين كحِذْلقِ

प्रत्येक व्यक्ति किसी बात के लिए इरादा रखता है और इस व्यक्ति का इरादा धर्म को अपमानित करने का है जो और पड़ताल कर ले।

हे दुर्भाग्यशाली शेख़ सोच और इन्सान की तरह विचार कर और गधे की तरह आवाज़ न कर।

क्या तू ने मुसलमान को अपनी दुष्टता के कारण काफ़िर ठहराया तू ने मूर्खता से अपने ऊपर अन्याय किया अत: डर और नर्मी कर।

और दिरहम के लिए चोरों के हाथ काटे जाते हैं तो बता कि काफ़िर ठहराने वाले का दण्ड क्या है ?

हमने तेरे अत्याचार पर सब्र किया और चौपाइयों को तू ने केवल बातों से धोखा दिया।

यदि चाहे तो मुक़ाबला कर और यदि चाहे तो छुप जा तो मैं प्रत्येक जो तू ने लिखा था शीघ्र मिटा दूंगा।

मैंने तुझे उस कौम में से पाया है जिन्होंने शरारतों को बग़ल में तथा सदाचारीयों को गालियां दीं जैसे झूठे और डींगें मारने वाले देते हैं।

سببتَ وأغريتَ اللئام خباثةً	عليّ فآذونی ککلب يحرّقِ
فأُقسِم لو لا خشية الله والحيا	لازمعتُ أَنْ أُفنيك سَبًّا و أَدهَقِ
وقدضاقت الدنيا عليك كماترىٰ	ودينك هذا فاتّقِ الله و ارفُقِ
وإن كنتَ قد سرّتْك عادةُ غلظةٍ	فمَزِّقْ ثيابی، مِن ثيابك أَمزِقِ
ألم ترَ شمل الدين كيف تفرّقتْ	فليتَ كمثلك جاهلٌ لم يُخلَقِ
وكذّبتَ نبأ الله فی خائرٍ فنا	وقلتَ بخبثٍ أنّه لم يَصْدَقِ
وتنحتَ بُهتانًا عليّ كَفَاسِقٍ	وتُعزی إلىٰ نفسی جرائمَ مُوبِقِ

तू ने गालियां दीं और बहुत से मूर्खों को गाली के लिए प्रेरणा दी तो उन्होंने दांत पीसने वाले कुत्ते की तरह कष्ट दिया।

अत: मैं कसम खाता हूं कि यदि ख़ुदा का भय और शर्म न होती तो मैं तो इरादा करता कि तुझे गालियों से फना कर देता।

और दुनिया तुझ पर तंग हो गई जैसा कि तू देखता है और धर्म तेरा यह है अत: ख़ुदा से डर और नर्मी कर।

यदि तुझे खुरदरा बोलने की आदत अच्छी मालूम होती है तो तू मेरे कपड़े फाड़ और मैं तेरे फाड़ दूंगा।

क्या तूने देखा नहीं कि धर्म में किस प्रकार फूट पड़ गई है काश तेरे जैसा मूर्ख पैदा ही न होता।

और लेखराम की भविष्यवाणी के बारे में तू ने झुठलाया और धृष्टता पूर्वक कहा कि वह सच्ची नहीं हुई।

हे दुष्ट क्या तू क़त्ल करने वाले का गुनाह मुझ पर लगाता है। हे दुर्भाग्यशाली क्या तू ख़ुदा से नहीं डरता।

أ ترمی بریًّا یا خبیث بذنبه	ألا تتّقی الدیّانَ یا أیّها الشّقی
فطورًا تشیر إلیّ خبثًا وتارةً	تشیر إلی حزبی بکذبٍ تخلّقِ
وَوَاللهِ إن جماعتی فی جموعکم	کشجرةٍ عَذْقٍ عند نبت السَنَعْبَقِ
ومثل الذی یتّبعنی بعد سِلمه	کمثل ذُرَی سِرٍّ مُرَبًّی بأودَقِ
فلما عراه المَحْلُ رُبِّیَ ثانیًا	فصار کمَوْلِیِّ الاسِرَّةِ مُوْرِقِ
أ تنکر آیَ الله خُبْثًا و شِقْوةً	وآیةَ مَیْتٍ با لدّم المندفِقِ
أَذَلَّتْ لی الاعْنَاقُ من غیر آیةٍ؟	أ جآء تنی العُلمَاء من غیر مُقْلِقِ؟

अत: तू कभी मेरी ओर संकेत करता है और कभी मेरी जमाअत की ओर उस झूठ से जो बना रहा है।

और ख़ुदा की कसम मेरी जमाअत तुम्हारी जमाअतों में खजूर के वृक्ष कि तरह है जो एक खराब बूटी के पास हो जिसका नाम सनअिबक है।

और जो इस्लाम के बाद **मेरा आज्ञाकारी** हो उसका यह उदाहरण है जैसे की घाटी की उत्तम भूमि की चोटी जिस पर काला बादल बरस गया है।

तो जब उस पर दुर्भिक्ष आया तो फिर उस पर पानी बरसा तो वह उस उत्तम भूमि की तरह हो गए जिस पर दोबारा वर्षा होती है और अपनी हरी पत्ती बाहर ले आती है।

क्या तू ख़ुदा के निशानों का इन्कार करता है और उस मुर्दे के निशान को जिस के साथ खून टपकता है।

क्या **निशान** के बिना ही गर्दनें मेरी ओर झुक गईं क्या **उलेमा** बिना किसी प्रेरक और बेआराम करने वाले के मेरे पास यों ही आ गए।

إلى الله نشكو مِن ظنونِ مُكذِّبٍ	وإنّ المكذّب سوف يُخْزى ويُسحقِ
أتنكر آيةَ خالقِ الارض والسَّما	أ أنت تحارب قَدْرَه أيّها الشقى
أ تُذعِرنا كالذئب يا كلبَ جيفةٍ	وإنا توكلنا على حافظٍ يقِى
رضينا بربٍّ يُظهِر الخير وَالهُدىٰ	رَضيْنا بعُسرٍ إنْ قَضىٰ أو تَفَنَّقِ
أأنت تُؤَيّد فاسقا غير صالح	أَحَلْتَ بجهلك أيها الغُوْل فاتَّق
وإنى إذا ما قمتُ لله مُخلصًا	فأيَّدنى ربّى معينى مُوفِّقِى
وكان لى الرحمٰن فى كل مَوْطِنٍ	فمَزَّقْتُكم بالله كلَّ المُمَزَّقِ

हम ख़ुदा की ओर झुठलाने वालों की कुधारणाओं की शिकायत ले जाते हैं और झुठलाने वाला बदनाम किया जाएगा और पीसा जाएगा।

क्या तू ख़ुदा के निशानों से इन्कार करेगा हे अभागे क्या तू उसके तक़दीर से युद्ध करेगा।

हे मुर्दार के कुत्ते क्या तू हमें भेड़िए की तरह डराता है और हमें उस संरक्षक पर भरोसा है जो निगाह रखने वाला है।

हम ख़ुदा से जो भलाई और बरकत को प्रकट करता है राज़ी हो गए और हम कंगाली पर राज़ी हो गए यदि वह चाहे और या नेमतों पर।

क्या तू पापी होने की अवस्था में सहायता किया जाएगा यह तो तू असंभव बात मुंह पर लाया अत: तौब: कर।

और जब मैं निष्कपटता पूर्वक ख़ुदा के लिए खड़ा हुआ तो सामर्थ्य देने वाले ख़ुदा ने मेरी सहायता की।

और ख़ुदा मेरे लिए हर मैदान में था तो मैंने ख़ुदा के साथ तुमको टुकड़े-टुकड़े कर दिया।

وأُعطيتُ قلمًا مثل منجرِ الوغىٰ	فيُسعِر نيرانا وكالبرق يخفُقِ
مِكَرٌّ مِفَرٌّ مُقبِلٌ مُدبِرٌ معًا	كدأبِ أجارِدَ عند مَوْقدِ مأزَقِ
وإنّ يَراعى صارمٌ يحرق العَدا	كنار وما النيران منه بأحرَقِ
وإن كلامى مثل سَيْفٍ مقطّعٍ	يَجُذُّ رؤوس المفسدين ويفرُقِ
وإنى إذا حاوَلْتُ كَلِمًا فصيْحةً	فناولَنى ربى أفانينَ منطِقى
وأُعطيتُ فى سُبُل الكلام قريحةً	كحوجاء مِرقال تزُجُّ وتدبق
ونزَّهها الرحمٰن عن كُلِّ أَبْلَةٍ	وصُيِّرَ غيرى كالحقير الحَبَلَّقِ

और मैं युद्ध के घोड़े की तरह क़लम दिया गया हूं। अत: आग को सुलगाती है और बिजली की तरह हिलती है।

आक्रमण करने वाले, भागने वाले, आगे होने वाले तथा पीछे होने वाले जैसा कि युद्ध के मैदान में उत्तम घोड़ों की आदत है।

और मेरा क़लम एक तलवार है जो दुश्मनों को जलाता है और आग उससे कुछ अधिक जलाने वाली नहीं।

और मेरा कलाम काटने वाली तलवार के समान है जो उपद्रवियों का सर काटती और पृथक करती है।

और जब मैंने ख़ुदा से फ़साहत के वाक्य मांगे तो मैं अपने रब्ब की ओर से रंग-बिरंगे कलाम की फ़साहत दिया गया।

तथा कलाम के मार्गों में ऐसी प्रकृति दिया गया हूं जो उस कमज़ोर ऊंटनी की तरह है जो तेज़ और प्रत्येक ऊंटनी से आगे रहती है।

और ख़ुदा ने बातों को प्रत्येक क्षति से पवित्र रखा और मेरा विरोधी तिरस्कृत छोटे क़द की तरह किया गया।

علونا ذری قنن الكلام و قولنا	زلالٌ نَميرٌ لا كَمَاءٍ مُرَنَّقِ
فلو جاء نا بالزمر سَحبانُ وائلٍ	لفرَّ من الميدان خوفًا كخِرْنِقِ
وفاضت على شفتى من الله رَحْمةٌ	فقولى ونطقى آيَةٌ للمُحقّقِ
و كلِم كسِمطَى لُؤلُوءٍ قدنظمتُها	وجمل كأفنان العُذَيْق الاسْمَقِ
إذا ما عرضْنا قولنا كالمناضلِ	كَمَيتٍ سقطتم أو كثوبٍ مُخَرَّقِ
فما كان يوم الجمع إلّا لذلّكم	ليُبْدى ربّى شأنَ رجلٍ موفّقِ
أبادكم الرحمٰن خزيًا وَّ ذِلّة	و أيّدنى فضلًا ففكِّرْ وعَمِّقِ

हम कलाम के पर्वतों के शिखर पर चढ़ गए और हमारा कथन शुद्ध और साफ़ पानी है और मैला तथा गंदा नहीं।

अत: यदि अपने गिरोह के साथ सहबान वाइल भी हमारे पास आए तो तू डरकर खरगोश की तरह मैदान से भाग जाए।

और ख़ुदा की ओर से मेरे होठों पर रहमत जारी की गई है। अत: मेरा कथन और बोलना एक अन्वेषक के लिए एक निशान है।

और शब्द मोतियों के समान हैं जिनको मैंने छंदोबद्ध किया है और उत्तम वाक्य जो खजूर की शाखाओं के समान हैं वह खजूर जो बहुत लम्बी चली गई है।

जब हमने लड़ने वाले के समान अपना-अपना कलाम प्रस्तुत किया तो तुम मुर्दे की तरह या फटे हुए कपड़े की तरह गिर गए।

तो हिदायत के जलसे का दिन ऐसे उद्देश्य से था कि तुम्हारा अपमान प्रकट हो और ताकि ख़ुदा तआला सामर्थ्य प्राप्त इन्सान की शान प्रकट करे।

ख़ुदा ने तुम लोगों को अपमान की मार से मार दिया और अपने फ़ज़्ल (कृपा) से मेरी सहायता की अत: सोच और खूब सोच।

ألا رُبَّ خصمٍ كان أَكْوىٰ كمثلكم	مُصِرًّا على تكفيره غير مُعتِقى
فلما أتاه الرشد مِن واهبِ الهدى	أتانى وبايَعَنى بقلبٍ مصدِّقِ
رأيتُ أولى الابصار لا ينكروننى	وينكر شأنى جاهلٌ مُتحرِّقِ
لهم أعين لا يبصرون بها فمَنْ	يُريهم إذا فقدوا عيونَ التأنُّقِ
ألآ أيها الغالى إلامَ تُفسِّقُ؟	فدونك نُصحى واتّق الله وارفُقِ
وما جئتكم مِن غير آيٍ وحُجّةٍ	وقد أشرقتْ آياتُ ربّى وتُشرِقِ
فما وقع منها خُذْ كمَنْ يطلب الهدى	وما لم يقَعْ فاترُكْ هواك ورَنِّقِ

सावधान हो बहुत से दुश्मन तुम्हारी तरह बहुत लड़ने वाले थे काफ़िर ठहराने पर आग्रह करने वाला न रुकने वाला।

तो जब उसको ख़ुदा की ओर से हिदायत पहुंची, मेरे पास आया और दिल के सत्यापन से बात की।

मैंने बुद्धिमानों को देखा है कि मेरा इन्कार नहीं करते और जो मूर्ख तथा कंजूस हो वह मेरी शान से इन्कार करता है।

उनके लिए आंखें हैं जिनसे वे नहीं देखते फिर उन्हें कौन दिखाए जब वे अच्छी बातें देखने की आंख नहीं रखते।

हे अतिशयोक्ति करने वाले तू कब तक गालियां देगा मेरी नसीहत स्वीकार कर और ख़ुदा से डर तथा नर्मी कर।

और मैं बिना निशान के तुम्हारे पास नहीं आया और मेरे रब्ब के निशान चमके हैं और इसके बाद चमकेंगे।

तो जो कुछ उसमें से घटित हो गया उसे हिदायत के अभिलाषी के समान ले

رأيتُ كثيرا مِن لئامٍ وّ إنّنِى	كمثلك ما آنستُ رَجُلاً زَبَعْبَقِ
تستَّرَ لُبُّك تحتَ كبرٍ وَّنخوةٍ	كلُبِّ عفا فى بطنِ جوزٍ مُرَصَّقِ
أراك كفَدَّانٍ تخاذَلُ رجلُه	فلا بدّ من رجلٍ يسوق ويزعَقِ
ومَا أَنتَ إلَّا كالعصَافيرِ ذلةً	وتحسب نفسك مِن عَماءٍ كسَوذَقِ
فتُرجَم يا إبليس ثم بحَربةٍ	تُمزَّقُ تمزيقا كثوبٍ مُشَبْرَقِ
ورثت لئامًا قد خلوا قبل وقتكم	تشابهت الاطوارُ يَا أَيُّهَا الشقى
وساءتْك ما قلنا فعينُك قد عمتْ	كمثل خفافيشٍ إذا الشمس تُشرِقِ

ले और जो घटित नहीं हुआ उसके लेने का प्रतीक्षक रह।

मैंने बहुत कंजूस देखे परन्तु मैंने तेरे जैसा दुष्ट प्रकृति वाला कोई न देखा।

तेरी बुद्धि घमंड और अहंकार के नीचे छुप गई है उस अखरोट की गिरी की तरह जो तंग और कठोर छिलके वाले अखरोट में छुप गया हो।

मैं तुझे उस बैल की तरह देखता हूं जो चलने में सुस्ती करता है अत: ऐसे आदमी का होना आवश्यक है जो हांके और ऊंचे स्वर से डांटे।

और तू कुछ नहीं एक चिड़िया है और अंधेपन के कारण स्वयं को एक बाज़ समझता है।

अत: हे इब्लीस तू पत्थरों से मारा जाएगा फिर एक चोट के साथ पतले कपड़े की तरह टुकड़े-टुकड़े किया जाएगा।

तू उन कंजूसों का वारिस हो गया जो तुमसे पहले गुज़र गए हैं हे भाग्यहीन तेरे ढंग उनसे समान हो गए।

और तुझे हमारी बात बुरी मालूम हुई और तू अंधा हो गया उन चमगादड़ों की

ومَن لم يكن فى دينهِ ذا بصيرةٍ	يكُنْ أمرُه تكذيبُ أمرٍ محقَّقِ
قفَوتم أمورًا لم يكن عِلمُها لكم	فإنى عَلَيْكم يا عدا الحقِّ أُشفِقِ
و تُنكِر ما أَبْدى المُهَيمنُ عزّتى	ولا تنتهى بل كالمجانين تَشمَقِ
وبونٌ بعيد بين شِلْقٍ وقِرْشِنا	فنبلَعكم كالقرش يا أهلَ عَمْلَقِ
ونحن بحمد الله نِلْنا مدارجًا	وصرتم كمَيتٍأو كخَشْبٍمُدَهْدَقِ
أحاطت بنا الانوار من كل جانب	ومِن أفقنا شمسُ المحاسن تُشرِقِ
وينمو من الرحمن حقٌّ مطهَّرٌ	وما كان مِن غُولٍ فيَفنَى ويُمحَقِ

तरह जो सूर्य के चमकने के समय अंधे हो जाते हैं।

और जो व्यक्ति अपने धर्म में विवेक न रखता हो अन्वेषकों का झुठलाना उसकी आदत हो गई।

तुम उन बातों के अनुयायी हो गए जिनका तुम्हें ज्ञान न था। हे सच के शत्रुओं! मैं तुम्हारी हालत पर हताश हूं।

और ख़ुदा ने जो हमारा सम्मान प्रकट किया उस से तू इन्कार करता है तथा रुकता नहीं अपितु पागलों की तरह प्रसन्न होता है।

और छोटी मछली और हमारी बड़ी मछली में बड़ा अंतर है। अत: हे अत्याचारियों! हम तुम्हें बड़ी मछली के समान निगलेंगे।

और हम ख़ुदा तआला के फ़ज़्ल से पदों तक पहुंच गए और तुम मुर्दे की तरह हो गए या टूटी हुई लकड़ी की तरह।

हमें हर ओर से प्रकाश ने भरा हुआ है और हमारी नर्मी से सूर्य अच्छाइयां उदय करता है।

और ख़ुदा की बात फलती-फूलती है और जो शैतान की ओर से हो वह फ़ना

أأنت علينا بابَ ذی المجد تُغلِقِ	وَوَاللّٰهِ إنی مؤمنٌ ومُحِبّهُ
تقول فقيرٌ مفلِسٌ بل كمُدْحَقِ	وتذكُرنی كالمفسدين مُحقِّرًا
بمالٍ وأولادٍ وجاهٍ ونُسّتُقِ	أتفخر يا مسكين مِن قِلّة النّهیٰ
ولا مالَ فی الدنيا كقلبٍ يتّقی	وما الفخر إلا بالتقاة وبالهُدی
وإن الفتیٰ بعد البصيرة يَعْتَقِی	تسبُّ وقد شاهدتَ صِدْقی وآيتی
حديث صحيح لا كقولٍ مُلفَّقِ	علی رأس مائةٍ بُعث رجلٌ مجدّدٌ
وقد عصمنی ربُّ الوری مِن تخَلُّقِ	أتعزو إلیَّ الافترائَ خباثةً

हो जाता है और क्षतिग्रस्त हो जाता है।

और **ख़ुदा की क़सम** मैं मोमिन और ख़ुदा का प्रेमी हूं क्या तू हम पर ख़ुदा तआला का दरवाज़ा बन्द करता है।

और तू मुझे तिरस्कार से याद करता है तथा कहता है कि एक मोहताज दरिद्र अपितु ऐसे आदमी की तरह है जो बिल्कुल भाग्यहीन हो।

हे दरिद्र! क्या बुद्धि की कमी के कारण माल, संतान, पद और नौकर-चाकरों से गर्व करता है।

और गर्व केवल संयम के साथ है तथा दुनिया में कोई माल संयमी दिल के समान नहीं।

तू मुझे गाली देता है और मेरी सच्चाई और मेरी शान देख चुका है और मर्द इन्सान बुद्धिमत्ता के बाद गाली गलौज से ठहर जाता है।

सदी के सिर पर एक मुजद्दिद आया यह सही हदीस है कोई बनावटी का कथन नहीं है।

क्या तू मेरी ओर दुष्टता से इफ़्तिरा करता है और ख़ुदा ने मुझे झूठ बोलने से

نشأتُ أحِبُّ الصّدقَ طفلاً ويافِعًا	وكهلاً ولو مُزِّقتُ كلَّ الممزَّقِ
شرِبنا زُلالاً لا يُكدَّر صفوُه	وذُقنا شرابا محيِيًا مِن تذوُّقِ
عجبتُ لعقلك يا أسيرَ ضلالةٍ!	تركتَ نميرَ الماء مِن حُبّ غَلْفَقِ
أتُبصِر فى عَيْنَىْ مخالفك القَذى	وعينُك مِن جِذْلٍ عتا تتشقَّقِ
تموت بوادٍ ذى حِقافٍ عَقَنْقَلٍ	وتكره روضًا مِن عُذَيْقٍ مُلبَّقِ
تجلّى الهُدى والشمسُ نضّتْ نقابَها	وأنت كخفّاش الدُّجى تتأبَّقِ
وسمّيتَنى أشقى الرّجال تعصّبًا	فتعلَم إنْ مِتنا غدًا أيُّنا الشّقى

बचाया हुआ है।

मैं बचपन से जवानी और अधिक आयु के समय तक सच्चाई से मित्रता रखता हूं यद्यपि टुकड़े-टुकड़े किया जाऊं।

हमने वह पानी पिया है जिस की शुद्धता गन्दी नहीं होती और हमने वह शरबत पिया है जो कभी-कभी पीने से ज़िन्दा कर देता है।

हे गुमराही में गिरफ़्तार तेरी बुद्धि पर आश्चर्य है तू ने अच्छा पानी काई की इच्छा से छोड़ दिया।

क्या तू अपने विरोधी की आंख में तिनका देखता है और तेरी आंख एक मोटी जड़ के अन्दर जाने से फट रही है।

तू एक रेतीले और तह के तह वाले रेत के जंगल में मरता है और खजूरों के बाग़ से बचता है।

हिदायत प्रकट हो गई और सूर्य ने बुर्का उतार डाला और तू चमगादड़ की तरह छिपता है।

और तूने मेरा नाम सबसे बड़ा निर्दयी रखा है तो मरने के बाद तुझे मालूम

ولا يستوى المرء ان هذا محقِّقٌ	وآخر يتبع كلَّ قولٍ مُلفَّقِ
أرى رأسك المنحوس قَفْرًا من النُّهیٰ	وقلبًا كمَوماةٍ ونفسًا كسَلْمَقِ
متى ضلَّ عقلُ المَرْءِ ضلَّت حواسُهُ	فلا يُؤنِس الوَحْلَ المُزِلَّ ويزْمقِ
كذلك متّمْ مِن عنادٍ وّ نقمةٍ	فأَنّٰى لكم تأييدُ رَبٍّ مُوفِّقِ
أفى الكفر أمثالٌ جفاءً وّغلظةً	لكم أيها الرامون رَمْىَ التخَلُّقِ
أهٰذا هو التقوى الذى فى جموعكم	أتلك الامور ومثلها شأنُ متّقى
وَقُلتُ لكم توبوا و كُفُّوا لسَانَكُم	فما كان فيكم مَن يتوب و يتّقى

होगा कि हम दोनों में से कौन निर्दयी है।

और ऐसे दो आदमी बराबर नहीं हो सकते कि एक उनमें से अन्वेषक है और दूसरा प्रत्येक अच्छे बुरे का अनुकरण करता है।

मैं तेरे अशुभ सर बुद्धि से खाली देखता हूं और तेरे दिल को अन्न-जल हीन जंगल की तरह और तेरे नफ़्स को बंजर भूमि की तरह।

जब मनुष्य की बुद्धि पथभ्रष्ट हो जाती है तो साथ ही ज्ञानेंद्रियां भी गुमराह हो जाती हैं तो वह फिसलाने वाले कीचड़ को नहीं देखता और फिसल जाता है।

इसी प्रकार तुम शत्रुता और वैर से मर गए तो ख़ुदा की सहायता तुम्हें कहां है।

क्या काफ़िरों में अत्याचार और कठोरता में तुम्हारा कोई उदाहरण पाया जाता है हे वे लोगो जो केवल झूठ बोलकर गालियां दे रहे हो।

क्या यही तुम्हारी जमाअतों का संयम (तक़्वा) है क्या यह बातें उनके समान संयमी की प्रतिष्ठा के योग्य हैं।

और मैंने तुम्हें कहा कि तौब: करो और जीभ को बन्द रखो तो तुम में कोई

وللهِ آياتٌ لتأييد أمرنا	وإنا كتبنا بعضها للمُحقّقِ
علىٰ قلبِ أهلِ الله نزلتْ سَكينةٌ	وقلبك يا مفتونُ يَعوِى وينهَقِ
أيا لاعِنِى إن السعادة فى التُّقَى	فخَفْ قهرَ ربٍّ حافظِ الحقّ وَاتَّقِ
إذا كُتِبَ أنّ الموت لا بد تُدرِكُ	فموت الفتى خير له مِن تَخلُّقِ
ولا يفلح الإنسان إلّا بصدقهِ	وكل كَذُوبٍ لا محالةَ يُوبَقِ
ومالنفتحتْشدقاكبالسبّوالهجا	وتكذيبِ أهل الحق إلاَّ لِتُمْلَقِ
وإنّ سِقام الجسم ملتمَسُ الشفا	وليس دواء فى الدكاكين للشقى

भी ऐसा न था जो तौब: और तक़्वा ग्रहण करता।

और ख़ुदा ने हमारी बात के समर्थन में कई निशान प्रकट किए हैं तथा कुछ को हमने अन्वेषकों के लिए लिख दिया।

वलियों के हृदय पर चैन उतर गया। हे फ़ित्ने में पड़े हुए! तेरा दिल गधे की तरह आवाज़ कर रहा है।

हे मेरे लानत करने वाले नेकी सौभाग्य में है। अत: स्वयं सच पर नज़र रखने वाले से डर और तक़्वा (संयम) ग्रहण कर।

जब लिखा गया कि मौत अवश्य है तो मर्द का मरना झूठ बोलने से अच्छा है।

और मनुष्य केवल सच्चाई से मुक्ति पाता है और प्रत्येक झूठा अंतत: मर जाता है।

और तूने गालियों के साथ इसलिए मुंह खोला है और इसलिए झुठलाता है ताकि हटा दिया जाए।

और शरीर का रोग ठीक होने योग्य है परन्तु दुर्भाग्य की किसी दूकान पर दवा नहीं।

وَوَاللّٰهِ لو لا حَربتى لم تكَدْ ترىٰ	نَهِيكًا تَحُطُّ ضلالةً حين تَسْمُقِ
وإنى كتبتُ قصيدتى هٰذه لكم	فمِن حَيِّكم مَن كان حيًّا ليَنْمُقِ
كَبُكْمٍ أراكم أو كأَ حْمِرَةِ الفلا	غدَا طَلْقُ ألسُنِكم كزوجٍ تُطلَّقِ
أ تحسبُ أن القول قولُ الاجانبِ	وقد صُبَّ مِن عينى كماءٍ مُدَغْفِقِ
فما هى إلّا كلمةٌ قيل مثلها	فقالوا أعانَ عليه قومٌ كمُشْفِقِ
ففَكِّرْ أَتَعلمُ مُنشئًا لى كتَمْتُه	فيملى القصائد لى بحِجْرِ التأبُّقِ
أ تنحَتُ كذبًا ليس عندك شاهدٌ	عليه وتنبَح كالكلاب وتَزْعَقِ

और ख़ुदा की क़सम यदि मेरा हथियार न होता तो तू कोई ऐसा बहादुर न पाता जो गुमराही को बन्द होने से रोकता।

मैंने यह क़सीदा तुम्हारे मुकाबले के लिए लिखा है तुम्हारे गिरोह में से जो जीवित है वह भी लिखे।

मैं तुम्हें गूंगों के समान देखता हूं या जंगल के गधों की तरह और तुम्हारी ज़बान का प्रवाह ऐसा खोया गया जैसा कि स्त्री को तलाक़ दी जाती है।

क्या तू गुमान करता है कि यह कथन ग़ैरों का कथन है हालांकि यह मेरे झरने से टपकने वाले पानी की तरह गिराया गया है।

यह तो ऐसा वाक्य है कि पहले ऐसा कहा गया है तथा लोगों ने कहा कि दूसरों ने इसकी सहायता की है।

अत: विचार कर क्या ऐसा मुंशी तुझे मालूम है जो मैंने छुपा रखा है अत: वह मेरे लिए गुप्त बैठकर क़सीदा लिखता है।

क्या तू ऐसा झूठ गढ़ता है कि उस पर तेरे पास कोई गवाह नहीं और कुत्तों की तरह भोंकता और आर्तनाद करता है।

رضيتَ بحكّاكاتِ إبليس شقوةً	وآثرتَ سبل الغيّ يا أيّها الشّقى
أ تنكر آياتى وقد شاهدتَها	أتُعرِض عن حق مبين مُزَوَّقِ
وقد مات "آتم" عمُّك المتنصّرُ	وقد حُقَّ أن تُمحٰى لُحاكُم وتُحلَقِ
رأيتم جوازيكم من الله ربّنا	ومُتّمْ كموت المفسد المتخلّقِ
وقد قطعَ ربّى آنُفَ الجمع كلِّهم	وأخزى العِدا وأبادَ كُلاًّ بمأزِقِ
تكنَّفَ قلبَك صَدأُ ظلماتِ الشقا	فما إنْ أَرَى فيك الهدايةَ تُشرِقِ
وقدضاعَ ماعُلِّمتَ إن كنتَ عالمًا	كزُبُرٍ إذا حُمِلتْ على ظهرِ زِهْلِقِ

तू शैतानी भ्रमों के साथ राज़ी हो गया है भाग्यहीन तू ने गुमराही के मार्ग ग्रहण किए।

और क्या तू जानबूझकर मेरे निशानों से विमुख होता है क्या तू खुले खुले तथा सजे हुए सच से इन्कार करता है।

और आथम तेरा चाचा ईसाई मर गया और अनिवार्य हुआ कि तुम्हारी दाढ़ियां मिटा दी जाएं और मुंडवाई जाएं।

लो तुमने ख़ुदा तआला की ओर से अपने दण्ड देख लिए और तुम इस प्रकार मर गए जिस प्रकार उपद्रवी झूठा मरता है।

और मेरे ख़ुदा ने समस्त विरोधियों की नाक काट दी और दुश्मनों को बदनाम किया और सब को मैदान में मार दिया।

तेरे हृदय पर दुर्भाग्य का इनकार छा गया तो मैं नहीं देखता कि हिदायत तुझ में चमके।

यदि तू विद्वान था तो तेरा सब ज्ञान बराबर हो गया उन पुस्तकों की तरह है जो गधे पर लाद दी जाएं।

أراك ومَن ضاهاك رَبْرَبَ جهلةٍ	تلا بعضُكم بعضا كأحمقَ أنْزَقِ
رأيتم عواقبكم بترك سفينتى	وضاعتْ خلاياكم ومُتّم كمُغْرَقِ
وعندى عيونٌ جاريات من الهُدى	هنيئًا لرجلٍ قد دناها ليستقى
وأُعطيتُ علمًا يملأ العَين قُرّةً	ونورًا على وجه المخالف يَبْزُقِ
وإنى أرى العادين فى تيهة الشقا	ومن جاءنى صدقًا فقد دخل جَوسَقِى
ولو كنتُ دجّالًا كذوبا لضرَّنى	عداوةُ مَن يّدعو علىَّ لِإوبَقِ
دعَوا ثم سبُّوا ثم كادُوا فخُيّبوا	لِما حفظتْنى عينُ ربٍّ مُرَمِّقِ

मैं तुझे और तेरे जैसों को मूर्खों का रेवड़ देखता हूं कुछ कुछ के पीछे लगे जैसे मूर्ख जल्दबाज़।

तुमने मेरी नौका को छोड़कर अपना अंजाम देख लिया और तुम्हारी बड़ी-बड़ी नौकाएं तबाह हो गईं और तुम डूब चुके इंसान की तरह हो गए।

और मेरे पास हिदायत के झरने जारी हैं। उस आदमी को वे झरने पसन्द हों जो उनके नज़दीक हुआ ताकि पानी पिए।

और मैं ख़ुदा तआला की ओर से ज्ञान दिया गया हूं जो आंख को शीतल करता है और प्रकाश दिया गया हूं जो विरोधी के मुंह पर थूकता है।

और मैं अत्याचारियों को दुर्भाग्य के जंगल में देखता हूं और जो श्रद्धा के साथ मेरे पास आया वह मेरे क़िले में दाख़िल हो गया।

और यदि मैं दज्जाल तथा झूठा होता तो मुझे उस व्यक्ति की शत्रुता अवश्य हानि पहुंचाती जो मुझ पर मेरे तबाह होने के लिए बद्दुआ करता है।

उन्होंने बद्दुआएं कीं फिर गालियां दीं फिर मक्र किया फिर निराश हो गए क्योंकि ख़ुदा तआला की आंख ने मुझे बचा लिया वह ख़ुदा जो हमेशा अपनी

ينازع أقوامٌ ويشتدّ حَرْبهم	فيُعلِي المهيمن كلَّ مَن كان أصدَقِ
فليتَ عقولَ الزّمر قبلَ افتضاحها	يَصِلْنَ إلى حقٍّ مبين مُحقَّقِ
وما أنا إلا منذرٌ عند فتنةٍ	وقد جئتُ مِن ربّى كراعٍ مُعَفِّقِ
ولى قِرْبة شدُّوا علىَّ عِصامَها	لأروِىَ أقواما بماءٍ أغدَقِ
فمَن يأتِنى صدقًا كعطشانَ سَاعيًا	يَجِدْ كاهلى هذا ذَلولًا لمُسْتقِى
فقُمْ شاهدًا لِلّٰهِ إن كنتَ خَاشِعًا	وأكرَمُ ناسٍ عنده فاتِكٌ تقِى
وقد كنتُ لِلّٰهِ الّذى كَانَ مَلْجَأىَ	وذٰلك سرٌّ بين روحى ومُزعِقى

नज़र में रखता है।

क़ौमें झगड़ती हैं और उनकी लड़ाई कठोर होती है फिर ख़ुदा तआला उस व्यक्ति की विजय प्रकट करता है जो उसके नज़दीक सच्चा होता है।

अत: काश कि विरोधी जमाअतों की अक़्लें उनकी बदनामी से पूर्व खुली खुली सच्चाई को पा लें।

और मैं फ़ित्न: के समय एक डराने वाला होकर आया हूं और मैं अपने रब्ब की ओर से ऐसा चरवाहा हूं जो अस्त-व्यस्त बकरियों को अपनी ओर लाता है।

और मेरी एक मश्क है जिसका बंध मुझ पर सुदृढ़ किया गया है ताकि मैं कौमों को बहुत से पानी से तृप्त करूं।

जो व्यक्ति प्यासे की तरह श्रद्धा के साथ दौड़ता हुआ मेरे पास आएगा मेरे इस मोढे को पानी मांगने वाले के लिए झुका हुआ पाएगा।

अत: यदि तू ख़ुदा के लिए विनय रखता है तो ख़ुदा के लिए गवाही के लिए खड़ा हो जा और ख़ुदा के नज़दीक बुज़ुर्ग आदमी वही है जो निडर और सौभाग्यशाली है।

और मैं उस ख़ुदा के लिए हो गया जो मेरी शरण है और यह रहस्य है मुझ

رأيتُ وجوهًا ثم آثرتُ وَجْهَهٗ	فواهًا له ولوجهه المتألّقِ
أُحِبُّ بروحی فالِقَ الحبِّ والنّویٰ	وإنّی لَاَوَّلُ مَن نَوٰی کلَّ مُلْزَقِ
ولِلّٰہِ أسرار بعاشق وجهه	فسَلْ مَن یشاهد بعضَ هذا التعلُّقِ
لِحِبّی خواصٌّ فِی الوصَالِ وفُرقةٍ	ففی القُرْب یحیینی وفی البُعْد یُوبِقِ
وأُعطیتُ مِن حِبِّی قمیصَ خلافةٍ	قمیصَ رسول اللّٰہ أبیضَ أمْهَقِ
وأُعطیتُ عَلَمَ الفتح عَلَمَ محمَّدٍ	وأُعْطِیتُ سیفًا جَذَّ أصلَ التَّخَلُّقِ
فتلك علاماتٌ علٰی صدق دعوتی	فإن کنتَ تطلبها ففَتِّشْ وعَمِّقِ

में और मेरे आर्तनाद स्थल में।

मैंने कई मुंह देखे तो उसका मुंह ग्रहण कर लिया तो क्या ही अच्छा वह है और क्या ही अच्छा है वह चमकने वाला।

मैं अपनी जान के साथ उसे दोस्त रखता हूं जो दाना उसकी गुठली से पृथक करने वाला है और मैं वह पहला व्यक्ति हूं जिसमें प्रत्येक सटे हुए को फेंक दिया है।

और ख़ुदा को उसके प्रेमी के साथ राज़ हैं तो उस व्यक्ति से पूछो जो इस संबंध को देखने वाला है।

मेरे दोस्त के लिए मिलने और जुदाई में विशेषताएं हैं अत: वह सानिध्य में जीवित करता है और दूरी में मारता है।

और मैं अपने प्यारे की ओर से ख़िलाफ़त की कमीज़ दिया गया हूं रसूलु-ल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की कमीज़ जो बहुत सफ़ेद है।

और मैं विजय का झण्डा जो आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का झण्डा है दिया गया हूं और मैं वह तलवार दिया गया हूं जिसने झूठ की जड़ काट दी।

अत: मेरे दावे की सच्चाई पर यह लक्षण हैं यदि तू इन लक्षणों की मांग करता है तो छानबीन कर और सोच।

وإنّ صراطی مثل جَسْرٍ علی اللظی	حفافاه نارٌ فَأْتِنی أیّها التّقی
إذا ما تحامَتْنی الاراذلُ کلھم	فأیقنتُ أن شریفَ قومی سیلتقی
أری اللّٰہَ یُخزی الفاسقین ویصطفی	عبادًا لہٗ قُتِلوا بسَیْفِ التعشُّقِ
ویأتی زمانٌ إنّ ربّی بفَضْلِهٖ	یَجُذُّ رؤوس المُفْسدین ویفرُقِ
وقد صُقِلَتْ کَلِمی کمثلِ سَجَنْجَلٍ	فترنو إلیها مُقْلَةُ المتأنِّقِ
أری غِیْدَ أسرارٍ نَضَضْنَ لِرَمْقِنا	ومِن غیرنا باعَدْنَ کالمتأبِّقِ
إذا ما خرَجنَ من الغَبِیط بزینة	فأصبی رَشاقتُهنّ قلبَ مُرَمِّقِ

और मेरा मार्ग नर्क पर फल है और उसके दोनों किनारों पर आग है अत: हे संयमी मेरे पास आ जा।

और जब समस्त कमीनों ने मुझे छोड़ दिया तो मैंने विश्वास किया कि जो मेरी कौम का सभ्य है वह अवश्य मुझसे मिलेगा।

मैं देखता हूं कि ख़ुदा तआला पापियों को बदनाम करेगा और अपने बंदों को जो प्रेम की तलवार से क़त्ल किए गए चुन लेगा।

और वह समय आता है कि मेरा रब्ब अपने फ़ज़्ल से उपद्रवियों के सर काटेगा और पृथक करेगा।

और मेरे वाक्य दर्पण के समान उज्ज्वल किए गए हैं तो आश्चर्य करने वाले की आंख उसे टकटकी लगाकर देखती है।

मैं देखता हूं नर्म शरीर वाली रहस्य रुचि स्त्रियां हमारे लिए नंगी हो गईं और ग़ैरों से वे छुपने वालों की तरह दूर हो गईं।

और वे होदे से श्रृंगार करके निकलीं तो उनको शरीर की सुंदरता देखने वालों का दिल ले गईं।

إذا ما تجلّٰى حسنُهن بنوره	فرحَلتْ كجاليةٍ ظلامٌ يَغْسِقِ
وقَلَّ مِن الاخْدانِ مَن كان حُسنُه	كحسنِ عذارانا وخَدٍّ أبرَقِ
فجُعِلَتْ بهٖ ذاتُ الكسور لنا السُّوَى	وآنستُ وَهْدَ الجائرين كصَمْلَقِ
وليس كشرح الصدر للمرء نِعْمَةٌ	ومِن أرديٕ الاوقاتِ وقتُ التأزُّقِ
ونفسٌ كمَوماةِ السباع مُبيدةٌ	بها الذئب يعوى كالاسير المخَنَّقِ
فما خفتُ صولتَهم وحقَّرتُ أمرَهم	بما صانني ربّي بعين التومُّقِ
و كاٸِنْ ترىٰ مِن مفسدٍ هو صائلٌ	عليّ فيدفعه الحفيظ ويَغْفِقِ

और जब उनका सौंदर्य अपने प्रकाश के साथ चमका तो अंधकार यूं चला गया जैसा कि वे लोग जो अपने घरों से आवारा फिरते हैं।

और प्रियतमों में से बहुत कम होगा जिसका सौंदर्य हमारे इन छोटे निबन्ध के समान होगा और गाल रोशन होंगे।

अत: हमारे लिए उनके साथ नीचे ऊंचे मार्ग को प्रशस्त किया गया और मैंने अत्याचारियों के गढ़ को समतल भूमि के समान कर दिया।

और मनुष्य के लिए हृदय की प्रफुल्लता जैसी कोई नेमत नहीं और सब समय से अधिक रद्दी समय दरिद्रता का समय है।

और बहुत से ऐसे नफ़्स हैं जो जंगल के दरिन्दों के समान मारने वाले उनमें भेड़िया चीख़ें मारता है जैसा कि क़ैदी जिसका गला घोंटा गया हो।

अत: मैं उनके आक्रमण से नहीं डरा और उनके कारोबार को तुच्छ जाना क्योंकि ख़ुदा ने अपने प्रेम की आंख से मुझे बचा लिया।

और बहुत से उपद्रवी तू देखेगा वह मुझ पर आक्रमण करने वाले हैं तो

تجلّتْ من الرحمٰن أنوارُ حجّتی	فما الخوف إن تُعْرِضْ و إنْ تتعزَّقِ
سینصرنی ربی ویُعلِی عمارتی	فهُدُّوا ورُضُّوا مِن أكُفٍّ وأسْوُقِ
تبصَّرْ خصیمی هل تری مِن علامةٍ	بها یُعرَف الكذّابُ عند المحقِّقِ
إذا ما نقول هلُمَّ لا تنبری لنا	وفی بیتك المنحوس تهذی وترتقی
دعوتَ فأكثرتَ الدعاء لنَكْبَتی	فواللهِ زِدْنا بعده فی التفَنُّقِ
عرَضْنا علیكم رحمةً أمرَ ربِّنا	فلم تحفِلوا كِبرًا وقد كنتُ أُشْفِقِ
وقلتُ لكم توبوا ولا تتركوا الحیا	فزدتم عنادا واعتدیتم كأفسَقِ

ख़ुदा ऐसे दुश्मन को दूर करता और उसे कोड़ा मारता है।

ख़ुदा की ओर से मेरे तर्क के प्रकाश प्रकट हो गए हैं तो कुछ भय का स्थान नहीं यदि तू किनारा करे या कंजूसी करे।

शीघ्र ही ख़ुदा मुझे सहायता देगा और मेरी इमारत को ऊंचा करेगा अत: यदि संभव है तो उस इमारत को हथेलियों और पिंडलियों से गिरा दो।

हे मेरे शत्रु ख़ूब देख क्या तू कोई निशानी पाता है जिससे झूठा पहचाना जाता है।

जब कहें आ तो हमारे मुकाबले पर आता नहीं और अपने अशुभ घर में बकता और ऊपर चढ़ता है।

तू ने बद्दुआ की और मेरे पतन के लिए बहुत बद्दुआ की तो ख़ुदा की क़सम इसके बाद हम नेमतों में अधिक हुए।

हमने मेहरबानी से अपने रब्ब का आदेश तुम्हारे सामने प्रस्तुत किया तो तुमने कुछ परवाह न की और मैं डरता था।

और मैंने कहा कि तौब: करो और शर्म को मत छोड़ो तो तुम शत्रुता में बढ़ गए और हद से अधिक गुज़र गए जैसा कि पापी होते हैं।

وإنی حبَستُ النفسَ عند فضولِکم	صَبورًا علی سبٍّ وشتمٍ مُحرّقِ
وواللّٰہ لا یُخزَی الصدوقُ بقولکم	أیُرْهِقُ قترٌ وجهَ مَن کانَ أصدَقِ
فتوبوا إلی ربّ الوریٰ واستغفروا	ولا تشتروا بالحق عیشًا مُرَمَّقِ

और मैंने तुम्हारी बकवास के समय स्वयं को रोका और तुम्हारी गालियों पर सब्र किया।

ख़ुदा की क़सम सच्चा तुम्हारी बात के साथ बदनाम नहीं किया जाएगा क्या सच्चे के मुंह पर ख़ाक आ सकती है।

अतः ख़ुदा की ओर तौबः करो और गुनाह की माफ़ी चाहो और थोड़े ऐश्वर्य के लिए सच को मत छोड़ो।

خَاتمة الكتاب

إنّ كتابى هٰذا آخر الوصَايا للعُلَمَاء ، الذين تَصدَّوا للتكذيب والاستهزاء ياحسرة عليهم وعلٰى ما أروا من حالةٍ ! إنّهم فتحوا على الناس أبواب ضلالةٍ، فى زمنٍ تطايرت فيهاالفتن كشُعلةٍ جَوّالةٍ، والناس كانوا تائهين فى مَوماةٍ بَطالةٍ، فألقاهم العلماء فى وهدٍ مُغتالةٍ، وجمعوا لهم قذائفَ جهالةٍ، ثم أوقدوا قذائفهم بقَبسٍ وذُبالةٍ، وصاروا لهم كضِغثٍ علٰى إِبّالةٍ، واختارُوا مَدرَج اليهود، وسلكوا مَسلكَ الغىّ والعنود، وما كانوا مُنْتَهِيْن.

فغلّظتُ عليهم بعد ما أَكدَى الاستعطافُ، ولم ينفع التملّق والاِئْتلاف، ولم أر فيهم أهل قلبٍ صافٍ، ولا فتًى مُصافٍ. وإنهم رغبوا من العِلم فى المَشُوف المُعْلَم، ومن الدَّر فى الدرهم، وتركوا طوائفَ أسرارٍ فاقت فى السَّناعة، كرجُلٍ يتخطّى رقابَ نُخب الجماعة، أو كائرةٍ تتحرّى طرق الشناعة، وكانوا يعرفون شأنى ومقامى، ورأوا آياتى وسمعوا كلامى. وإنى أكثرتُ لهم وصيّتى حتى قيل إِنّى مِكثارٌ، وما عُفْتُ أن يسبّنى أشرارٌ، فما نفعهم كلامى ومقالى، وما انتفعوا بتفصيلى وإجمالى، وكان هٰذا أعظمَ المصائب على الإسلام، لو لا رحمة الله ذو الجلال والإكرام. فالحمد لله على مَا رحم وأرسل عبده بالآيات، وأنزل من البيّنات المفحِمات، وقَطَعَ دابر المفسدين.إنّه أَحْسَن إلى الخَلْق وأتمّ حُجّتى، وأظهر لهم اٰيتى، وأعلا لهم رايتى، وأماط جلباب الشبهات، وما بقى إلا جَهام التعصّبات. وأبدَى فى تأييدى أنواع العُجاب، ونجّى أولى الالباب من حُجُبِ الارتياب. وحان أن أطوى البيان وأقصّ جناح القصّة، وأُعرِض عن قوم لا يبالون الحق بعد

إتمام الحجّة، فاعلموا أننى الآن أصرف وجهى عن كلّ من أهان، من الظالمين المتجاهلين، وأُبعِدُ نفسى من المنكرين الخائنين، وأعاهد الله أن لا أخاطبهم من بعد وأحسبهم كالميّتين المدفونين، ولا أكلّم المكفّرين المكذّبين، ولا أسُبّ السابّين المعتدين، ولا أضيّع وقتى لقومٍ مُسْرفين، إلّا الذين تابوا وأصلحوا وجاءونى مسترشدين، ودقُّوا باب طلب الهداية، واستفسروا لثلجِ القلب لا كأهل الغواية، وآمنوا مع المؤمنين.

وهذا آخر ما كتبنا فى هٰذا الباب، وندعو الله أن يفتح لعباده سبل الصدق والصّواب، والحمد لله فى المبدأ والمآب. وعليه توكّلنا، وإليه أنبنا، وإياه نستعين. رَبَّنَا افْتَحْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ قَوْمِنَا بِالْحَقِّ وَأَنْتَ خَيْرُ الْفَاتِحِينَ، آمين.

تـــــــــــمّـــــــــــت

الرَّاقم ميرزا غُلام أَحمد القادياني

٢٦ مئى سنة ١٨٩٧ء